सम्पादक :

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

सहायक :

मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी

मु० हसन अन्सारी

हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय :

मासिक सच्चा राही!

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो० बॉ० नं० 93

टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ

फोन : 787250

फैक्स : 787310

e-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि :

एक प्रति	रु० 9/-
वार्षिक	रु० 100/-
विशेष वार्षिक	रु० 500/-
विदेशो में (वार्षिक)	25 US डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ - 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित किया।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

मई 2002 | वर्ष 1 | अंक 3

एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने से गुज़रा जो शारीरिक रूप से स्वस्थ और मज़बूत हाथ पांव का था। सहाबा रज़ी० ने अर्ज़ किया, क्या ही अच्छा होता ऐसा व्यक्ति जिहाद में शरीक होता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :–

यदि यह व्यक्ति अपने बच्चों के पालन पोषण के लिए हलाल तरीक़े से रोज़ी की तलाश में निकला है तो यह भी, अल्लाह के रास्ते में, उसका जिहाद है और यदि इसलिए निकला है कि इतनी रोज़ी अपनी मेहनत मज़दूरी से प्राप्त कर ले कि लोगों के सामने लज्जित न होना पड़े तो यह भी जिहाद है। हां यदि दिखाने और नुमाईश के लिए निकला है तो वह शैतान की राह में है।

☆☆☆

विषय एक नज़र में

❖ गुजरात का भयानक फ़साद	– *मौलाना सय्यद मु० राबे हसनी नदवी*	3
❖ कुर्आन की शिक्षा	– *मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी रह०*	6
❖ ला इलाहा इल्लल्लाहु	– *मौलाना मु० सानी हसनी*	7
❖ प्यारे नबी की प्यारी बातें	– *मौलाना अब्दुल ह़यी ह़सनी (रह०)*	8
❖ शरीअ़त व तरीक़त		10
❖ आप खै़रूल अना़म	– *मौलाना मु० सानी हसनी*	10
❖ ग़ैर इस्लामी देशों में	– *मौलाना सय्यद अबुल हस़न अली नदवी*	11
❖ नवीन प्रकाशनों का परिचय		13
❖ कुर्आन और साइंस	– *मोरिस बेकाई*	14
❖ प्रेम का सन्देश	– *मौलाना मुहम्मदुल हसनी*	22
❖ हिन्दी भाषा में उर्दू शब्द	– *डा० हारून रशीद सिद्दीकी*	24
❖ कामियाब निकाह	– *मौलाना अब्दुल करीम पारिख*	26
❖ आसेब और झाड़फूक		27
❖ सूद ख़ोरी	– *मु० अमरुल्लाह सलफ़ी*	28
❖ महब्बत का निराला अन्दाज	– *मौ० मु० ग़यासुल इस्लाम*	30
❖ आप की समस्याएं और उनका हल	– *मौ० मु० सरवर फा़रूकी नदवी*	32
❖ बायां हाथ	– *रहमान अब्बासी*	34
❖ मदरसे शांति का सन्देश	– *मु० अली जौहर*	35
❖ हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम	– *स० अहमद अली नदवी*	36
❖ अंतर्राष्ट्रीय समाचार	– *मुईद अशरफ़ नदवी*	39
❖ शुभ क्रांति	– *क़मर राम नगरी*	40

❑❑❑

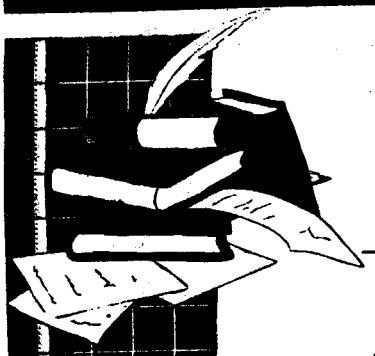

गुजरात का भयानक फ़साद और उसका प्रभाव

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

हिन्दुस्तान को विदेशी गुलामी से आज़ादी मिलने पर मुल्क की ज़रूरत के लाइक हुकूमत काइम करने और चलाने के लिए उसके बुद्धिजीवीयों और क़ानून जानने वालों ने जो संविधान दिया वह उसके राष्ट्रीय मूल्यों को काइम रखने और उसके हितों को ध्यान में रखने वाला संविधान है जो इस विशाल देश के तारीख़ी मिज़ाज और आचरण की झलक पेश करता है। इस देश में अंग्रेजों से पहले कभी साम्प्रदायिक और धार्मिक दंगे नहीं हुए हैं। यहाँ उस काल में जो भी टकराव या तनातनी रही है वह उसके शासकों के राजनीतिक और फ़ौजी सत्ता की स्थापना और उसकी चाहत तक सीमित रही है धार्मिक साम्प्रदायिकता पर नहीं रही है। चुनानचः मुस्लिम शासकों के अधीन अधिकारियों में हिन्दू बुद्धिजीवी और प्रबन्धक और हिन्दू शासकों के अधीन मुसलमान बुद्धिजीवी और अधिकारी भी रहे। हद यह है कि औरंगज़ेब आलमगीर जैसा धार्मिक मुसलमान शंहशाह, जिसको हिन्दुओं में कट्टर हिन्दू दुश्मन मुसलमान शासक बताया जाता है, उस ने भी बहुत से उच्च पदों पर हिन्दू बुद्धिजीवियों और अधिकारियों को रखा और केवल मस्जिदों को ही नहीं बल्कि बहुत से मन्दिरों को भी जायदादें प्रदान कीं, परंतु हिन्दुस्तान पर विदेशी अंग्रेज़ शासकों ने अपने क़दम जमाए रखने के लिए यह राजनीति अपनाई कि देश के विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के बीच होने वाली घटनाओं के नफ़रत और टकराव के कारणों को उजागर किया जाए ताकि देश की अवामी ताक़त क़ाबू में रह सके। इसके लिए देश के इतिहास में धार्मिक समुदायों के बीच हुई घटनाओं को इस प्रकार पेश किया कि जिससे साबित हो कि देश में धार्मिक ज़बरदस्ती और अन्याय का राज रहा है। अतएव अंग्रेजों के राज में ऐसी पाठ्य पुस्तकें तैयार की गईं जिनसे अंग्रेजों का यह उद्देश्य पूरा होता हो, मुख्य रूप से मुसलमानों को कट्टर अत्यचारी और ग़ैर मुस्लिमों के साथ शत्रुता पूर्ण व्यवहार करने वाला दिखाया गया।

इस पाठ्य क्रम और लिट्रेचर ने हिन्दू और सिख जनता के विचारों में मुसलमानों के प्रति दुर्भावना उत्पन्न कर दी और फिर भारत के विभाजन के समय इन विचारों को प्रचण्ड रूप से फैलाया गया और यह कार्य अंग्रेज़ों के सत्ताकाल में सम्पन्न हुआ जिसने हिन्दू मुस्लिम समुदायों के दिलों में एक दूसरे से घृणा और दुश्मनी उभरी और देश के दोनों भागों की सीमावर्ती क्षेत्रों में आग और खून का खेल खेला गया और इससे अखण्ड भारत के भूतकाल की उदारता, मेल–मिलाप का इतिहास टूट–फूट गया।

परंतु दोनों समुदायों के निष्पक्ष विचारों के बुद्धिजीवियों और मार्ग दर्शकों ने हालात को संभाला और देश के भविष्य के लिए पुरानी मान्यताओं को बुन्याद बनाकर इस देश का संविधान बनाया। इस संविधान के अनुसार देश ने अपने नये युग में क़दम बढ़ाया और उन्नति की राह अपनाई। देश अपनी जनसंख्या और अपने क्षेत्रफल के विस्तार और अपनी ज़मीनी दौलत, अपने उदार चरित्र और इंसानियत दोस्त विचारों के अनुसार पूरे पूर्वी एशियाई क्षेत्र के नेतृत्व की ओर बढ़ना शुरू हुआ और पूरे एशिया में इसका महत्व और इसकी महानता स्वीकार की जाने लगी। इस पूरे क्षेत्र में हिन्दुस्तान के पास पड़ोस में पचास से अधिक मुस्लिम देश हैं। वह सब हिन्दुस्तान को अपने बड़े भाई के रूप में देखने लगे परंतु अंग्रेजों के बोए हुए क्षेत्रीय व जातीय व मज़हबी नफ़रत के बीज भी अपना काम करते रहे और उनके प्रभाव में आए हुए साम्प्रदायिक दुश्मनी और टकराव को पसन्द करने वाली संस्थाओं और लोगों ने अपनी कोशिशें जारी रखीं। मुसलमान कम संख्या में थे इसलिए उनके साम्प्रदायिक विचार वाले लोग अधिक सफल न

हो सके लेकिन हिन्दुओं में इस विचार के लोग और संस्थाएं देश पर अपना प्रभाव बढ़ाती रहीं यहाँ तक कि अपने उपायों और साज़िशों से सेकुलर विचार रखने वाली हुकूमतों में प्रभावशाली और हावी हो गये वह हिन्दू नवजवानों के ज़िहनों में मुसलमानों के प्रति नफ़रत और दुश्मनी का विचार भरते रहे। यह काम, जो पहले वह शिक्षा और प्रसारण के माध्यमों से करते रहे थे, अब राजनीति व शासन के माध्यम से करने लगे।

साम्प्रदायिक घृणा से परिपूर्ण इन शक्तियों का मुख्य केन्द्र अधिकतर हिन्दुस्तान का पश्चिमी क्षेत्र रहा और महाराष्ट्र व गुजरात इनके प्रभाव के बुन्यादी क्षेत्र रहे। वहां से वह उत्तरी भारत और दक्षिणी क्षेत्रों में अपनी योजनाओं पर काम करने की चेष्टा करते रहे। इस सिलसिले में अयोध्या की प्राचीन मस्जिद, जिसे बाबरी मस्जिद कहा जाता है, हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच विवाद बनने का अच्छा मुद्दा मिल गया। अतएव इसके नाम से आन्दोलन शुरू किया गया जिसको शासन के साम्प्रदायिक विचार धारा वाले अधिकारियों की ओर से सहारा मिलता रहा, अन्ततः साम्प्रदायिक हिन्दू ताक़तों को मस्जिद पर क़ब्जा कर लेने और उसमें धार्मिक पूजापाठ करने का अवसर मिल गया। मुसलमानों को अदालत का दरवाज़ा खटखटाने के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता न था अतएव उन्हों ने अदालत में मुक़दमा क़ाइम कर दिया और वर्षों से यह मुक़दमा अदालत में चल रहा है और शायद इसी तरह चलता रहे लेकिन एक तरफ़ ताक़त हो और दूसरी तरफ़ अदालत तो ताक़त अपना तुरंत प्रभाव दिखाती है और अदालत से न्याय चाहने वाले को अपनी लाचारी का मूक दर्शक बने रहना पड़ता है।

इस कशमकश का प्रभाव इस वर्ष गुजरात के प्रांत में अधिक दिखाई दिया। वहाँ हिन्दूवाद बाहुबल तथा आक्रमणात्मक राजनीति अपनाने वालों की हुकूमत है इसी के संरक्षण में खूनी ड्रामा रचा गया जिससे पूरे देश के मुसलमानों के दिल दहल गए और देश का सौहार्दपूर्ण और सेकुलर विचार के लोगों के दबाव का कुछ प्रभाव पड़ा और उच्चतम न्यायालय ने विशेष ध्यान दिया और अयोध्या के नाम पर जिन आक्रामक उद्देश्यों को पूरा किया जाना था रोक दिया और हालात के बदतरीन हो जाने का जो सिलसिला शुरू हो गया था उसमें कुछ ठहराव पैदा हुआ। अब देखना है कि यह ठहराव कितना क़ाइम रहता है।

इस देश के शासक चाहे वह हिन्दू साम्प्रदायिकता के मार्ग दर्शक हों या आर०एस०एस० विचार के हामी हों और चाहे देश के सेकुलर विचार का दावा करने वाले हों उन्हे इस बात पर ग़ौर करना और फ़ैसला करना है कि साम्प्रदायिकता का यह आक्रामक कार्य जो अयोध्या में अपनी मनमानी करने के लिए सारे इन्सानी मूल्यों और देश की अखण्डता और उन्नति के लिए विनाशकारी तूफ़ान का रूप ले चुका है, देश को किस तबाही व बरबादी तक ले जाएगा और देश व कौम की इज्ज़त को बाहरी देशों में क्या हानि पहुंचाएगा। कारखानों को जलाना, उद्योगों को तबाह करना और सब माल लूट लेना, लूटने वालों को कुछ सस्ते फ़ाइदे तो हासिल करा देगा लेकिन बरबाद हो जाने वाले उद्योगों के समाप्त हो जाने से देश की दौलत और उद्योगिक साधनों में कितनी कमी हो जायेगी ? जब कि यह और उद्योगिक कोशिशे बड़ी सीमा तक विदेशी मुद्रा के प्राप्त और देश के भीतर पूंजी बढ़ाने का साधन बन रही थीं। अब देश के धन प्राप्त के क्षेत्र में कितने घाटे का कारण होंगी और कितने उद्योग ठप होकर रह जाएंगे।

असलियत यह है कि हर योजनाबद्ध दंगे से देश अपनी ताक़त व दौलत के स्थान से एक कदम पीछे चला जाता है। दुख यह है कि साम्प्रदायिक जोश में देश की अखण्डता, सम्मान और आर्थिक शक्ति को उपेक्षित कर दिया जाता है और केवल जज़्बाती खुशी की प्राप्ति के लिए इसको क़ुर्बान कर दिया जाता है। गुजरात जो देश के उद्योगों का विशाल क्षेत्र है किस प्रकार आर्थिक विनाश का शिकार हो गया और स्वयं गुजरात के लोगों ने उसे इस सीमा तक पहुंचाया। यह लोग देश और कौम की भलाई चाहने वाले हुए या बुराई चाहने वाले ?

अब रही मुसलमानों की समस्या तो यह तबाही उनके लिए विपदा की हैसियत तो रखती है लेकिन उनको मिटा देने या समाप्त कर देने का ज़रिया नहीं बन सकती। संगठित दंगों के द्वारा मुसलमानों को ख़त्म कर देने की इस देश में गत पचपन वर्षों में कई बार कोशिशें की गईं परंतु वक़्ती नुक़सान से ज़ियादा उन का असर नहीं पड़ा। मुसलमानों के इतिहास ने उनको बताया है कि ऐसे तूफ़ानों से भी ज़ियादा सख़्त तूफ़ान उन पर से गुज़रे हैं और वह उनके प्रभाव से असाधारण भय, दहशत और तबाही से गुज़रे हैं लेकिन वह ख़त्म नहीं किये जा सके बल्कि इसके बाद उनमें अधिक हिम्मत और हौसला पैदा हुआ और उन्हों ने अपने पहले के स्थान को दोबारा प्राप्त कर लिया।

उनको उनके मज़हब ने निराशा और साहसहीनता की अनुमति नहीं दी है बल्कि उनको तालीम दी है कि ऐसे तूफ़ान में वह अपने हौसले को बरक़रार रखें और इन्सानी शरीफ़ाना आचरण पर क़ाइम रहते हुए अपने पालनहार से भलाई की आशा रखें। सारी परिस्थियों के बावजूद अन्तिम सफलता सत्य व इंसाफ़ और हिम्मत से काम लेने वालों ही की हुई है। मुसलमानों का इतिहास इसपर गवाह है।

कुछ लोग स्पेन का नाम लेते हैं वह प्राचीन काल में एक छोटा देश था और उसमें मुसलमान अल्पसंख्यक होने के कारण कम संख्या में थे। कई सदियों तक अत्याचार सहने के बाद इनकी आबादी की एक तादाद ने देश त्याग दिया परंतु अब वर्तमान जनतंत्र युग में फिर वह वहां बढ़ रहे हैं और उन्नति कर रहे हैं। रहा यह देश भारत तो यहां के बीस करोड़ मुसलमानों को बेवज़न कर देने की कोशिश मुसलमानों को आंशिक हानि तो पहुंचा सकती है लेकिन उनके अस्तित्व को नहीं मिटा सकती इसके साथ यह वास्तविकता भी है कि यह नुक़सान पहुंचाने की कोशिश पूरे देश व राष्ट्र के लिए कई पहलुओं से हानिकारक सिद्ध होगी।

देश की अखण्डता व ताक़त के लिए आवश्यक है कि इसकी आबादी के विभिन्न वर्गों में मेलजोल, सहयोग और एकता हो और वह इसी सूरत में होगा कि एक दूसरे के दुख दर्द को समझें ओर अपने सम्प्रदाय के लाभ के लिए दूसरे सम्प्रदाय के उत्पीड़न और हानि पहुंचाने का कार्य न करें। कई सदियों से स्थापित और इतिहास व सरकारी रेकार्डों में उल्लेखित मस्जिद को केवल इच्छा पूर्ति के लिए हिन्दू पूजा स्थल बना देने की कोशिश केवल कटुता, टकराव और देश की एकता को तबाह करने के सिवा कुछ और नतीजा पैदा न कर सकेगी।

गुजरात में मुसलमानों को जिस बरबरता के साथ मारा, लूटा और तबाह किया गया है उसको सुन कर और देख कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह अत्याचार की दर्दनाक मिसाल है। अत्याचार ऐसा इन्सानी अपराध है जिस पर अल्लाह रब्बुल आलमीन (संसार का स्वामी परमेश्वर) की पकड़ जल्द होती है। इस अत्याचार का भी परिणाम सख़्त हो सकता है। अल्लाह तआ़ला की कुदरत (शक्ति) से कोई चीज़ बाहर नहीं है। उसकी पकड़ और सज़ा कठोर होती है। कोई अचम्भे की बात ने होगी कि गुजरात के हत्यारों को अपने अत्याचार का नतीजा सख़्त देखना पड़े।

मुसलमानों को इस सिलसिले में अपने पालनहार से रहमत (अनुकम्पा) की दुआ और परिस्थितियों का सामना करने में बुद्धिमानी और संविधान और जनतंत्र के मूल्यों के साथ कार्य करने के तरीक़े का पाबन्द रहना उनके लिए सफ़लता का मार्ग सुदृढ़ करेगा। आशा है कि देश के दोनों समुदाय यदि जल्द नहीं तो देर से ही समझदारी की राह को अपनाएंगे। वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए भविष्य के ख़तरों के मुक़ाबले के लिए उचित कार्यविधि अपनाएंगे और वर्तमान दंगों में हानि उठाने वाले अपने भाईयों के साथ जो सहानभूति सम्भव है करेंगे और गुजरात में जो सहायता का काम हो रहा है उसमें अपनी हैसियत के अनुसार पूरा हिस्सा लेंगे।

□□□

क़ुर्आन की शिक्षा

– मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी(रह०)

वला तज्अ़लू मअ़ल्लाहि इलाहन आख़र (51 : 51) (और अल्लाह के सिवा कोई पूज्य मत ठहराओ।)

अल्लाह एक है अकेला है। उस जैसा दूसरा कोई नहीं। मारना, जिलाना, जीविका देना, बीमार डालना, स्वास्थ देना, सन्तान देना उम्मीदों को पूरा करना सब उसी के हाथ में है। अगर अल्लाह के समान किसी दूसरे में यह ताक़त (शक्ति) मानी जाए तो यही शिर्क है, अर्थात् अल्लाह का साझीदार मानना है, और शिर्क के विषय में अल्लाह का आदेश है : **"निःसंदेह अल्लाह शिर्क को क्षमा न करेगा।** (4 : 116)

रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम चाहे मार दिये जाओ और जला डाले जाओ मगर अल्लाह के साथ शिर्क न करो, एक व्यक्ति ने पूछा कि सबसे बड़ा गुनाह (पाप) क्या है ? तो आप ने बताया कि तुम अल्लाह के साथ किसी को साझीदार न ठहराओ। वही तुम्हारा पैदा करने वाला है। जिन चीज़ों के कारण लोग शिर्क में फंस जाते हैं इस्लाम ने उन से रोका है। इस प्रकार की कुछ आवश्यक बाते यहाँ लिखी जाती है:–

1. शिर्क (अल्लाह के साथ साझी ठहराना) का बड़ा कारण यह होता है कि किसी विशेष व्यक्ति का मान अत्यधिक बढ़ा दिया जाए। यही बात आगे बढ़कर शिर्क का साधन बन जाती है और लोग उस व्यक्ति को खुदा का स्थान दे देते हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया कि मेरा मान उस प्रकार न बढ़ाओ जिस प्रकार यहूद और नसारा ने अपने रसूलों का मान बढ़ाया।

एक समय एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल से कहा : ऐ हमारे स्वामी और हमारे स्वामी के बेटे, और ऐ हममें सबसे अच्छे और सबसे अच्छे के बेटे! तो आपने आदेश दिया कि लोगो,

जिन बातों में शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की शंका भी हो, उनसे भी रोका गया है, जैसे जीव धारियों का चित्र बनाना, कि आरंभ में तो यह चीज़ें प्रेम तथा यादगार (स्मारक) के लिये होती हैं, तत्पश्चात् मूर्ख लोग उन की पूजा करने लगते हैं।

अल्लाह से डरो, कहीं शैतान तुम्हें गिरा न दे। मैं तो अब्दुल्लाह का बेटा मुहम्मद हूँ। अल्लाह का बन्दा (दास) और उस का रसूल (सन्देष्टा) हूँ। मुझे अल्लाह ने जो स्थान दिया है मुझे पसन्द नहीं कि तुम मुझे उससे बढ़ाओ।

2. हज़ारों और लाखों आदमी हैं जो भली भांति जानते हैं कि देवी देवता या पीर फक़ीर और शहीद दुन्या के पैदा करने वाले नहीं हैं, लेकिन फिर भी वह हर प्रकार की आवश्यकताएं उनके सामने प्रस्तुत करते हैं, उठते बैठते उनके नाम लेते हैं, उन पर भेंट चढ़ाते हैं, जबकि अल्लाह के समक्ष किसी की कुछ नहीं चल सकती, स्वयं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घोषित किया कि ऐ कुरैशियों ! ऐ अब्दुल मुत्तलिब की सन्तानों ! ऐ अब्बास! ऐ सफ़िया ! ऐ फ़ातिमा ! मेरे माल में से जो मांगो मैं दे सकता हूँ लेकिन खुदा के यहाँ मैं तुम्हारे लिये कुछ नहीं कर सकता।

3. लोग कब्रों पर वार्षिक उत्सव करते हैं। दूर–दूर से यात्रा करके आते हैं। मिन्नतें मानते हैं, भेंट चढ़ाते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने उपदेश में कहा : तुमसे पहले लोग कब्रों को माथा टेकने का स्थान (सज्दा गाह) बना देते थे, देखो मैं तुम को मना करता हूँ कि कब्रों को नतमस्तक होने का स्थान न बनाना, अपने देहान्त के समय मुख से चादर उलट दी और फरमाया खुदा यहूद और नसारा पर लानत करे (अर्थात् उन पर अपना प्रकोप उतारे) उन लोगों ने अपने रसूलों (ईश सन्देष्टाओं) की कब्रों को सज्दा गाह (नतमस्तक स्थान) बना दिया।

4. जो मान सम्मान केवल अल्लाह के लिये है अगर वह दूसरों को दिया जाए तो यह भी शिर्क (अल्लाह का साझी ठहराना) है, जैसे सज्दा करना (नतमस्तक होना) यह केवल अल्लाह के लिये है, पीर फक़ीर, ताज़िया, कब्र और किसी देवता को सज्दा जाइज़ (वैध) नहीं है।

एक सहाबी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और निवेदन

किया कि आप अनुमति दें तो हम आप को सज्दा करें, आप ने पूछा, क्या मेरी क़ब्र पर गुज़रोगे तो उसको सज्दा करोगे ? कहा नहीं, आदेश दिया तो अब भी न करो, अगर मैं किसी दूसरे को सज्दा करने का आदेश देता तो स्त्री को आदेश देता कि वह अपने पति को सज्दा करे।

5. एक प्रकार शिर्क का यह है कि, अल्लाह के गुणों को दूसरों में माना जाए जैसे मृत्यु, जीवन, जीविका, स्वास्थ, सन्तान देना परोक्ष का ज्ञान होना यह सब गुण केवल अल्लाह के हैं, यदि कोई समझे कि यह गुण दूसरों में भी हैं तो यह सत्य नहीं है, सब अल्लाह के भिखारी हैं, जब वह स्वयं अल्लाह के भिक्षुक हैं तो वह दूसरों को क्या दे सकेंगे, फिर, उन लोगों ने सदैव अल्लाह ही से माँगा और अल्लाह ही से मांगने की शिक्षा भी दी, पवित्र कुर्आन में हैं **"ऐ पैग़म्बर कह दो कि मैं यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (परोक्ष की बातें) जानता हूँ।"**(6 : 50)

6. जिन बातों में शिर्क (अनेकेश्वरवाद) की शंका भी हो, उनसे भी रोका गया है, जैसे जीव धारियों का चित्र बनाना, कि आरंभ में तो यह चीज़ें प्रेम तथा यादगार (स्मारक) के लिये होती हैं, तत्पश्चात् मूर्ख लोग उन की पूजा करने लगते हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे नामों से भी रोका है जिन में अल्लाह की दासता के अतिरिक्त किसी और की दासता का अर्थ निकले जैसे :–

अब्दुश्शम्स (सूर्यदास) और बताया कि अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान अच्छे नाम हैं।

●●●

ला इलाहा इल्लल्लाह

मौ० मुहम्मद सानी हसनी (रह०)

है निशाने ला फ़ानी ✚ नुस्ख़–ए–जहाँ बानी
है शिकोहे सुल्तानी ✚ शमअ़े बज़्मे नूरानी

ला इलाहा इल्लल्लाह
ला इलाहा इल्लल्लाह

जामे बाद–ए–इर्फ़ाँ ✚ जेबो ज़ीनते कुर्आं
ज़िक्रे ख़ास–ए–ख़ासाँ ✚ नक़्शे पर्चमे ईमाँ

ला इलाहा इल्लल्लाह
ला इलाहा इल्लल्लाह

कल्मा हर मुसलमाँ का ✚ नेक फ़ितरत इन्साँ का
हर रगे दिलोजाँ का ✚ हर गुलो गुलिस्ताँ का

ला इलाहा इल्लल्लाह
ला इलाहा इल्लल्लाह

ज़र्बते यदुल्लाही ✚ नग़म–ए–सहर गाही
कल्म–ए–हक़ आगाही ✚ नुक्त–ए–शहन्शाही

ला इलाहा इल्लल्लाह
ला इलाहा इल्लल्लाह

आबे गौहरे ताबाँ ✚ नग़म–ए–दिले शादाँ
नकहते गुले ख़न्दाँ ✚ मुश्कबारो नूर अफ़्शाँ

ला इलाहा इल्लल्लाह
ला इलाहा इल्लल्लाह

रम्ज़े पाक बाज़ी है ✚ दस्ते मर्दे ग़ाज़ी है
ताजे सर फ़राज़ी है ✚ ख़ूए दिल नवाज़ी है

ला इलाहा इल्लल्लाह
ला इलाहा इल्लल्लाह

कल्मा है ये लासानी ✚ ज़िक्रे फ़क्रो सुल्तानी
ज़िक्रे बादे दबिस्तानी ✚ ज़िक्र बर लबे सानी

ला इलाहा इल्लल्लाह
ला इलाहा इल्लल्लाह

○○○

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अ़ब्दुल हयी हसनी (रह०)

1. **सबसे बेहतर तरीका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का तरीक़ा है :** हज़रत जाबिर (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) खुत्बा दे रहे थे, फ़रमाते–फरमाते आप (सल्ल०) की आखें सुर्ख हो गयीं, आवाज़ तेज़ हो गई, गुस्सा ज़ियादा हो गया, ऐसा मालूम होता था, कि आप किसी ऐसे लश्कर से डरा रहे हैं जो सुबह या शाम हमला करने वाला है, और आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मेरी पैदाइश और क़ियामत इस तरह करीब है जिस तरह शहादत और बीच की उंगली, और फ़रमाते बेहतरीन कलाम किताबुल्लाह है, और बेहतरीन तरीक़ा मुहम्मद (सल्ल०) का तरीका है सबसे बुरा काम नई–नई बातें (बिदअ़त) हैं! और हर बिदअत गुमराही है। फिर फरमाते, मैं हर ईमान वाले का उसकी जान से ज्यादा हक़दार हूँ। अगर किसी व्यक्ति ने माल छोड़ा तो वह उसके घर वालों के लिए है और जिसने कर्ज़ या बच्चे छोड़े उसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर है। (मुस्लिम)

2. **हर बिदअ़त (दीन में नया काम) गुमराही है :** हज़रत अ़िरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहुअन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने ऐसी मुअस्सिर (प्रभावी) नसीहत फरमाई जिससे हमारे दिल दहल गये और आंखे आंसुओं से डबडबा गईं। हमने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्ल०)! यह नसीहत तो ऐसी है जैसे हम आप से रुख्सत हो रहे हैं। तो आप (सल्ल०) ने फरमाया मैं तुमको तक़्वा (परहेजगारी) की वसीयत करता हूँ, और सुन कर इताअ़त करने की वसीयत करता हूँ चाहे तुम पर एक हबशी गुलाम ही हाकिम (अधिकारी) हो और तुममें जिस की उम्र लम्बी होगी वह बहुत इख्तिलाफ़ (भिन्नता) देखेगा, तो चाहिए कि मेरी और खुलफ़ा–ए–राशिदीन की सुन्नत को अपने दांतों से मज़बूत पकड़े रहो और नई–नई बातों से बचते रहो। दीन के अन्दर पैदा की जाने वाली हर नई चीज़ "बिदअ़त" है और बिदअ़त गुमराही है।

नोट :– बिदअ़त कहते हैं किसी ऐसी चीज़ को जिस को अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) ने दीन में शामिल न किया हो उसको दीन का भाग समझ कर सवाब और अल्लाह से नज़दीकी होने का ज़रिया समझना इसी तरह कोई नई शक्ल बनाकर अदब के साथ उसी तरह पाबन्दी करना जिस तरह एक शरअ़ी हुक्म की पाबन्दी की जाती है, बिदअ़त कहलाती है, और हर बिदअ़त गुमराही है। उसमें किसी के लिए छूट नहीं जो इसमें किसी को अलग करता है हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी (रह०) की नज़र में वह ऐसा है कि जैसे कहता हो कि कुछ बिदअ़त गुमराही है और कुछ नहीं यह हदीस की खुली हुई मुखालिफत हुई इसलिए कि हदीस में आया है कि हर बिदअ़त गुमराही है और इमाम मालिक ने तो यूँ फरमाया है कि जिसने इस्लाम में कोई बिदअ़त पैदा की और वह उसको अच्छा समझता है तो वह इस बात का एलान करता है कि मुहम्मद (सल्ल०) ने (नऊज़ुबिल्लाहि) पैग़ाम पहुँचाने में ख़ियानत की, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला फरमाता है, कि मैने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया। बस जो बात रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के जमाने में नहीं थी वह आज भी दीन में नहीं हो सकती है।

(उलमाए–दीन शिर्क व बिदअत के खिलाफ़ क्यों)

3. **फरमांबर्दारी में कामियाबी और नाफरमानी में बर्बादी :** मूसा अश्अ़री (रजि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इर्शाद फरमाया : मेरी मिसाल और उस पैग़ाम की मिसाल जिसे देकर अल्लाह तआ़ला ने मुझे भेजा है उस व्यक्ति की सी है जो किसी क़ौम के पास आया, फिर कहा, ऐ लोगो मैंने खुद लश्कर को देखा है मैं खुला हुआ डराने वाला हूँ बचने की तदबीर (उपाय) करो, इस इत्तिला (ख़बर) के बाद उसकी क़ौम के कुछ लोगों ने उसकी बात मानी, और रात में बहुत तड़के वहाँ से निकल लिए और इत्मिनान के साथ चल दिए और खतरे से बच गये। कुछ ने इस डराने वाले को झुठलाया और वहीं (ठहरे) रहे। सुबह होते ही लश्कर ने उन पर हमला कर दिया, और उनकी ईंट से ईंट बजा दी तो पहली उस व्यक्ति की मिसाल है जिसने मेरी बात मानी, और जो कुछ मैं लेकर आया हूँ (अर्थात् शरीअ़त) उस पर अ़मल किया और

(दूसरी) उस व्यक्ति की मिसाल है जिसने मेरी बात न मानी और मेरी लाई हुई हक़ बातों (शरीअ़त) को झुठलाया (बुखारी)

4. **हर हाल में किताब व सुन्नत पर अ़मल और हक़बात कहने की जुरअत** हज़रत उबादः बिन समित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से बात की, कि हम सुनेंगे और मानेंगें तंगी में, आसानी में, सेहत में, और तकलीफ़ में चाहे हम पर बे इन्साफ़ी की जाय या खुदगर्ज़ी और इस बात पर की हम हुकूमत में हुकूमत वालों से न लड़ें (अर्थात् इस्लामी हुकूमत से) जब तक खुला हुआ कुफ्र न देख लें, और अल्लाह की तरफ से इस बारे में कोई दलील न हो, और इस पर कि हक़ बात कहें जहाँ कहीं भी हों, और अल्लाह की बात में मलामत करने वालों की मलामत से न डरें।

5. **कामियाबी आप (सल्ल०) की पैरवी में है :** हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है वह फरमाती हैं, कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने एक ऐसा काम किया जिसके अन्दर आसानी थी कुछ लोगों ने इस आसानी को कम दर्जे का समझ कर न अपनाया रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके इस अमल की खबर पहुँची, तो आप ने अल्लाह की हम्द व सना (तारीफ) बयान की, फिर फरमाया, लोगों को क्या हो गया है, कि वह इस अमल से बचते हैं, जिसको मैं करता हूँ। अल्लाह की क़सम मैं उनसे ज़ियादा अल्लाह को जानने वाला और उनसे ज़ियादा डरने वाला हूँ।

नोट :– कुछ लोगों ने यह तय कर लिया था कि वह न शादी करेंगें न कभी रोजः इफ्तार करेंगे और न रात को सोयेंगे इस बात को आप (सल्ल०) ने नापसंद फरमाया और फ़रमाया कि मैं अल्लाह से उनसे ज़ियादा डरने वाला हूँ।

6. **इल्म किस तरह उठेगा :** हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स रज़ियल्लाहुअन्हुमा से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना कि जब अल्लाह ने तुमको इल्म दिया है तो उसको इस तरह नहीं उठाएगा कि लोगों के दिलों से दूर कर दे, बल्कि उलमा को उठा लेगा, और उलमा के उठ जाने से इल्म उठ जाता है, यहाँ तक कि जाहिल लोग रह जाएंगे, उनसे मसायल पूछे जाएंगे, तो वह अपनी राय से मसला बताएंगे, तो वह खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे। **(बुख़ारी)**

7. **सुन्नत से बेरूखी आप सल्ल० से संबंध तोड़ना है :** हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया जो मेरी सुन्नत से बेरूखी करेगा वह हममें से नहीं है (अर्थात् हम से उसका कोई संबंध नही) **(मुस्लिम)**

8. **जिसने दीन में नई चीज़ पैदा की :** हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया जिसने हमारे दीन में ऐसी चीज़ पैदा की, जो उसमें नही है, तो वह मर्दूद है। **(बुख़ारी, मुस्लिम)**

9. **ईमानी मिठास के लिए तीन चीज़े ज़रूरी है :** हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया जिस व्यक्ति के अन्दर तीन बातें हों उसको ईमान की मिठास (स्वाद) महसूस होगी।
   1. अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) सबसे ज़ियादा महबूब हों।
   2. वह किसी से महब्बत करे तो अल्लाह के लिए करे।
   3. वह कुफ्र की तरफ दोबारह लौटना इतना ही नापसन्द करे जितना आग में डाले जाने को नापसन्द करता है। **(बुख़ारी, मुस्लिम)**

10. **रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की महब्बत सब पर ग़ालिब होनी चाहिए :** हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ही की एक रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुममें कोई व्यक्ति उस वक्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि मेरी मुहब्बत अहल व अ़याल (घर वालों) माल व दौलत और तमाम लोगों की मुहब्बत पर ग़ालिब न हो जाय। (मुस्लिम)

11. हज़रत अनस रजियल्लाहुअन्हु से एक रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया, तुममे से कोई व्यक्ति उस वक्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके वालिद, औलाद, और तमाम लोगो से जियादा उसको महबूब न हो जाऊँ। **(बुख़ारी)**

12. **जो जिस से महब्बत करेगा उसका हश्र उसी के साथ होगा :** हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से एक और रिवायत है फरमाया एक आराबी (बद्दू) ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूछा कियामत कब आएगी ? हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया तुमने उसके लिए क्या तय्यारी की है ? उस आराबी ने कहा, अल्लाह और रसूल (सल्ल०) की महब्बत (उत्तर में) हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया : तुम जिससे महब्बत करते हो उसी के साथ होगे (उस पर) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैः मैं अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) से महब्बत करता हूँ, अबूबक्र व उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से महब्बत

करता हूँ मुझे उम्मीद है कि उन हजरात के साथ हूँगा चाहे उनके जैसे काम न कर सकूँ। **(मुस्लिम)**

13. एक और रिवायत हज़रत **अब्दुल्लाह** बिन उमर (रजि०) से है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास एक व्यक्ति हाज़िर हुआ उसने अर्ज किया, ऐ रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे व्यक्ति के बारे में आप क्या फरमाते हैं जिसने लोगों से महब्बत की, लेकिन उनके दर्जे का नहीं हुआ हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया, ईमान वाला जिसको चाहता है उसी के साथ होगा।

14. **किसी अल्लाह वाले से नफ़रत और दुश्मनी रखने वाले के खिलाफ़ अल्लाह तआ़ला का एलाने जंग :** हज़रत अबूहुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमाया जो मेरे दोस्त से दुश्मनी रखेगा। मैंने उससे लड़ाई का एलान कर दिया। मेरे बन्दों का फ़राइज़ से नज़दीकी हासिल करना जितना मुझको महबूब है उतना किसी और नेकी से नज़दीकी हासिल करना महबूब नहीं। मेरा बन्दा नफिलों के ज़रिए मुझसे क़रीब होता है यहाँ तक कि मैं उससे महब्बत करने लगता हूँ, और जब मैं उस से महब्बत करने लगता हूँ तो मैं उस का कान बन जाता हूँ। जिससे वह सुनता है, उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है। उसका पाँव बन जाता हूँ, जिससे वह चलता है और अगर वह मुझ से सवाल करता है तो मैं उसको देता हूँ और अगर वह मेरी पनाह चाहता है तो मैं ज़रूर उस को पनाह देता हूँ। **(बुख़ारी)**

नोट :– अल्लाह के "वली" की सबसे बड़ी पहचान जो इस हदीस से मालूम होती है वह फ़राइज़ की मुकम्मल पाबन्दी के साथ नफलों का एहतिमाम, नमाज़ बाजमाअ़त, दूसरी इबादत, हुकूक की अदायगी और नेकी के कामों में बढ़ना है जैसा कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) का खुद अमल था।

***

आप ख़ैरुल अनाम

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी (रह०)

आप ख़ैरुल अनाम	○	आप सब के इमाम
आप ख़ात्मुर्रुसुल	○	आप आ़ली मक़ाम
आप का लुत्फ़ ख़ास	○	आप का फ़ैज़ आम
आप पाकीजा दिल	○	आप शीरीं कलाम
आप मेहरे मुबीं	○	आप आहे तमाम
आप शाहे जहाँ	○	आप के ख़ासो आ़म
आप के ख़ूबरू	○	आप के मुश्क फ़ाम
आप के रोज़ो शब	○	आप के सुब्हो शाम
आप सब के हुज़ूर	○	आप के सब ग़ुलाम

आप पर हो दुरूद
आप पर हों सलाम

○○○

शरीअ़त व तरीक़त

शरीअ़त के तीन भाग हैं, एक इअ़तिक़ाद (विश्वास) दूसरे अअ़माल (कर्म) तीसरे इख़लास (अर्थात किसी कर्म को केवल अल्लाह को राज़ी करने के लिये करना) जब तक यह तीनों भाग न पाये जाएं शरीअ़त प्राप्त नहीं हो सकती, और जब शरीअ़त प्राप्त हो जायेगी अल्लाह तआ़ला की स्वीकृति प्राप्त हो जाएगी जो इस लोक तथा परलोक की समस्त सुयोग्यताओं और पुरस्कारों से उच्चतर है। अल्लाह तआ़ला ने स्वयं बता दिया है कि "अल्लाह की स्वीकृति व प्रसन्नता हर पुरस्कार से श्रेष्ठ है" (9:72) अतः ज्ञात हुआ कि शरीअ़त दुन्या व आख़िरत की सभी निअ़मतों को दिलाने वाली है और कोई उद्देश्य ऐसा नहीं जिसके लिये शरीअ़त के अतिरिक्त किसी और वस्तु की आवश्यकता हो। रही तरीक़त व हक़ीक़त जो सूफ़ियों की विशेष वस्तुएं हैं, यह दोनों शरीअ़त की सेवक हैं। शरीअ़त के तीसरे भाग की पूरक हैं। अतः तरीक़त व हक़ीक़त की प्राप्त का उद्देश्य शरीअ़त ही की पूर्ति है। शरीअ़त के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु की प्राप्ति का उद्देश्य नहीं।

(मकतूबात शैख़ अहमद सरहिन्दी दफ़्तर अव्वल, मकतूब: 36)

आपको सच्चा राही कैसा लगा ? एक कार्ड पर लिख भेजिये। (प्रकाशक)

गैर इस्लामी देशों में मुसलमानों की ज़िम्मेदारियाँ

मौलाना अली मियाँ नदवी (रह०)

एक ऐसे देश में जिसमें इस्लाम एक शासित (महकूमाना) मज़हब की हैसियत रखता हो और पाश्चात्य मूल्यों और ग़ैर इस्लामी रहन सहन का वर्चस्व (बालादस्ती) हो और जिसमें व्यक्तिगत लाभ और राजनीतिक व सामुदायिक फ़ायदों ही को सब कुछ समझा जाता हो और लज़्ज़त को एक फ़िलास्फ़ी की शक्ल दे दी गई हो जिसमें सारे क्रिया कलाप और आचार व्यवहार की धुरी इसी को समझा जाने लगा हो, ऐसे देश में मुसलमानों की (जबकि वह वहाँ अल्पसंख्यक हों) बहुत ही नाजुक ज़िम्मेदारी है। इसके लिए ज़रूरी है कि इनमें अडिग ईमान हो, साहसिक आचरण हो, दह पूरा भरोसा हो जिससे अल्लाह ने उन्हें गौरवान्वित किया है। उनके लिए यह भी ज़रूरी है कि उनका एक उच्च स्तर हो और वह हीन भाव से ग्रसित न होने पायें। अगर वह इस उच्च स्तर पर न हुए तो वह अपने व्यक्तित्व को और अपनी क़ौम को हीन भाव से और पश्चिमी सभ्यता के अनुयाइयों और उसके पिछलगुओं की हैसियत से देखेंगे। ऐसी दशा में वह कोई प्रभावी और महत्वपूर्ण रोल अदा नहीं कर सकते जो लोगों के ध्यान को आकर्षित कर सके और कुछ परिवर्तन अमल में ला सके।

मैं आपके सामने एक घटना का उल्लेख करता हूँ जिस से बात बिल्कुल साफ़ हो जायेगी और एक ऐसे स्वाभिमानी मुसलमान का किरदार भी आपके सामने आयेगा जिसको अपनी दावत और पैग़ाम पर पूरा भरोसा था, और यह बाह्य आडम्बर और शान व शौकत उसकी नज़र में ठीकरों से ज़ियादा वक़अत न रखते थे और दिखावे के भोग विलास पर जीने मरने वालों और अज्ञानता का जीवन जीने वालों पर उसको तरस आता था। यह इस्लाम के इतिहास की पहली सदी की घटना है इसको मैं आपके सामने बयान कर रहा हूँ। इसमें सीख भी है और यह हमारे लिए शिक्षाप्रद भी है।

ईरानी फ़ौजों का जनरल रूस्तम को अपने दबदबः व शान व शौकत में ईरान के सम्राट के क़रीब ही समझा जाता था, उसने इस्लामी फ़ौज के सेनाध्यक्ष हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को पैग़ाम भेजा कि किसी ऐसे आदमी को भेज दिया जाये जो इस बात और मक़सद की व्याख्या करे जो अरब के बद्दुओं को, जो रेगिस्तान में रह रहे थे, उन सभ्य देशों तक ले आया जो सभ्यता और संस्कृति और शक्ति में उन्नति की चरम सीमा पर हैं और अरब देश को उनसे कोई नाता नहीं।

अब विचार कीजिये कि वह आदमी जो सिंहासन पर बैठा हुआ है और एक बड़े क्षेत्रफल पर उसका शासन है उसका अरबों के बारे में क्या विचार होगा जो ख़ेमों और कच्चे मकानों में निवास करते थे, और जिनका गुज़ारा खजूर और ऊँट के गोश्त पर था, वह किस लापरवाही और हिक़ारत की निगाह (हेय दृष्टि) से अरबों की तरफ़ देखता होगा, उसने कहलवाया कि कोई ऐसा आदमी भेज दिया जाये जो उन उद्देश्यों और कारणों की व्याख्या करदे जो उनको यहाँ लाये हैं।

यह इस्लाम का चमत्कार है कि उसने तमाम अरबों को चिन्तन व आस्था, अल्लाह पर ईमान और इस्लाम के मक़सद पर गर्व के एक उच्च स्तर पर पहुँचा दिया था। हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने हज़रत रूबई बिन आमिर का चयन किया, यह हज़रत रूबई बिन आमिर रज़ि० जिनसे अधिकाँश इतिहास के विद्वान अपरिचित हैं, उनको इस्लामी सेना में कोई विशिष्टता भी प्राप्त न थी। मैं आपके सामने यह क़िस्सा कोई अफ़साने के तौर पर बयान नहीं कर रहा हूँ कि जिसमें केवल क्षणिक आनन्द है अथवा राष्ट्रीय गर्व व सम्मान का सामान है। मैं इसलिए आपके सामने इस क़िस्से का ज़िक्र कर रहा हूँ ताकि आप उस ताकतवर ईमान व यक़ीन का जिस ने ईरानी फौजों के जनरल रूस्तम के सामने उस साहसिक और स्वच्छन्द बातचीत पर आमादा किया कुछ अन्दाज़ा कर सकें और मोमिन के किरदार, साहस व संकल्प और ईमानी ताक़त का पश्चिम की सभ्यता व विकास, सत्ता व वर्चस्व के बारे में अपने दृष्टिकोण और किरदार (आचरण) से तुलना कर सकें। यहाँ हमारा अपने आपके साथ, क्या मामला है और पाश्चात्य सभ्यता जो यहाँ चलन में है और जिसको इस समय समकालीन दुनिया में नेतृत्व का दर्जा हासिल है उसकी तरफ़ हम किस निगाह से देखते हैं।

हज़रत रूबई बिन आमिर रज़ि० रूस्तम के दरबार में पधारे। उनके कपड़ों में पैवन्द लगे हुए थे, मामूली सी तलवार और ढाल उनके साथ थी, एक मामूली ठिंगने घोड़े पर सवार थे, इसी हाल में

क़ालीनों को रौंदते हुए पधारे, फिर घोड़े से उतरे, वहीं किसी तकिये से उसो बांध दिया और रूस्तम की तरफ़ बढने लगे। हथियार उनके साथ थे, कवच पहने थे और सर पर लोहे की टोपी थी नौकर चाकर ने इस पर आपत्ति जताई और कहने लगे हथियार अलग रख दो। हज़रत रूबई बिन आमिर ने फ़रमाया, मैं खुद तुम्हारे पास नहीं आया, तुम्हारे बुलावे पर आया हूँ। अगर इसी हाल में जाने देते हो तो ठीक है, वरना मैं वापस जाता हूँ। रूस्तम ने कहा कि आने दो। हज़रत रूबई रज़ी० अपने बरछे को उन रेशमी क़ालीनों पर टेकते हुए आगे बढ़े, यहाँ तक कि उनमें अकसर क़ालीन फट गये।

रूबई, रज़ी० रूस्तम के पास पहुँचे। रूस्तम ने पूछा कि अरब किस मक़सद से यहाँ आये हैं। उन्होंने पूरे ईमान व यक़ीन के साथ, जो उन की शिराओं में रच बस गया था, और पूरे आत्मविश्वास के साथ, जिसने उनके अंगों को मज़बूत बना दिया था क्यों कि उनकी प्रेरणा का स्रोत आसमानी किताब (कुर्आन) थी, सच्ची नुबूवत थी, अटल और अडिग विश्वास था, उत्साह था और अचूक निगाह थी, कहा, "हमको अल्लाह ने इसलिए भेजा है कि हम उन लोगों को, जिनको अल्लाह चाहे, बन्दों की गुलामी से निकाल कर एक खुदा की गुलामी में ले आयें और धर्मो के अत्याचार से निकाल कर इस्लाम का इन्साफ व न्याय प्रदान करें। इस्लाम के पैगाम और उस के बुन्यादी मक़सद के बारे में हज़रत रूबई ने जो कहा उस पर पूरे विश्वास के साथ और जो उन्होंने लोगों को अल्लाह की बन्दगी की तरफ लाने और दूसरे धर्मों के अत्याचार से निकाल कर इस्लाम के इन्साफ़ की राह दिखाने की बात कही, उस पर कोई आश्चर्य नहीं होता कि यह उनके विश्वास और आस्था की बात थी। लेकिन मुझे उनके इस वाक्य पर बड़ा आश्चर्य है जिसमें उन्होंने फ़रमाया कि हमें इसलिए भेजा गया है कि दुनिया की तंगी से निकाल कर दुनिया की विशालता की ओर लायें। अगर वह दुनिया की तंगी से निकाल कर आख़िरत (परलोक) की विशालता में लाने का उल्लेख करते तो मुझे तनिक भी आश्चर्य न होता, क्योंकि यह तो ऐसी सच्चाई है जिसपर हर मुसलमान और ईमान वाला यक़ीन रखता है, और हज़रत रूबई की घटना तो पहली शताब्दी की है। मैं उनके इस वाक्य पर आश्चर्य चकित रह जाता हूँ कि हम तुमको दुनिया की विशालताओं में लाना चाहते हैं। मानो वह कह रहे हैं हमने अपने ऊपर तरस खाकर और इन देश के भोग विलास की लालच में अपने वतन को नहीं छोड़ा। हमतो यहाँ तुम पर तरस खाकर आये हैं। हम चाहते है कि तुम को घटा टोप अन्धेरे के बन्धन से आज़ाद करें जिसमें तुम उस पक्षी की तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो जिसको किसी पिंजड़े में बन्द कर दिया जाता है, और दाना–पानी उसी के अन्दर दे दिया जाता है, इसलिए कि तुम अपनी आदतों और ज़रूरतों के गुलाम हो, इच्छाओं के गुलाम हो, फैशनों से, जिनका चलन है, पीछा नहीं छुड़ा सकते, तुम्हारे लिए अकेले एक पल गुज़ारना मुश्किल है, तुम अपनी मर्ज़ी के अनुसार कोई काम नहीं कर सकते, तुमको पग–पग पर सेवकों और सहायकों की ज़रूरत है पहरेदारों और चौकीदारों की ज़रूरत है। कोई काम भी तुम बिना किसी सहायता के कर नहीं सकते।

इतिहास गवाह है कि ईरान का राजा यज़्द गर्द जब अपने देश से भागा तो यात्रा के दौरान उसको प्यास लगी, एक घर में गया उसे एक मामूली दैनिक प्रयोग में आने वाले गिलास में पानी दिया गया तो उसने कहा कि मैं इस गिलास में पानी नहीं पी सकता इसलिए कि वह तो सोने चांदी के गिलास में पानी पीने का आदी था। ईरानियों का तो यह हाल था कि अगर उनमें कोई बड़ा आदमी एक लाख दिरहम से कम का ताज पहनता या उसके साथ आलीशान महल और उसकी साज सज्जा, हौज़, फ़ौवारा और बाग़ न होते तो उसको हेय दृष्टि से देखा जाता। मानो हज़रत रूबई कह रहे हैं कि तुमतो अपने सेवकों के सेवक और गुलामों के गुलाम हो, इसलिए कि उनसे ज़ियादा तुम उनके मुहताज हो। हम चाहते हैं कि तुम को इस अन्धकारमय क़ैद खाने से निकाल कर विस्तार और आज़ादी के माहौल में लायें। हम यहाँ अपनी ज़रूरत से नहीं आये। हमने तो यह लम्बा सफ़र तुम्हारे लिए किया है। हमारे लिए अपने वतन में कोई तंगी नहीं वह बियाबान तो बहुत बड़ा और विशाल है। हम तो तुम्हारे इस अस्वाभाविक रहन–सहन पर बेचैन हैं जिसमें तुम मस्त हो यही बेचैनी हमें यहाँ लाई है। हम लोग इच्छाओं पर चलने वाले नहीं हैं हम खास पोशाक और रातिब के गुलाम नहीं हैं और न सेवकों और पिछलगुओं के मुहताज हैं, हम रेगिस्तान में आज़ादी की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले हैं, जो मिल जाता है खाते हैं और शुक्र करते हैं। हमको तो अल्लाह ने इसलिए भेजा है कि जिसको वह चाहे उसको हम लोगों की गुलामी से निकाल कर एक अल्लाह की गुलामी में ले आयें, दुनिया की तंगी से निकाल कर दुनिया की विशालता प्रदान करें और धर्मों के ज़ोर व ज़ुल्म से आज़ाद करा के इस्लाम के इन्साफ़ से फ़ायदा उठाने का मौक़ा दें। तुम धर्मों के अत्याचार का निशाना बने हुए हो जिसके नतीजे में मुसीबतों में फंसे हो, अपमान झेल रहे हो और वास्तविक सुकून व राहत तुम को नसीब नहीं है।

मैं आपसे संक्षेप में कहता हूँ, आप यहाँ

आज़ादाना, प्रभावी और बुनियादी किरदार अदा करें, आपकी ज़िन्दगी मिसाली ज़िन्दगी हो जो लोगों की निगाहें फेर दे और ध्यान को आकर्षित कर दे। लोगों के मन में ऐसे सवाल पैदा हों जो तुलना करने पर मजबूर करें और इस्लाम के बारे में मालूमात करने की ललक पैदा हो। अगर आपने भी पश्चिमी रहन–सहन अपना लिया आप उन्हीं के अनुयायी बन गये और आपने उच्च स्तर से अपने को नीचे गिरा लिया तो आप में और यहाँ के पश्चिम वासियों में कोई अन्तर कोई विशिष्टता बाक़ी नहीं रह सकती, और न उनमें मालूमात करने का शौक़ और विचार करने की भावना पैदा हो सकती है और न आपके प्रति आदर की भावना उनके दिल में आ सकती है, यह बात तो दूर रही कि वह आप को अनुकरणीय व आदर्श समझें।

लेकिन जब आप उनके सामने एक अपरिचित जीवन शैली पेश करेंगे तो उससे इनके अन्दर एक जिज्ञासा पैदा होगी और वह आप से पूछने पर मजबूर होंगे कि यह जीवन शैली आपने कहाँ से ली और यह उच्च आचराण आपने किससे सीखे। उनमें ललक पैदा होगी कि वह आप से ऐसा लिट्रेचर प्राप्त करें जिस से वह इस्लाम के बारे में पक्की मालूमात हासिल करें।

आप उनको अल्लाह के रसूल सल्ल० की सीरत (जीवनी) से परिचित करायें और उनको वह रास्ता दिखायें जिसपर चलकर आप के अन्दर यह क़दरें (मूल्य) पैदा हुईं और यह उच्च आचरण आप को प्राप्त हुआ, और तब वह आपको आदर और श्रद्धा की निगाह से देखेंगे।

ऐसी ज़िन्दगी का नमूना पेश कीजिये जो उनमें इस्लाम के अध्ययन का शौक़ पैदा करे और उस रास्ते को जानने की ललक पैदा करदे जिसपर चलकर यह जीवन पद्धति और चिन्तनशैली हमको प्रदान की गई। यही एकमात्र वह क्रन्तिकारी रास्ता है जिसपर चलकर आप इन गैर इस्लामी देशों में प्रभावी रोल अदा कर सकते हैं। अगर आप उन्हीं के रंग में रंग गये और वही जीवन पद्धति अपना लिया तो आप उनपर कदापि प्रभावकारी नहीं हो सकते और कोई परिवर्तन अमल में नहीं ला सकते, चाहे सौ साल या उससे अधिक समय तक वहाँ रहने और ज़िन्दगी गुज़ारने का मौक़ा मिले।

अनुवादक – मो० हसन अंसारी

●●●

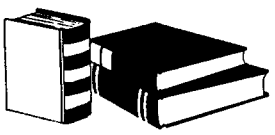

नवीन प्रकाशनों का परिचय

नमाज़ की किताब : मुरत्तिब डा० हारून रशीद सिद्दीकी

साइज़ 18 × 22" का आठवाँ भाग, पृष्ठ 48

कम्पोज़िंग, प्रिन्टिंग, कागज़ सब बेहतर, मूल्य मात्र रु० 6/-

मिलने का पता :–

नदवी बुक डिपो, पो० बा० नं० 93

नदवा, लखनऊ

हिन्दी में नमाज़ की बहुत सी किताबें हैं परंतु इस किताब की विशेषता यह है कि इसमें अ़रबी शब्दों के शुद्ध उच्चारण का हिन्दी लिपी में प्रबन्ध किया गया है। अन्त में मय्यित के हुक़ूक़ अर्थात् मय्यित के नहलाने, कफ़नाने, दफ़नाने और इसाले सवाब अर्थात् फ़ातिहा का भी बयान है।

❒❒❒

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया –

इस्लाम का आधार पाँच चीज़ों पर है –

- **इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं,**
- **और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं,**
- **और नमाज़ क़ाइम करना,**
- **और ज़कात अदा करना और रमज़ान के रोज़े रखना,**
- **और रास्ते का ख़र्च हो तो हज्ज अदा करना।**

जांचा परखा जाएगा

क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वह कहें कि हम ईमान ले आये–बस उनकी बात मान कर उन को यूं ही छोड़ दिया जाएगा और उनको परखा न जाएगा ? और निःसंदेह हम उनके पहले के लोगों को परखते आए हैं– यद्यपि हम सब कुछ जानते हैं परंतु परखना हमारी सुन्नत (नियम) है–अतः (उनका) अल्लाह–परख कर–अवश्य सच्चों को जानेगा और अवश्य झूठों को भी जानेगा। क्या जो लोग – इन्सानों को सताने का – पाप कर रहे हैं वह समझते हैं कि हमारी पकड़ से भाग निकलेंगे, वह ग़लत निर्णय ले रहे हैं– अर्थात् उनकी पकड़ हो कर रहेगी।

(क़ुर्आन, 29:2,3,4)

क़ुर्आन और साइंस

— मोरिस बेकाई

9 नवम्बर 1972 को फ्रांसीसी मेडिकल अकेडमी में एक अनोखा लेक्चर दिया गया। इसका विषय था क़ुर्आन में शारीरिक अंग और जेनीन (भ्रूण) ज्ञान का वर्णन मैंने क़ुर्आन की उन आयतों को, जिन में शरीर के कार्यों की ओर संकेत किया गया है, पेश किया और बताया कि यह असम्भव सी बात मालूम होती है कि उस प्राचीन काल में जब कि क़ुर्आन उतरा ऐसे विचारों का उल्लेख किया गया हो जिसके बारे में आधुनिक काल में जानकारी प्राप्त हुई है।

पहली बार मेरे सुनने वाले उस मेडिकल सोसाइटी के ऐसे सदस्य थे जो इन जानकारियों के बुनयादी विचारों के बारे में पूरा ज्ञान रखते थे। मैं आसानी के साथ उन आयतों को भी पेश कर सकता था जिनमें दूसरे साइंसी ज्ञानों पर प्रकाश डाला गया है। मेरे ख़्याल में चिकित्सा विज्ञान की तरह दूसरे विषय जैसे खगोलशास्त्र, जीव विज्ञान, और भूगर्भशास्त्र (Geology) और इस भूमण्डल के इतिहास के विशेषज्ञ भी क़ुर्आन के ऐसे बयानों कैसे चकित रह जाते हैं जिन में प्रकृति के ऐसे तथ्यों की ओर संकेत किया गया है। क़ुर्आन के यह वर्णन सचमुच आशयर्च जनक हैं क्योंकि विज्ञान के विकास का इतिहास हमें सोचने पर मजबूर कर देता है कि आख़िर क़ुर्आन में इनकी मौजूदगी का क्या औचित्य हो सकता है ?

वास्तव में वर्तमान काल में पहले की कोई ऐसी पुस्तक नहीं है जिसकी ज्ञान–वर्धक विषय सामग्री का क़ुर्आन से मुक़ाबला किया जा सके। क़ुर्आन के इन बयानों का संबंध आधुनिक विज्ञान से है। यूरोपियन भाषाओं में क़ुर्आन के प्रकाशित अनुवादों एवं व्याख्याओं में इन वैज्ञानिक विषय सामग्रियों की पूरी तरह समीक्षा नहीं की गई है और इसीलिए इस प्रकार का शोधन और भी रोचक होगा।

इसके अतिरिक्त बाईबिल (नये और पुराने टेस्टामेंट) में इस प्रकार के विषयों का तुलनात्मक अध्ययन भी आवश्यक मालूम होता है इस आवश्यकता को सामने रखते हुए मैंने तौहीद परस्त (एकेश्वरवाद) धर्मों की पवित्र पुस्तकों में पाए जाने वाले ऐसे विषय सामग्री का अध्ययन प्रारम्भ किया और फलस्वरूप मेरी पुस्तक "बाईबिल क़ुर्आन और सांइस" का फ्रांसीसी एडीशन मई 1972 में प्रकाशित हुआ। इसके अंग्रेज़ी और अरबी अनुवाद भी अब प्रकाशित हो चुके हैं।

इस्लाम और सांइस के दर्मियान इस संबंध को रसूले अकरम सल्ल० की इस हदीस में कि "ज्ञान की खोज करो वह चाहे चीन ही में मिले" सबसे अच्छे अन्दाज़ में पेश किया गया है क्योंकि इस हदीस में इंसान को ज्ञान के खोज की दावत (आह्वान) दी गई है।

इस्लाम में धर्म और ज्ञान को एक दूसरे का सहायक समझा जाता है। बहुधा सांइस की वर्तमान उन्नति से लाभ उठाते हुए इसकी आधुनिकतम सूचनाओं को क़ुर्आन की कुछ आयतों को भलीभांत समझने के लिए, प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त इस ज़माने में जबकि आधुनिक वैज्ञानिक उन्नति ने धर्म को भारी हानि पहुँचाई है, कुछ एक वैज्ञानिक मालूमात को वह्ये ईलाही (ईश वाणी) की सत्यता सिद्ध करने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए यह दावा किया जा सकता है कि लोगों के सामान्य विचारों के विपरीत विज्ञान इस बात की दावत देता है कि खुदा के अस्तित्व का अध्ययन किया जाए।

यदि हम तमाम पक्षपात को भुलाकर यह ग़ौर करें कि आधुनिक विज्ञान से प्राप्त जानकारी (जैसे जीव जन्तु मुख्यत: सूक्ष्म जीवाणु से संबंधित ज्ञान) से हमें ऐश्वरीय ज्ञान मिलता है तो फिर हम यह सोचने पर मजबूर हो जाएंगे कि उनके शरीर की बनावट जीवन के लक्षण इतने अनोखे हैं कि उन्हें मात्र संयोग की बात कहने के अवसर निरन्तर घटते जा रहे हैं बल्कि कुछ दृष्टिकोणों को हमें नकारना ही पड़ेगा जैसे चिकित्सा विज्ञान में नोबेल पुरस्कार पाने वाले फ्रांसीसी विशेषज्ञ का विचार यह था कि पदार्थ के रसायनिक अणुओं पर बाहरी प्रभाव के कारण जीवन स्वयम् उत्पन्न हो गया। इस विचार से यह नतीजा निकाला जाने लगा कि इस प्रकार का शारीरिक अभ्यास उन्नति करके जटिल रूप में परिवर्तित हो गया है, जिसे हम इन्सान कहते हैं। मेरे विचार में जीवन रखने वाले उच्चप्राणी शरीर की विचित्र संरचना हमें इस विचार के विपरीत नतीजे पर पहुँचने पर बाध्य करती है, क्योंकि जीवन को जारी रखने के लिए एक बहुत ही पेचीदा और सुगठित शरीर की बनावट आवश्यक है। सैकड़ों वर्ष तक इंसान इस

योग्य नहीं था कि इस पेचीदा गठन का अध्ययन कर सके क्योंकि इसके पास साधन मौजूद नहीं थे। यही कारण है कि केवल वर्तमान काल में कुर्आन की कुछ ऐसी आयतों को समझना सम्भव हुआ है कि जिसमें इस सच्चाई की ओर संकेत किया गया है। पुरानी तफ़सीरों (कुर्आन की व्याख्याओं) को पढ़ने से यह बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है। मुझे यह कहने में भी कोई झिझक नहीं है कि इस बीसवीं सदी में किसी भी वैज्ञानिक के लिए कुर्आन की इन आयतों का अर्थ समझना अधिक सरल है परन्तु कुर्आन की ऐसी तमाम आयतों का अर्थ जानने के लिए एक व्यक्ति के पास ज्ञान का भण्डार होना आवश्यक है।

कुर्आन के इस वैज्ञानिक अध्ययन के साथ–साथ यह बात भी साफ़ कर देना ज़रूरी है कि कुर्आन आदि से अन्त तक एक धर्मिक पुस्तक है जिसका बुन्यादी उद्देश्य साइंस की शिक्षा नहीं है। इसमें जहाँ कहीं प्रकृति और उत्पत्ति पर ध्यान देने की दावत दी गई है वहां इसका उद्देश्य खुदा का सर्वशक्तिमान होने पर ज़ोर देना है यद्यपि इन चीज़ों पर जिन पर इस प्रकार ध्यान आकर्षित किया गया है कि हम इनका अध्ययन करके साइंसी सत्यता तक पहुंच जाते हैं। कुर्आन का वह्ये इलाही (ईश वाणी) होने के लिए इस दलील की कदापि आवश्यकता नहीं है इस प्रकार के वैज्ञानिक यथार्थ का बयान इसकी इन विशेषताओं में से एक है जिसका ज़िक्र बाईबिल में नहीं है।

यह एक जानीबूझी सच्चाई है कि कुर्आन को उसके उतरने के समय से ही पैग़म्बरे इस्लाम और उनके सहाबा याद करते और तिलावत (सस्वर पाठ) किया करते थे और कातिब (लिखने वाले) उसे लिख लेते थे। यह सिलसिला लगभग तेईस साल तक चलता रहा। कुर्आन की बहुत सी नक़लें तैयार की गईं। फिर हज़रत उस्मान रज़ी० के शासन काल में उनके आदेशानुसार कुर्आन की बहुत सी नक़लें इस्लाम के आधीन क्षेत्रों में भेजने के लिए तैयार की गईं।

कुर्आन एक ख़ुतबा या वअ़ज़ (सम्बोधन) है जो 'वह्य' (ईश वाणी) के रूप में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहे व सल्लम के द्वारा इंसानों तक तीस वर्षों में पहुंचा। इसलिए यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि वैज्ञानिक पहलू रखने वाली विषय सामग्री पूरी किताब में बिखरी हुई हैं। इस प्रकार के अध्ययन के लिए जैसा कि मेरी नज़र के सामने है ऐसी सूरतों को विभिन्न विषयों के अन्तर्गत उल्लेख करना होगा। कुर्आन में ऐसी कोई दर्जाबन्दी नहीं है इसलिए मैंने यह फ़ैसला किया कि उसको अपनी तरतीब के अनुसार, प्रस्तुत करूं।

आईये पहले यह देखें कि कुर्आन ने उत्पत्ति को किस तरह बयान किया है। एक बहुत महत्वपूर्ण बात जो सामने आती है वह यह है कि कुर्आन का बयान बाईबिल से भिन्न है। पश्चिमी विद्वान कुर्आन और बाईबिल की वाह्य समानता को देखकर जो विचार बना लेते हैं वह सही नहीं है। केवल वाह्य समानता पर ध्यान देना और भिन्नता पर नज़र न करना हमें सच्चाई से दूर ले जाता है। यही ग़ल्ती इन विद्वानों ने की है।

उत्पत्ति का ज़िक्र करते समय पश्चिम का एक आम रुजहान यह दावा कर देना है कि मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने बाईबिल से इसे नक़ल कर दिया है। बाईबिल में जिस तरह ब्रहमाण्ड की उत्पत्ति छः दिन में पूरी करने के बाद सातवें दिन खुदा के आराम करने का हाल बयान किया गया है उसका मुक़ाबला हम सूरः अअ़राफ़ की इस आयत से कर सकते हैं जिसमें कहा गया है कि:–

"निःसंदेह तुम्हारा पालनहार अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा कर दिया" (7 : 54)

परंतु यह बात महत्वपूर्ण है कि वर्तमान मुफ़स्सिरीन (कुर्आन की व्याख्या करने वाले) "अय्याम" का अर्थ "काल" से लेते हैं हालांकि इसका एक अर्थ "दिन" भी है परन्तु इससे चौबीस घंटे का दिन मुराद नहीं लेते।

मेरे विचार में बुन्यादी महत्व की बात बाईबिल के बयान के विपरीत कुर्आन ज़मीन और आसमान की उत्पत्ति के सिलसिलेवार बयान नहीं करता। कहीं कुर्आन में आसमान की उत्पत्ति का वर्णन ज़मीन की उत्पत्ति से पहले और कहीं ज़मीन का ज़िक्र आसमान से पहले है। जैसे सूरः 'ताहा' में कहा गया है कि :–

अनुवाद – "अल्लाह जिसने बनाया ज़मीन और आसमानों को" (4 : 20)

वास्तव में कुर्आन से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के मुख्य अंग जैसे प्रारम्भिक पदार्थ गैस का ज़िक्र भी इसमें मौजूद है जो उत्पत्ति का बुन्यादी अंग था और जो एक बार बहुत बड़ी मात्रा में इक्टठा हो गया फिर फटकर अलग अलग हो गया। यह विचार सूरः सजद की इस आयत में मौजूद है।

अनुवाद – "फिर उसने आसमान की ओर ध्यान दिया इस दशा में कि वह धुवां था।" (11 : 41)

और सूरः अम्बिया की इस आयत में भी– ***अनुवाद– "जो लोग कुफ़्र (इख़्तियार) किये हुए हैं उन्हें मालूम नहीं कि आसमान और ज़मीन बन्द थे फिर हमने दोनों को खोल दिया"*** (21 : 30)

आसमानों और ज़मीन के इस प्रकार अलग होने से ब्रह्माण्ड के बहुत से आलम वजूद में आ गये। यह बात कुर्आन में कम से

कम एक दर्जन बार दुहराई गई है और सूरः फ़ातिहा की पहली आयत में भी संकेत किया गया है –

अनुवाद – "तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो रब है जहानों का" (1:1)

यह तमाम बातें वर्तमान शोध के अनुसार हैं जिसमें यह बात कही गई है कि प्रारम्भ में नेबूला (Nebule) के फटने से इसके अंश बिखर गये जिनसे वह बना हुआ था और फिर उन के विभाजन से वह तमाम दुन्याएं पैदा हो गईं जो ब्रह्माण्ड बनाती हैं। कुर्आन में आसमान और ज़मीन की उत्पत्ति के बीच एक दरमियानी उत्पत्ति का भी ज़िक्र है। सूरः फुर्क़ान की एक आयत में कहा गया है :–

अनुवाद – "(वह) वही है जिसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ इसके दरमियान है उसे पैदा किया" (25 : 29)

यह दरमियानी उत्पत्ति उस चीज़ से बिल्कुल मिलती जुलती है जिसे वर्तमान शोध की भाषा में "पदार्थ का पुल" कहा जाता है और जो हमारे आकाश की सीमा के बाहर अभी तक मौजूद है। इससे यह तो ज़ाहिर हो गया कि कुर्आन और हमारे वर्तमान शोध किसी प्रकार बहुत बड़ी हद तक एक दूसरे के बयान से सहमत हैं। आईये बाईबिल पर दोबारा नज़र डालें जिसमें बयान किये गये ब्रह्मण्ड की दर्जा बदर्जा उत्पत्ति को आज मानना असम्भव हो गया है मुख्यतः उसका यह वर्णन कि आसमान की उत्पत्ति (जो चौथे दिन बनाया गया) से पहले ज़मीन की (तीसरे दिन) बनाया गया क्योंकि हमें आज यह तो मालूम हो गया है कि हमारी ज़मीन अपने पिण्ड अर्थात् सूर्य से अलग होकर वजूद में आई है। बाईबिल का बयान कुर्आनिक बयान से अलग है, यही नहीं बल्कि इसने बाईबिल की गलतियों की इस तरह सुधार दिया कि शताब्दियों के बाद ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के बारे में जो जानकारियां प्राप्त हुई हैं उससे इसमें समरूपता भी प्राप्त हो गई है।

आइये अब आकाश पर नज़र डालें। जब मैं किसी पश्चिमी साइंसदां से कुर्आन में आकाश के विषय पर बात करता हूँ तो आमतौर पर यह जवाब मिलता है कि इसमें अचम्भे की कौन सी बात है। अरबों ने यूरोपियन कौमों से पहले इस विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर ली थी। परंतु यह विचार बहुत ही ग़लत है क्योंकि यह विचार इतिहास की जानकारी न होने के कारण पैदा हुआ। पहली बात तो यह है कि अरबों ने कुर्आन के उतरने के बहुत दिनों बाद साइंस में उन्नति करना प्रारम्भ किया था। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस्लामी सभ्यता के उन्नति काल में भी ब्रह्मण्ड की उत्पत्ति के बारे में जो विचार प्रचलित थे उनसे फ़ायदा उठाकर कोई व्यक्ति इस प्रकार की बात नहीं कर सकता था जिन का ज़िक्र कुर्आन में किया गया है।

इस विषय में भी विषय सामग्री इतनी अधिक है कि मैं यहां बस एक ख़ाका पेश करूंगा। बाईबिल, सूर्य और चाँद के बारे में केवल यह कहता है कि चमकदार सितारे एक दूसरे से आकार में भिन्न हैं परन्तु कुर्आन इसके लिए विभिन्न शब्दावली (Terminology) अपना कर इनकी हैसियत निश्चित करता है। कुर्आन में चाँद के लिए नूर या प्रकाश का शब्द प्रयोग किया गया है जबकि सूर्य के लिए 'सराज' अर्थात् चिराग़ का। चाँद में अपनी रोशनी नहीं है वह केवल रोशनी प्रतिबिंबित (Reflect) करता है जबकि सूर्य एक ऐसा पिण्ड है जो स्थाई रूप से प्रकाशवान है।

कुर्आन ने बाज़ नक्षत्रों के लिए 'कवाकिब' का शब्द भी इस्तेमाल किया है जिसमें इस बात का बहुत साफ़ संकेत मौजूद है कि बाज़ आसमानी पिण्ड केवल रोशनी प्रतिबिंबित करते हैं और सूरज की तरह अपना प्रकाश नहीं रखते।

आज हमें मालूम है कि आकाशी प्रबन्ध उन नक्षत्रों के कारण क़ायम है जो अपने मदार (परिधि) पर चक्कर लगा रहे हैं उनका आकार और उनका गुरुत्वाकर्षण (Gravity) जो एक दूसरे को प्रभावित कर रहा है उस रफ़्तार पर निर्भर है जिससे वह अपने परिध में तैर रहे हैं लेकिन क्या ठीक यही बात हमें कुर्आन से नहीं मालूम होती ? हालांकि इस का ज्ञान हमें इस आधुनिक युग में ही हो सका है। सूरः अम्बिया में कहा गया है :–

अनुवाद – "वह वही तो है जिसने रात को दिन को और सूरज को चाँद को पैदा कर दिया है सब अपने अपने दायरे (परिधि) में तैर रहे हैं।"

अरबी का जो शब्द तैरने के लिए प्रयोग किया गया है "यसबहून" है सबह का अर्थ उस हरकत (Movement) के हैं जो किसी घूमते हुए पिण्ड से पैदा होती है चाहे यह हरकत किसी आदमी के ज़मीन पर चलने की वजह से हो या पानी में तैरने की वजह से। किसी आकाशी पिण्ड के लिए जब इसका प्रयोग किया जाएगा तो उसका असली अर्थ "स्वयं अपनी पैदा की हुई हरकत से चलने के" ही हो सकते हैं।

अपनी पुस्तक में मैंने नई खोज का संक्षिप्त वर्णन दे दिया है जो इसके बिल्कुल अनुरूप है। चाँद के बारे में हमारी पूर्ण जानकारी है। सूर्य के बारे में भी यही बात सत्य है हालांकि इसका ज्ञान अभी आम नहीं है।

दिन के बाद रात और रात के बाद दिन के आने की तरतीब आम है लेकिन जिस तरह कुर्आन ने बयान किया है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसकी वजह यह है

कि 'सूरः जुमर' में रात और दिन को एक दूसरे पर लपेटने के लिए "कव्वर" की क्रिया "यकव्वर" का प्रयोग किया गया है। कव्वर का अर्थ है इस तरह लपेटना जिस तरह साफ़ा सिर के चारों ओर लपेटा जाता है। यह दिन और रात की क्रिया की बिल्कुल सही तस्वीर है मगर जिस समय कुर्आन उतरा था उस समय संसार के पास खगोलशास्त्र (Astronomy) का वह ज्ञान मौजूद नहीं था जिस की मदद से इसे इस ढंग से बयान किया जा सकता हो।

कुर्आन में ब्रहमाण्ड की उत्पत्ति के अतिरिक्त सूर्य के लिए एक निश्चित परिध (Orbit) का ज़िक्र भी किया गया है। यह सब आधुनिक खोज से मिलता जुलता है। बल्कि कुर्आन से तो यह भी मालूम होता है कि यह ब्रहमाण्ड फैलता जा रहा है।

कुर्आन में अंतरिक्ष (Space) के विजय का ज़िक्र भी आया है। अब तो तकनीकी ज्ञान की अति अधिक उन्नति के कारण इंसान चाँद की यात्रा भी कर चुका है लेकिन जब हम 'सूरः रहमान' की निम्नलिखित आयत पढ़ते हैं तो हमारा ज़ेहन इसकी ओर चला जाता है :–

अनुवाद – "ऐ गरोह इंसोजिन (इंसान एवं जिन्नात) अगर तुम्हें इस पर काबू है कि आसमान और ज़मीन की सीमा से कहीं बाहर निकल जाओ तो निकल देखो (परंतु) बिना ज़ोर के निकल सकते ही नहीं हो"। (55 : 33)

यह ज़ोर केवल क़ादिरे मुत्लक़ (महाशक्ति अर्थात् परमेश्वर) से ही प्राप्त किया जा सकता है। यह पूरी सूरः इंसान के लिए अल्लाह के वर्दानों के वर्णन से भरी हुई है।

आइये आकाश से धरती की ओर वापस आएं ताकि यह मालूम हो सके कि हमारी इस धरती के बारे में कुर्आन में क्या कहा गया है। धरती के बारे में केवल इस की भवतिक क्रियाओं का वर्णन ही नही वर्न उन जानदारों का भी ज़िक्र है जो इस पर रहते हैं।

हमने जिन चीज़ों का ज़िक्र ऊपर किया है उन पर ध्यान देने से यह भी मालूम होता है कि कुर्आन केवल ज़माने के विचारों से आगे ही नहीं है जो उसके उतरने के समय मौजूद था बल्कि वह उस ज़माने के ग़लत विचारों और अन्ध विश्वासों और निराधार आस्थाओं को नकारता भी है। यहां यह सवाल उठता है कि कोई एक शख़्श उस ज़माने के, जबकि अज्ञान्ता का अन्धकार छाया हुआ था, इतनी सारी समस्याओं के हल क्योंकर पेश कर सकता था ? किस प्रकार उस ज़माने की जानकारी से हटकर ऐसे विचार दिये जो सदियों बाद सही साबित हुए? ज़मीन के बारे में कुर्आन इन तमाम समस्याओं के बारे में सही विचार धारा पेश करता है। मैंने अपनी पुस्तक में ऐसी बहुत सी आयतें नोट की हैं और उन आयतों पर ख़ास ध्यान दिलाया है जो पानी के प्राकृतिक व्यवस्था से संबंध रखती हैं। चूंकि अब इसके बारे में लोगों को काफी जानकारी हो चुकी है अतः कुर्आन पढ़ते समय यही नज़र आता है कि इनमें से ऐसी प्रचलित बातें कही गई हैं जो सबको मालूम हैं। परंतु यदि हम उन विचारों और विश्वासों को भी ध्यान में रखें जो उस प्राचीन काल में प्रचलित थे तो हमें मालूम होता है कि अगरचः इन्सान ने सिचाई के द्वारा खेतों को सीचंना सीख लिया था परंतु पानी की प्राकृतिक व्यवस्था के बारे में उस ज़माने के विचार निराधार विचारों पर निरभर थे। आईये सूरः जुमर की इस आयत का अध्ययन कीजिए :–

अनुवाद – "क्या तूने इस पर नज़र नहीं की कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर उसे ज़मीन के स्रोतों में दाखिल कर दिया और फिर उसके द्वारा खेतियां पैदा करता है जिस की विभिन्न किस्में हैं।"

ऐसे यह आज हमें बिल्कुल स्वाभाविक मालूम होते हैं लेकिन हम को यह नहीं भूलना चाहिए कि प्राचीन काल में यह सिद्धान्त प्रचलित नहीं थे। पानी के इस प्राकृतिक व्ययस्था के बारे में हमें पहली बार सोलहवीं सदी में बरनार्ड पेलीसी (Bernard Palissy) के द्वारा सुसंगठित सिद्धान्त मिलता है इससे पहले लोग इस सिद्धान्त पर बहस किया करते थे कि समुद्रों का पानी हवा के दबाव से महाद्वीपों के नीचे दाख़िल हो जाता है और फिर पाताल से होता हुआ समुद्र में वापस चला जाता है। अफ़लातून के ज़माने में इसे पाताल के नाम से याद किया जाता था और सत्रहवीं सदी तक डेसकारटेस (Descartes) जैसे महान बुद्धिजीवी भी इस सिद्धान्त को सही समझते थे। उन्नीसवीं सदी तक अरस्तू के इस सिद्धान्त पर बहस की जाती थी जिसके अनुसार पहाड़ों की ठंडी खाईयों में पानी बर्फ़ बनकर धरती के नीचे झील में पहुंचकर स्रोतों के रूप में प्रकट होता है। आज हमें यह मालूम है कि वर्षा का पानी धरती सोख लेती है। अब यदि वर्तमान काल के भूगर्भ जल ज्ञान (Underground Water) का मुक़ाबला कुर्आन की आयतों से किया जाए तो मालूम होगा कि इन दोनों में कितनी समानता है भूगर्भ शास्त्र की उन्नति से हमें यह हाल ही में मालूम हुआ है कि किस तरह धरती के परतदार होने के कारण पर्वत की रचना हुई है। पृथ्वी का ऊपरी तल एक कठोर छिलके के समान है जिसपर हम रहते हैं और इसके भीतरी भाग में अब भी पिघली आग की चट्टा

मौजूद हैं जिसमें जीवन का होना असम्भव है। हमें यह भी मालूम है कि पर्वतों का उहराव भी इन्हीं परतों से सम्बद्ध है क्यों के इन परतों में उन ऊँचाईयों की बुन्यादें मौजूद हैं जिन्हें हम पहाड़ कहते हैं।

"अब इन आधुनिक सिद्धान्तों की तुलना कुर्आन की इन आयतों से कीजिए जिनमें इनके बारे में बताया गया है। मिसाल के तौर पर 'सूरः नबा' की आयतें अनुवाद – "क्या हमने ज़मीन का फर्श और पहाड़ों को मेखें नहीं बनाया है" 78:6,7)

यह मेखें ज़मीन में इस प्रकार गाड़ दी ाई हैं जिस तरह तंबू खड़ा करने के लिए कील गाड़ी जाती है। यह पृथ्वी की इन परतों में गहरी बुन्याद की तरह हैं। इन आयतों का अध्ययन करने वाला यह महसूस करेगा कि इनमें और आधुनिक ज्ञान में कोई अन्तर नहीं है।

लेकिन इन तमाम बातों से अधिक मुझे कुर्आन की इन आयतों ने प्रभावित किया जिनमें वनस्पति एवं जीवजन्तु के जीवन के बारे में और मुख्यतः उनकी पैदाइश के बारे में बताया गया है।

इस विषय पर कुछ विस्तार से गौर करना चाहिये लेकिन यहां भी कुछ उदाहरण दूंगा।

एक बार फिर मैं इस सत्य को दोहरा दूं कि विज्ञान की उन्नति ने ऐसी आयतों का अर्थ स्पष्ट कर दिया है। कुर्आन के अनगिनत अनुवादक और व्याख्याकार अच्छे साहित्यकार थे परन्तु इस प्रकार की वैज्ञानिक सूचना नहीं रखते थे ओर इस कारण इन की व्याख्याएँ अपूर्ण हैं क्योंकि उनके लिखने वालों ने इन आयतों के सरल और ऊपरी अर्थ ले लिए हैं और इससे इन के असल अर्थ छुपगए हैं।

कुर्आन में ऐसी भी आयतें हैं जो सरल हैं लेकिन उन्हीं में महत्वपूर्ण जीव संबंधी वाद छुपे हुए हैं।

अनुवाद – "क्या जो लोग कुफ़्र (इन्कार अख़्तियार) किये हुए हैं उन्हें मालूम नहीं कि आसमान और ज़मीन बन्द थे। फिर हमने दोनों को खोल दिया और हमने पानी से हर जानदार (जीव) को बनाया है क्या फिर भी यह लोग ईमान नहीं लाएंगे?" (21 : 30)

इस आयत में आधुनिक काल के इस सिद्धान्त को प्रमाणित किया गया है कि जीवन का प्रारम्भ पानी से हुआ है। वनस्पति (पेड़–पौधे) के बारे में हज़रत मुहम्मद रसूलल्लाहु अलैहिवसल्लम के ज़माने में दुन्या के किसी क़ौम का ज्ञान इतनी उन्नति पर नहीं था कि वह जान सकती कि पौदों में नर व मादा होते हैं इसके बावजूद 'सूरः ताहा' में यह आयत मिलती है।

अनुवाद – "और आसमान से पानी उतारा और फिर हमने इसके द्वारा विभिन्न प्रकार के (या जोड़ों में) वनस्पति पैदा किये" (20 : 53)

आज हम यह जानते हैं कि फलों के पौधों में नरमादा विशेषताएं होती हैं (चाहे वह केले के फल क्यों न हों जिनके लिए इस अमल की ज़रूरत नहीं होती) सूरः रअ़द की एक आयत इस की तरफ़ संकेत करती है–

अनुवाद – हर फल में नर मादा की दो किस्में रख दीं। (13 : 3)

पशुओं की पैदाईश को इंसान के पैदाईश के तरीक़े से गहरा संबंध है। आईये इस पर एक नज़र डालें–

शारीरिक अंग के कार्य के सिलसिले में मेरे दृष्टिकोण से कुर्आन की एक आयत बहुत ही महत्वपूर्ण है। खून के संचालन के संबंध में जानकारी प्राप्त होने से एक हज़ार साल पहले और यह मालूम होने से लगभग तेरह सौ साल पहले कि आँतें किस तरह अमल करती हैं कि पाचन क्रिया के साथ–साथ शरीर के हर अंग को उसका आवश्यक भोजन मिल जाता है। कुर्आन ने दूध का वर्णन करते हुए इसकी तस्वीर खींच दी है।

इस आयत को समझने के लिए हमको यह मालूम होना चाहिये कि आँतों में रसायनिक क्रिया के द्वारा भोजन के विभिन्न अंश एक जटिल ढंग से खिंच कर ख़ून में शामिल हो जाते हैं फिर वह ख़ून जिगर से होकर गुज़रता है और उसके बाद यह ख़ून शरीर के विभिन्न अंगों से गुज़रता है जिसमें वह अंग भी है जो दूध पैदा करने वाले गुदूद होते हैं। अधिक विस्तार से बयान करने के बजाए इतना ही कह देना काफ़ी होगा कि भोजन के विभिन्न अंश आँतो के कोशिकाओं में आ जाते हैं और फिर उनसे ख़ून में शामिल हो जाते हैं।

कुर्आन की इस आयत को समझने के लिए इस पूरे अमल को समझना आवश्यक है क्योंकि सदियों से इसके ऐसे अर्थ बयान किये जाते रहे हैं जिन्हें आज हमारे लिये स्वीकार करना कठिन है लेकिन आज इस आयत के अर्थ बिल्कुल साफ़ तौर पर सामने आ गए हैं। यह आयत 'सूरः नहल' में है :–

अनुवाद – "बेशक तुम्हारे पशुओं में भी बड़ा सबक़ है उनके पेट में जो कुछ होता है, गोबर और ख़ून, उसके दरमियान से साफ़ और पीने के लिए ख़ुशगवार (रुचिकर) दूध हम तुम्हें देते हैं।"

(16 :66)

इंसानी पैदाईश के सिलसिले में कुर्आन के बयानात से बहुत सी ऐसी समस्याएं उठती हैं जो भ्रूण विज्ञान के विशेषज्ञयों के लिए एक चैलेंज की हैसियत रखती हैं क्योंकि उन्हें अभी इस की व्याख्या करनी बाक़ी है। साइंस की उन्नति के पश्चात् जीव विज्ञान की जानकारी में बढ़ोतरी हुई है खासतौर से सूक्ष्मदर्शक यंत्र के आविष्कार

के बाद ही इंसान इसे समझने के योग्य हुआ है। सातवीं शताब्दी ई० के प्रारम्भ में किसी इंसान के लिए इस बारे में कुछ जानना असम्भव था। इसकी भी कोई शहादत मौजूद नहीं है कि मध्य पूर्व या अरब के लोग यूरोप या दुन्या के दूसरे भागों में रहने वालों से इसके बारे में अधिक ज्ञान रखते थे। आज ऐसे मुसलमान मिल जाएंगे जो कुर्आन और आधुनिक साइंस दोनों का ज्ञान रखते हैं और इन दोनों के बीच तुलनात्मक अध्ययन की ज़रूरत भी महसूस करते हैं मुझे सऊदी अरब का वह अट्ठारह वर्षीय लड़का हमेशा याद रहेगा जिसने पैदाईश के सिलसिले में कुर्आन की आयतों का हवाला (संदर्भ) देने पर जवाब दिया था कि "हमें तो इस किताब से तमाम ज़रूरी जानकारियां मिल जाती हैं। जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो मेरे अध्यापक कुर्आन से ही यह बात बतला देते थे कि बच्चे किस तरह पैदा होते हैं। कामुकता पर तो आप की पुस्तकें बहुत बाद की चीज़ हैं" यदि मैं इस विषय पर कुर्आन में बयान की गई तमाम बातों का वर्णन करने लगूं तो फिर सारा समय इसी में बीत जाएगा। मेरा विचार है कि मैंने "बाईबिल, कुर्आन और साइंस" में जो भाषाई और वैज्ञानिक व्याख्याएं की हैं वह उन लोगों के लिए पर्याप्त हैं जो अरबी नहीं जानते या भ्रूण विज्ञान के बारे में ज़रूरी जानकारी नहीं रखते। ऐसे लोग इस पुस्तक में बयान की हुई आयतों के अर्थ आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अच्छी तरह समझ जाएंगे।

इस जगह एक और बात वर्णन करने योग्य है कि जब कुर्आन उतरा उस समय इन जानकारियों के बारे में लोगों के विचार पर अन्ध विश्वास और मिथ्याओं का बहुत प्रभाव था अतः कुर्आन में जो विचार आए हैं उनमें और आज के ज्ञान में समानता बहुत ही चकित कर देने वाली है। इसी प्रकार यह भी आश्चर्यजनक बात है कि कुर्आन में उस ज़माने के ग़लत विचारों की कोई छाया मौजूद नहीं है।

आईये कुछ ऐसी आयतों को देखें जिन में कोइ मुख्य सिद्धांत या विचार इस पेचीदा अमल के लिए पेश किया गया है जिसके कारण वीर्य का बहुत ही सूक्ष्म अंश बल्कि सत्त (यदि 'सुलाला' का यह अनुवाद किया जा सके) जनम की क्रिया के लिए पर्याप्त होता है। इस सत्त का स्त्री के गर्भाशय में प्रवेश होने का पूरा आशय 'अलक़' शब्द में मौजूद है जिसे इस उद्देश्य के लिए कुर्आन ने कई आयतों में प्रयोग किया है। एक आयत में कहा गया है कि ***अनुवाद – "ख़ुदा ने इंसान को ख़ून के लोथड़े (अ़लक़) से पैदा किया है"*** (96 : 2)

मेरे विचार में शब्द 'अलक़' के अस्ल और आरम्भिक अर्थ के अतिरिक्त और अर्थ यहां लेना सही नहीं है न उससे संबद्ध कहना ठीक है जैसा कि बलाकिर (Blachare) ने अनुवाद किया है और न ख़ून का लोथड़ा जैसा कि प्रोफ़ेसर हमीदुल्लाह लिखते हैं। यह दोनों ही इस शब्द का अनुमानित अर्थ हैं और इस संदर्भ में इस का प्रयोग सही नहीं है।

कुर्आन ने मां के गर्भाशय में भ्रूण के विकास का बहुत ही संक्षिप्त लेकिन वास्तविकता के अनुकूल वर्णन किया है। जिन सरल शब्दों में कुर्आन ने इस का वर्णन किया है वह इस के विकास के बुन्यादी स्टेजेज़ का बिल्कुल ठीक इज़हार करते हैं *हम* सूरः मोमिनीन में पढ़ते हैं :–

अनुवाद – "फिर हमने नुतफ़ा (वीर्य) को ख़ून का लोथड़ा बना दिया फिर हमने ख़ून के लोथड़े को (गोश्त क़ी) बोटी बना दिया फिर हमने हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया।" (23 : 14)

इस आयत में गोश्त की बोटी के लिए 'मुज़ग़ा' का शब्द प्रयोग किया गया है जिस का सही अुनवाद चबाया हुआ गोश्त है जो विकास के एक अन्तराल में भ्रूण का सही चित्र पेश करता है। इसी प्रकार हमें यह मालूम है कि हड्डियां इस अधकचे गोश्त के ढेर में पैदा होती हैं और विकसित होती हैं उसके बाद पट्ठे (मांसपेशियां) उसे ढक लेते हैं अब यह पूरा विकसित गोश्त है जिसके लिए कुर्आन में दूसरी बार "लहम" का शब्द आया है।

भ्रूण एक ऐसे स्टेज से भी गुज़रता है जब उसके अंग संतुलित और कुछ उस व्यक्ति से असंतुलित होते हैं जिस की शक्ल उसे आगे चलकर धारण करनी है। शायद 'सूरः हज' में इस ओर संकेत किया गया है :–

अनुवाद – "हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर नुत्फ़ा से फिर ख़ून के लोथड़े से फिर बोटी से कि (बाज़) पूरी (होती है) और कुछ एक अधूरी।" (23 : 12)

हमें कुर्आन में इन्द्रियों और (सुन्ने, देखने और महसूस करने वाले अंग) अर्थात् शरीर के बड़े भाग के ज़ाहिर होने के संबंध में 'सूरः सज्दा' की यह आयत मिलती है:–

अनुवाद – "फिर उसे दुरुस्त किया और उसी में अपनी तरफ़ से रुह (आत्मा) फूंकी और तुम को कान और आँख और दिल दिये।" (32 : 9)

दिल के लिए "अफ़इदः" बहुवचन में प्रयोग किया गया है जिसका साफ़ अर्थ शरीर के मुख्य अंग (दिल, फेफड़े, जिगर आदि) हैं। अब इस में कोई बात भी आधुनिक अनुसंधान (Research) के ख़िलाफ़ नहीं है और न ही उस में कोई बात उन विचारों को प्रकट करती है जो कुर्आन के उतरने के ज़माने में प्रचलित थे।

अभी तक हम कुर्आन और वर्तमान साइंसी सिद्धांतों के बीच समानता पर गौर कर रहे थे। प्राणी रचना (पैदाइश) का ज़िक्र करते हुए मैंने यह भी कहा था कि जहां वर्तमान साइंसी जानकारियां और कुर्आनी आयतों की बीच विचारों की समानता है वहां बाईबिल के साइंसी बयानात स्वीकार करने योग्य नहीं हैं। इसमें अचम्भे की कोई बात नहीं क्योंकि हमें यह मालूम है कि बाईबिल छटी शताब्दी पूर्व ईसा के अहबार और रब्बीयों ने लिखी थी और इसीलिए इस का नाम भी पवित्र लेख रखा गया है। मज़हब के इन प्रचारकों का उद्देश्य लोगों को सब्त दिवस की पैरवी के लिए उत्साहित करना था। चूंकि इन लेखों को एक उद्देश्य के तहत लिखा गया था, फादर डीवाक्स (Father De Vausx) ने, जो बैतुल मुक़द्दस में बाईबिल महाविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष थे, यह विचार प्रकट किया है कि इन लेखों का बुन्यादी उद्देश्य धार्मिक मालूम होता है।

बाईबिल में पैदाइश का एक और संक्षिप्त परंतु अधिक प्राचीन बयान भी मौजूद है। इसे "यहूदा कथन" के नाम से याद किया जाता है। इसमें इस विषय को एक दूसरे ही दृष्णिकोण से बयान किया गया है। यह दोनों वर्णन किताबे पैदाइश के अंश हैं जो तौरात की पहली किताब है। यह समझा जाता है कि यह लेख हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ के लिखे हुए हैं लेकिन अब हमें मालूम हो चुका है कि इन बयानों में बहुत अधिक फेर बदल हो चुका है।

पैदाइश की पुस्तक के यह पवित्र लेख इस अनोखी वंशावली के लिये मशहूर है जिसमें हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक पूरी वंशावली बयान की गयी है लेकिन अब इसको कोई महत्व नहीं देता फिर भी नये टेस्टामेंट के लिखने वालों–मती और लूका ने इसे हज़रत ईसा अलै० का शजरा (वंशावली) देने के लिए अक्षरतः नक़ल कर दिया है। मती इस शजरा को हज़रत इबराहीम अलै० तक पहुंचाता है। यह तमाम लेख साइंसी दृष्टिकोण से मानने योग्य नहीं हैं क्योंकि यह धरती पर इंसान के प्रकट होने का अन्तराल भी निश्चित करते हैं जबकि यह अन्तराल उससे बिल्कुल भिन्न है जो हमारी वर्तमान जानकारी के अनुसार प्रमाणित समझा जाता है। इसके विपरीत कुर्आन में इस प्रकार की कोई चीज़ मौजूद नहीं है।

हम पहले यह कह चुके है कि ब्राह्मण की संरचना के संबंध में कुर्आन का बयान वर्तमान विचारों से पूरी तरह मेल खाता है जबकि बाईबिल का बयान इसको नकारता है। प्रारम्भ से पानी का मौजूद होना और पहले ही दिन रोशनी के इन सितारों का बनाया जाना जो प्रकाश देते हैं, ज़मीन की रचना से दिन रात का होना, ज़मीन को तीसरे दिन और सूर्य को चौथे दिन बनाया जाना, पशुओं को धरती पर छटे दिन और हवा में उड़ने वाली चिड़यों का पांचवें दिन वजूद में आना, हालांकि चिड़यों से पहले पशु पैदा हुए थे, यह तमाम बयानात (कथन) उस ज़माने के विचारों से मेल खाते हैं जो उस किताब के लेखन के समय संसार में प्रचलित थे। इसके अतिरिक्त उनका और कोई उद्देश्य हो ही नहीं सकता। जहां तक इन वंशावलियों का संबंध है जो बाईबिल में दी गयी हैं जो यहूदियों की तक़वीम की बुन्याद हैं, उनके अनुसार इस संसार की उम्र 5738 साल है। यह बात भी मानने के योग्य नहीं है। हमारा यह सूर्य मण्डल सवाचार मिलियन साल पुराना हो सकता है और धरती पर इंसान की उपस्थिति वर्तमान अनुमान के अनुसार कई लाख साल से है।

कहने का अर्थ है कि कुर्आन में इस प्रकार कां विस्मित वर्णन न होना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार नूह अल० के सैलाब का ज़िक्र है। वास्तव में बाईबिल में जो कुछ लिखा हुआ है वह दो विभिन्न कथनों पर निर्भर है जिन्हें गडमड कर दिया गया है। बाईबिल में हज़रत इब्राहीम अल० से लगभग तीन सौ साल पहले एक ऐसे सैलाब का ज़िक्र आता है जिसने सारे संसार को अपनी लपेट में ले लिया था। हज़रत इब्राहीम अल० के बारे में हमारी जो जानकारी है उसके अनुसार ईसा पूर्व इक्कीसवीं या बाईसवीं सदी में यह महान सैलाब आया था। इतिहास के अनुसार यह बिल्कुल ग़लत है। यह कैसे माना जा सकता है कि इक्कीसवीं या बाईसवीं सदी ईसा पूर्व में इंसानी सभ्यता समाप्त हो चुकी थी जबकि इसके साक्ष्य मौजूद हैं कि उस ज़माने में मिश्र की वह हुकूमतें अपने चर्म सीमा पर थीं जिसे हम "मध्य शहंशाही" का नाम देते हैं।

उपरोक्त बयानों में कोई बात भी तो वर्तमान ज्ञान के अुनकूल नहीं है। इससे यह नतीजा भी निकलता है कि बाईबिल और कुर्आन के बीच बहुत अन्तर है।

बाईबिल के विपरीत कुर्आन के बयान से यह मालूम होता है कि सैलाबे नूह से केवल नूह अल० की कौम तबाह हुई थी। उन्हें उनके गुनाहों की सजा इसलिए दी गई थी कि वह खुदा के इनकरी और पापी थे। चूंकि कुर्आन उस युग को निश्चित नहीं करता अतः कुर्आन के बयान में इतिहासिक या पुरातत्व ज्ञान के अनुसार कोई आपत्ति जनक बात मौजूद नहीं है।

कुर्आन और बाईबिल की तुलना के लिए तीसरी बहुत महत्वपूर्ण घटना भी मौजूद है। इसका संबंध हज़रत मूसा अल० के जीवन मुख्यतः फ़िरऔन की गुलामी से यहूदियों का आज़ादी हासिल

करके मिश्र से बाहर आने की घटना से है। यहां मैं इस घटना का एक संक्षिप्त वर्णन पेश करुंगा जिसे मैं अपनी पुस्तक में दे चुका हूँ। मैंने इसमें वह तमाम बिन्दु बयान कर दिये हैं जिनमें कुर्आन और बाईबिल के बयानों में समानताएं या भिन्नताएं हैं या दोनों के बयानात इस घटना पर प्रकाश डालने में एक दूसरे के सहायक हैं। मिश्र के फ़िरऔने के विषय में जो विभिन्न मान्यताएं हैं उन का ज़िक्र करते हुए मैंने यह नतीजा निकाला रेमेसिस द्वितीय (Ramesses II) के उत्तराधिकारी मेरनेफ़तह (Merneptah) बग़ावत के समय का फ़िरऔन है। इन दोनों आसमानीं पुस्तकों के फ़िरऔन के बारे में जो कुछ दिया हुआ है उसे पुरातत्व के अनुसन्धान से तुलना करने के बाद यह मान्यताएं अधिक सही मालूम होती हैं। मुझे प्रसन्नता है कि बाईबिल के बयानात में इस का निश्चित शहादतें मौजूद हैं कि हज़रत मूसा का ज़माना वही था जो मिश्र में फ़िरऔन की हुकूमत का ज़माना था और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम रेमेसिस द्वितीय के ज़माने में पैदा हुए थे। इस तरह हज़रत मूसा अल० के क़िस्से में बाईबिल का बयान इतिहासिक महत्व रखता है। मेरनेफ़ताह की लाश की ममी की मेडिकल जांच से यह मालूम हो गया है कि उसकी मौत किस तरह हुई थी।

यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि हमारे पास आज भी उस फ़िरऔन की लाश मौजूद है जिसे 1898 ई० में बरामद किया गया था। बाईबिल का बयान है कि फ़िरऔन समुद्र में डूब गया था लेकिन उसके बाद वह किसी घटना की सूचना नहीं देती जब कि कुर्आन हमें बताता है कि इस दुष्ट फ़िरऔन की लाश समुद्र से बरामद हो गई थी :-

अनुवाद – "सो आज हम तेरे जिस्म को नजात दे देंगे ताकि तू एक चिन्ह पीछे आने वालों के लिए रहे।" (1 : 92)

मेडिकल जांच से यह मालूम हुआ कि उस उपरोक्त ममी की लाश पानी में अधिक देर तक नहीं रही थी क्योंकि पानी में अधिक देर तक रहने से शरीर को जिस प्रकार की हानि हो सकती है उसके चिन्ह उसमें पाए नहीं जाते। इस तरह कुर्आन के बयान और वर्तमान जानकारियों के आधार स्वरूप बनी राय में किसी भिन्नता की गुंजाईश नहीं है।

आधुनिक ज्ञान और कुर्आन के बयानात में अनरुपता कुर्आन की विशेष विशेषता है। परंतु यह प्रश्न उठता है कि क्या इस प्रकार की तुलना से हम यहूदियों और ईसाईयों की पवित्र पुस्तकों को अनादर या उन्हें उनकी असल बहमूल्यता से वंचित तो नही कर रहे हैं। मेरा विचार है कि ऐसा कहना सही नहीं है क्योंकि इस तुलना में हम ईसाई और यहूदी धर्मों की पूरी आसमानी पुस्तक पर नहीं बल्कि उसके कुछ अंशो की ही आलोचना कर रहे हैं। उसके कुछ अंश निःसंदेह बहुत अधिक इतिहासिक महत्व रखते हैं। उदाहरण स्वरूप हज़रत ईसा के ज़माने को निर्धारण करने में हम उसका महत्व स्वीकार कर चुके हैं।

वास्तव में इन कारणों का अध्ययन भी निहायत महत्वपूर्ण है जिन की वजह से इन पुस्तकों और वर्तमान जानकारियों के बीच यह भिन्नताएं दिखाई पड़ती हैं। प्राचीन टेस्टामेंट नौ सौ साल के साहित्यिक प्रयासों का संकलन है जिसमें समय–समय पर परिवर्तन होते रहे हैं। इनका संकलन करने में इंसानी हाथ का बहुत योगदान है।

कुर्आन के नाज़िल होने (उतरने) का इतिहास इससे बहुत भिन्न है जबकि हम पहले कह चुके हैं कि उसी क्षण से, जबकि यह नाज़िल (उतर) हो रहा था, उसे सीनों में सुरक्षित कर लिया जाता था (अर्थात् याद कर लिया जाता था) और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़माने में ही इसे लिख भी लिया जाता रहा। इन्हीं कोशिशों का ही नतीजा है कि इसके सही होने में कोई संदेह पैदा नहीं होता। आधुनिक ज्ञान की रोशनी में कुर्आन का अध्ययन इन दोनों की अनरूपता स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है जिसके बहुत से उदाहरण दिये गये हैं। हमें इससे यह भी मालूम होता है कि मुहम्मद सल्ल० के ज़माने में किसी मनुष्य के लिए उस ज़माने की प्राप्त जानकारी के आधार पर ऐसी बातें कहना सम्भव ही नहीं था। इन्हीं कारणों से कुर्आन को एक ऐसा स्थान प्राप्त है जिसकी कोई मिसाल नहीं है और एक निष्पक्ष वैज्ञानिक अपने आप को इसे मनुष्य का कथन न समझने के लिए मजबूर पाता है।

जिन सच्चाईयों को मैंने आज आपके सामने पेश किया है उनकी व्याख्या इंसान के लिए एक चैलेंज की हैसियत रखती है।

अनुवाद – **हबीबुल्लाह आज़मी**

●●●

इस्लाहि मुआशरा

नदवतुल उलमा के अहम तरीन (महत्व पूर्ण) कामों में से एक काम इस्लाहि मुआशरा (समाज का सुधार) भी है, जहेज़ की बुरी शक्ल, जहेज़ की बुरी रस्म, तिलक वग़ैरह, दावतों पर बेजा ख़र्च और दिखावे के कितने काम समाज में घर किये हुए हैं, नदवतुल उलमा ने इनके ख़त्म कराने में बड़ा रोल अदा किया है, इस संबंध में मालूमात के लिये लिखें :-

इस्लाहि मुआशरा आफ़िस
पो०बा०नं० 93 नदवा लखनऊ 226007

प्रेम का संदेश आधुनिक युग के नाम

मौ० मुहम्मदुल हसनी (र०)

अल्लाह तआला के पैदा किये हुए प्राणी जगत में सबसे श्रेष्ट और सबसे उत्तम प्राणी इंसान है और इन्सान के अन्दर सबसे उत्तम, सबसे बहुमूल्य और सबसे अधिक कोमल चीज़ दिल है और इस दिल का बहुमूल्य ख़ज़ाना ख़ुदा की महब्बत है।

यदि यह महब्बत का मोती न हो तो सारा वजूद खाल और हड्डी के समान है और यह सारी काएनात (ब्रह्माड) घास और फूस का एक ढेर है। इस महब्बत की विशेषता यह है कि वह दूसरे प्रियतम को एक क्षण के लिए भी गवारा नहीं कर सकती। वह एक वास्तविक प्रियतम से लव लगा कर सारे संसार को तज देती है। एक के साथ बेखुद और सरशार (मस्त) होकर सारे संसार से बददिल और बेज़ार हो जाती है। वह सबके साथ रहकर भी किसी के साथ नहीं होती। सबसे संबंध रख कर भी किसी से संबंध नहीं रखती। वह गुलामी में भी आज़ाद होती है और होशियारी और बुद्धिमानी में भी उन्मत्त और मस्त रहती है। बड़े–बड़े दरबारों को ख़ातिर में नहीं लाती और मुख़लिस निर्धन को भी सिर पर बिठाती है। एक आधी रात की आह और प्रातः काल की एक दुआ उस की नज़र में हज़ार राज्यों से बढ़–चढ़ कर और हज़ार ताज एवं मुकुट से बेहतर है।

परंतु इन तमाम विशेषताओं के साथ वह इतनी स्वाभिमानी है कि किसी दूसरे की छाया और किसी दूसरे का ख़याल का सूक्ष्म अंश भी उसको गवारा नहीं। अल्लाह की महब्बत केवल उसी समय दिल में आती है जब उसको हर चीज़ से ख़ाली पाती है। किसी चापलूसी, मिन्नत, समाजत, तमन्ना का उस पर असर नहीं होता। दर्पण उसके लिए बिल्कुल ख़ाली है या नहीं, दिल का सिंघासन उसके लिए ख़ाली है कि नहीं और जब वह आती है तो इस प्रकार आती है कि दिल के दरवाज़े हर चीज़ के लिए बन्द हो जाते हैं और अल्लाह के सिवा किसी का ख़याल उसके द्वार तक नहीं पहुंच पाता और कभी ऐसा होता है तो ख़ुदाइ अंगारा उसका पीछा करता नज़र आता है और हमारे लिए इस स्वाभिमान, महब्बत का सन्देश केवल यह है कि अपने नफ़्स (वासनाओं) को पीछे छोड़ दो और मेरे पास आ जाओ। पहले नसीहत की आंखों से यह देखो कि तुम ने अपने दिल के परदे में अपवित्र कुत्ते, सुअर और कैसे–कैसे ज़हरीले सांप और बिच्छू पाल लिए हैं। तुमने अपने सारे वजूद और अपनी ज़िन्दगी भरकी गन्दगियां इसी दिल में डाल रखी हैं। अपवित्रता की कौन सी क़िस्म है जिससे तुमने अपने दिल को ख़ाली छोड़ा है ? गुनाह और ग़ैर अल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त) से महब्बत की कौन सी गन्दगी है जिससे तुम्हारा दिल सुरक्षित है, अत्याचार की वह कौन सी क़िस्म है जो तुमने उस पर रवा नहीं रखी ?

तुमने अपने दिल में सोने, चाँदी और हीरे जवाहरात के ढेर लगाए और बड़ी आस्था के साथ उनकी पूजा करते रहे। तुम्हारे हाथ देखने में ख़ुदा के सामने बंधे होते थे लेकिन तुम्हारे विचारों में किसी और दरबार का चित्र होता था। मस्जिद की फटी पुरनी चटाई को देख कर ईरानी क़ालीन और नई डिज़ाईनों के सोफ़े सेट की याद तुम्हारे दिल में चुटकियां लेती थीं।

तुमने अपनी सत्ता के लालच और ऊँचे पद की चाह में कितने लोगों के अधिकारों को मलियामेट किया और कितने मासूम और बेगुनाह इंसानों को अपने रास्ते से हटाया। स्वयं अपने को कितना धोखा दिया और अपने भाईयों को कितने दिन धोखे में रखा। तुमने अपनी इच्छाओं के भ्रम को सच समझा और और अपनी आंखें बन्द करके उनके पीछे भागते रहे यहां तक कि तुमको उसने किसी ऐसी भूलभुलया में लाकर छोड़ दिया जहाँ से वापस होने का रास्ता तुमको मालूम नहीं और वास्तविक मार्गदर्शक तुम्हारे साथ नहीं तुमने सीनों के भेद और निगाहों की चोरी के रास्ते से अपने दिल को किस–किस तरह गन्दा किया है और उसमें कैसी–कैसी अपवित्र भावनाओं को सजा कर प्रसन्न हो रहे हो।

तुमने अपने दिल को अजाएब घर बना रखा है और उसमें तरह–तरह के जानवर पाल रखे हैं। यह जानवर तुम्हारे आचरण और कर्म के जीवित चित्र हैं। तुम्हारे लालच ने दिल में समाकर कुत्ते का रूप धारण कर लिया है। तुम्हारे लोभ ने सूअर का रूप ले लिया है, तुम्हारे अत्याचार ने भेड़िये की खाल ओढ़ ली है और तुम्हारी यातना पसन्दी ने सांप और बिच्छू की

शक्ल धारण कर ली है। तात्पर्य यह है कि इन जानवरों, कीड़े–मकोड़ों की कौन सी शक्ल और तस्वीर है जिस का तुमने अपने दिल के अजाएब घर में इंतिज़ाम नहीं किया है और निरंतर इसको आहार नहीं पहुंचाते हो। तुमने इसमें गन्दगी के ढेर लगाए हैं और कस्तूरी और इत्र की सुगन्ध की प्रतीक्षा कर रहे हो। कांटे बोए हैं और फूल की आस लगाए बैठे हो। तुमने अपने दिल के सारे द्वार बन्द कर दिये हैं और केवल एक दरवाज़ा खुला छोड़ दिया है और वह है वासनाओं और इच्छाओं की पूर्ति का दरवाज़ा। तुम हर दिल लुभाने वाली और सुन्दर चीज़ पर इस तरह लपके हो जैसे वही तुम्हारा सबसे बड़ा अरमान और सबसे बड़ी लालसा है परंतु यह अरमान निकाल लेने के बाद दूसरे अरमान के साथ तुम्हारा मामिला उससे भी अधिक लालच और बेचैनी का होता है।

फिर तुम ग़ौर करो कि तुमने अपनी ज़िन्दगी की कितनी सुन्दर और बहुमूल्य घड़ियां अपने झूठे खुदाओं और अपने बनाए हुए आक़ाओं को भेंट कर दीं। तुमने अपने हृदय की तपन एवं मृदुलता और गर्व एवं श्रद्धा और कुर्बानी और स्वार्थ त्याग के कैसे–कैसे उच्च जज़्बात इन तुछ एवं उपहास पूर्ण चीज़ों पर बरबाद किये हैं जिनको याद करके आज शायद तुम को हंसी भी आती होगी और रोना भी।

तुमने अपने दिल के लिए बुत तराशे और तोड़े, कितने प्रियतम पसन्द किये और छोड़े, किन–किन चीजों से दिली इच्छाओं और तमन्नाओं में अपनी सारी उम्र गंवाई और उन ठीकरों और पत्थरों के लिए तुमने बिना हिचक दिल की भेंट पेश की, किन तुच्छ और क्षणिक स्वाद के लिए तुमने अपनी वासनाओं की मामूली इच्छा और बचकाना उत्तेज्नाओं पर कैसी–कैसी आने वाली नेमतों और सम्मानों को ठुकरा दिया। तुमने हर आवाज़ पर लब्बैक कहा, हर नुस्ख़े को आज़माया, हर अत्तार (दवा बेजने वाला) और नीम हकीम की बात मान ली और वासनाओं के हर संकेत की पूर्ति को अपना पवित्र कर्त्तव्य समझा और इस के लिए अपना बहुमूल्य समय बिना रोक टोक बरबाद किया, अपना क़ीमती रुपया पानी की तरह बहाया, अपनी शक्ति को उदारता के साथ ख़र्च किया, अपनी हर आंतरिक छमता को दिलखोल कर प्रयोग किया तो क्या तुमने ख़ुदा की खुशी, अल्लाह की रज़ामन्दी और उस दरबार में जाने की मंज़ूरी को इतना गिरा पड़ा समझ लिया है कि उसके लिए तुम्हें किसी मेहनत और तलाश की ज़रूरत नहीं है ? परन्तु ख़ुदा का फ़ैसला इसके विपरीत है। ख़ुदा की महब्बत हासिल करने के लिए सबसे पहले तुम्हें अपने दिल पर पत्थर रखने होंगे और कभी–कभी पेट पर भी पत्थर बांधने होंगे। नफ़्स (वासनाओं) पर जीतेजी छुरी फेरनी होगी और पग–पग पर अपनी चाहत की मुख़ालफ़त करनी होगी। उस के हर प्रलोभन और दावत को अपने क़दमों से रौंदने की ताक़त पैदा करनी होगी और हंसी ख़ुशी या रोरो कर इन प्रिय चीज़ों की जुदाई गवारा करना होगी जो जीवन भर हमारे साथ रहीं।

यदि हमें सत्य की तमन्ना है तो इसका मार्ग केवल यही है और सच्ची तलब की बेचैनी और व्याकुलता इस राह की सबसे पहली शर्त और इश्क़ की किताब का सबसे पहला सबक़ है।

(इस राह की पहली शर्त यही है कि अल्लाह की राह में दीवाना हो जाओ)

रूपान्तर– हबीबुल्लाह आज़मी

✿ ✿ ✿

भूत क्या है ?

आमतौर से मशहूर है विशेषकर ग़ैर मुस्लिमों में कि जो शख़्स मर जाता है उसकी रूह (आत्मा) आज़ाद हो जाती है, और अगर वह महा पापी था तो उसकी उद्दण्ड आत्मा (शरीर रूह) भूत बन जाती है और लोगों को सताती और परेशान करती है, इसके तर्क में उनके पास वह अनगिनत घटनाएं हैं (चाहे वह सब झूठ हों) जो समाज में आज भी अधिक मात्रा में मौजूद हैं, उनके निकट एक मनुष्य पर विशेष कर स्त्रियों पर वह बद रूह (बुरी आत्मा) आकर उसे परेशान करती है और उसको बीमार कर देती है, वह रूह उस रोगी की जुबान से बताती है कि मैं फुलाँ हूँ और बड़े आश्चर्य की बात यह है कि कभी कभी उसने अपने को जिस मरने वाले की रूह बताया, उसके जीवन की ऐसी बातें बता दीं, जिन को केवल वह मरने वाला ही जानता था, जैसे उसके हाथ का दफ़न किया हुआ कोई गहना या माल वग़ैरह, साधारण लोग उसे भूत, प्रेत, नटबीर आदि कहते हैं, (इस संबंध की अगली बातें अगले अंक में पढ़िये।)

❑❑❑

अगर आप अपने यहाँ जुमे की नमाज़ के वक़्त या अलग से इस्लाही तक़रीर करवाने के लिये आलिम चाहते हैं तो इस पते पर लिखें :–

दफ़्तर दावत व इर्शाद
पो०बा०नं० 93 नदवा
लखनऊ 226 007

हिन्दी भाषा में उर्दू शब्द

डॉ० हॉरून रशीद सिद्दीकी

पिछले अंक में देव नागरी में अ़रबी अक्षर लिखने की बात प्रस्तुत की थी इस अंक में हिन्दी भाषा में उर्दू शब्दों के विषय में कुछ क़हना चाहता हूँ।

वास्तव में उर्दू भाषा कई भाषाओं के मेल से बनी है, इसकी क्रियाएँ हिन्दी से ली गई हैं, इसके अव्यव भी हिन्दी के हैं जैसे का, की, के, को, में, पर, से, तक, तलक आदि, इसके सर्वनाम भी हिन्दी के हैं जैसे वह, वे, तू, तुम, मैं, हम आदि इसकी संज्ञाएँ कई भाषाओं से ली गई है, जैसे क़लम, दवात, किताब, अमीर ग़रीब फ़क़ीर आदि अ़रबी हैं तो दिल, सीना, चेहरा, पेशानी, रौशनाई, सियाही, कागज़ आदि फ़ार्सी और हाथ, पाँव, नाक, कान, धोती, कुर्ता, टोपी, जूता आदि हिन्दी हैं तथा पेन, पेन्सिल, रबर, कटर, टिकट, पोस्टकार्ड, रेल, प्लेटफार्म आदि अंग्रेजी हैं, इसकी अपनी भी कुछ संज्ञाए हैं जैसे मुर्ग़ा, मुर्ग़ी, आपा, अब्बा, ख़ालू आदि, लगभग यही परिस्थिति हिन्दी की भी है, अल्बत्ता उर्दू में अधिकांश संज्ञाएं अ़रबी, फ़ार्सी से ली गई हैं तो हिन्दी पर संस्कृत और पाली का अधिकार है, परंतु मैंने हिन्दी का कोई एक भी साधारण लेख नहीं देखा जो हिन्दी, फ़ार्सी शब्दों से बिल्कुल ख़ाली हो, इन्शा अल्लाह खाँ इन्शा की "रानी केतकी की कहानी" एक विशेष लेख है उसका यहाँ वर्णन नहीं।

हिन्दी भाषा में अ़रबी फ़ार्सी के जो शब्द आते हैं हम उनको उर्दू शब्दों का नाम देते हैं। हम अपने पिछले लेख की बात फिर दुहराते हैं कि अ़रबी के कुछ विशेष अक्षरों की ध्वनि के स्थान पर हिन्दी में अक्षर नहीं हैं जबकि उनसे बने शब्दों के शुद्ध उच्चारण के संकेत के लिये हिन्दी अक्षरों में कुछ बदलाव किये बिना उनको शुद्ध पढ़ना संभव नहीं है। हमारे वह भाई जो केवल हिन्दी जानते हैं हम उनको कदापि कष्ट देना नहीं चाहते वह जैसे लिखतें हैं लिखें जैसे बोलते है बोलें परंतु जो साहित्यकार उर्दू हिन्दी दोनों जानते हैं, या जो सज्जन इस्लामियात पर लिखते हैं उनसे अवश्य अनुरोध है कि इस विषय में जो नियम नियत किये गये हैं उनका पालन करें।

अ़रबी के विशेष अक्षरों के स्थानापत्र के लिये बिन्दियों की सहायता से कुछ अक्षर बना लिये गये हैं, हम नीचे की तालिका में कुछ शब्द प्रस्तुत करते हैं आप ध्यान दें और देखें कि यदि यह बिन्दियाँ हटा ली जाएँ तो अर्थ के अनुसार शब्द क्या से क्या हो जाएगा :—

तालिका

शब्द	अर्थ
'समन	मूल्य
समन	चमेली
'सना	प्रशंसा
सना	एक पौधा
सबा	रानी, बिल्क़ीस का नगर
स़बा	पुरवा हवा
'सवाब	नेकी का बदला
स़वाब	ठीक बात
त़ाक	ताखा
ताक	अंगूर की बेल
त़ूल	लम्बाई
तूल	एक प्रकार का लाल कपड़ा
त़ीन	मिट्टी
तीन	इन्जीर
जकी	बुद्धिमान
ज़की	पवित्र
जिल्लत	अपमान
ज़िल्लत	त्रुटि
जिल्ल	नर्मी
जिल्ल	छाया
ज़ुहूर	फूल (ब. वचन)
जहूर	प्रगट होना
जन्नी	अनुमानित
ज़न्नी	दुर्बल
ह़ाजी	ह़ज्ज करने वाला
हाजी	गाली देने वाला
ह़ल	समाधान
हल	जोतने का तंत्र
ख़ार	काँटा
खार	नमकीना
खाल	खाल
ख़ाल	शारीरिक तिल
जलील	तुक्ष
जलील	श्रेष्ट
जन	लोग
ज़न	नारी
अ़लम	झन्डा
अलम	दुख
अर्ज़	पृथ्वी
अ़र्ज	प्रस्तुत करना
गाली	*गाली*
ग़ाली	मूल्यवान
गुल	फूल
गुल	शोर
फ़न	कला
फन	फन
क़ल्ब	ह्रदय
कल्ब	कुत्ता

यह सत्य है कि इन अक्षरों में कुछ बिन्दियों के बनाने में कठिनाइयाँ हैं जैसे– ज, ज़ ज तो साधारण लेखों में इन को छोड़ दें कि उर्दू वाले भी शब्दों के वर्ण–विन्यास (Spelling) में तो इन सभी अक्षरों का पालन करते हैं परन्तु बोलने में इन सब का उच्चारण केवल ज़ करते हैं।

इसी प्रकार उर्दू वाले बोलने में स, स़, स तथा त, त़ में कोई अन्तर नहीं करते और अर्थ का अंतर प्रयोग के अनुसार समझ लेते हैं, अतः उर्दू के क़लम, ख़ादिम, ग़म, फ़क़ीर, ज़बान जैसे शब्दों के क, ख़, ग़, फ़ ज़ में तो बिन्दी लगाएँ बाकी में छोड़ दें परंतु अ़ब्द तथा ह़म्द जैसे शब्दों के अ़ और ह़ में भी बिन्दी रखना आवश्यक जानें, अलबत्ता जब कुर्आन का कोई शब्द लिखें तो सभी अक्षरों का पालन करें।

कठिनाई जो आती है वह अ के अन्य रूपों में इसलिये कि आप जानते हैं कि अ के अन्य रूप इस प्रकार हैं आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ इन सबमें बिन्दी लगाने के बजाए बिन्दी वाले अ के रूप इस प्रकार बना लिये गये है, अ़, आ़, इ़, ई़, उ़ कुछ लोगों ने आपत्ति प्रकट करते हुए कहा कि इन नये रूपों को कौन जानेगा और कौन पढ़ सकेगा, जबकि मैने जिस के समक्ष अ़िल्म, अ़ीसा, अ़ुलमा, अ़ूद, अ़ैब लिखकर पेश किया तो बिन्दी के भेद को तो वह न जान सका कि बिना बताये और बिना सिखाये उसको कोई कैसे जान सकता है, मगर सभी रूपों को शुद्ध ध्वनि से पढ़ दिया, अलबत्ता यह कहा कि इस प्रकार नहीं लिखते, अतः हिन्दी में उर्दू शब्दों को लिखने में इन नये रूपों के प्रयोग में कोई आपत्ति न होना चाहिए।

कुछ और भी उर्दू शब्द हैं जिन को कभी उर्दू वाले भी अशुद्ध बोलते हैं और हिन्दी वाले भी ग़लत लिखते और बोलते हैं जैसे ज़िबह, ख़्याल, ज़्यादा, बुनियाद, और दुनिया आदि जबकि इन का शुद्ध रूप इस प्रकार है – ज़ब्ह़, ख़याल, ज़ियादा, बुन्याद और दुन्या जो शब्द पवित्र कुर्आन का हो जानबूझ कर उसका उच्चारण बिगाड़ना बहुत ही ख़राब है, जिस प्रकार हम अपनी सामाजिक सभ्यता की रक्षा आवश्यक जानते हैं उसी प्रकार अपनी भाषिक सभ्यता की रक्षा को भी अनिवार्य जानें और अर्श, उस्मान, इल्म, इर्फान, ईद, आलम ऊद, कुदरत, खालिक, नमाज, जी इल्म, जलालत (पथ भ्रष्टता) जुल्म, फज्ल, गुलाम, ह़म्द बोलने और सुनने को अपनी भाषिक सभ्यता की मौत जानें जो बोल न सकें, लिखना न जानें वह गूंगों और तुत्लों की भांति क्षमा योग्य हैं परंतु जानबूझ कर असावधानी बहुत ही बुरी है।

सच्चा राही में उर्दू शब्द लिखने के नियम –

1. हिन्दी में उर्दू के कई शब्द ग़लत स्पेलिंग से लिखे जाने लगे हैं। हम उनको शुद्ध लिखेंगे, जैसे दुनिया, बुनियाद, ज़्यादा, ख़्याल, ज़िब्ह का शुद्ध इम्ला इस प्रकार है। दुन्या, बुन्याद, ज़ियादा, ख़याल, ज़ब्ह़।
2. यदि गतिहीन (साकिन) अक्षर के बाद आने वाला अक्षर किसी स्वर की मात्रा से जुड़ा हो तो उसे चाहे आधा लिखें चाहे पूरा, जैसे– अख़्लाख, अख़लाक, फ़र्मान, फ़रमान, क़ुर्आन, क़ुरआन। हिन्दी शब्दकोष में गतिहीन (साकिन) अक्षरों के पूरा लिखे जाने के उदाहरण भरे पड़े हैं जैसे – कपड़ा, झगड़ा, लड़का, खटका, समझा, ख़तरा आदि।
3. जिन गतिहीन अक्षरों के पश्चात् मात्राहीन, गतिशील अक्षर किसी व्यंजन से मिल रहा हो तो उस साकिन अक्षर को आधा लिखें या हलन्त लगाएं जैसे, खिल्क़त, ख़िल्क़त, शफ़्क़त, शफ़्क़त, रिफ़्अ़त, रिफ़्अ़त।
4. अ़रबी के शब्द ज़ात, ज़ैनब, ज़र्ब, ज़र्फ़ में हर शब्द का पहला अक्षर अलग है परंतु ऐसे सभी अक्षरों के लिये केवल ज़ लिखेंगे। इसी प्रकार तमीज़ और तारिक़ विभिन्न अक्षरों से आरंभ होते हैं परंतु दोनों के लिये त प्रयोग करेंगे।, सलाम, सवाब, सलीब अलग–अलग अक्षरों से आरंभ होते है परंतु इन सब को स से लिखेंगे।

इसी प्रकार, फ़क़ीर, क़लम, ख़ुदा, ग़लत में बिन्दी वाले फ़, क़, ख़, ग़ प्रयोग करेंगे। ह़म्द और मुह़म्मद जैसे शब्दों में बिन्दी वाला ह़ लिखेंगे, औ़रत, आ़लम अ़मल जैसे शब्दों में बिन्दी वाले अ़ लिखेंगे परंतु इल्म, उलमा, ईद, ऊद, ऐब में बिन्दी वाला अ़ नहीं लाएंगे। अ़ साकिन यदि इस्लामिक परिभाषा वाले शब्द में है या अल्ला तआ़ला का गुण वाला नाम है तो बिन्दी वाला अ़ अवश्य प्रयोग करेंगे जैसे रुकूअ़ , ख़ुशूअ़, अ़ब्दुलवासिअ़, अ़ब्दुन्नाफ़िअ़, साधारण शब्दों में बिन्दी वाला अ़ न लिखेंगे जैसे बाद, वादा।

जिस शब्द के अन्त में अ़ साकिन आएगा और उससे पहले वाला अक्षर स्वर की मात्रा के साथ होगा उस अ़ को गिरा देंगे जैसे शुरू, राबे।

5. उर्दू के ज़ेर वाले हम्ज़ा को इ से लिखेंगे य से नहीं जैसे काइम, दाइम, जाइज़ राइज, फाइज़ आदि।
6. फ़ार्सी तरकीब में हाए मुख्तफ़ी पर जब इज़ाफ़त लाएंगे तो उसे दो डेशों के बीच–ए–से प्रकट करेंगे, जैसे :– बन्द–ए–ख़ुदा, कुर–ए–ज़मीन, परंतु दूसरे अक्षरों को ज़ेर देने के लिये ए की मात्रा लगायेंगे जैसे तूफ़ाने नूह, फ़ज्ले खुदाबन्दी जबकि शुद्ध तूफ़ाने नूह़ और फ़ज़्ले ख़ुदाबन्दी हैं। यह सारी बातें वही व्यक्ति समझ सकता है जो भली भांति उर्दू जानता है।

◆ ◆ ◆

कामयाब निकाह

(शुभ विवाह)

अब्दुल करीम पारिख, नागपुर

कामयाब निकाह वह है जहाँ शरीअत की सीमाओं का उलंघन न किया गया हो। खुशी–खुशी सब काम पूरी सादगी से हुआ, दुल्हन घर आई, उसके माँ–बाप पर तिलक का कोई बेजा बोझ न पड़ा, हँसी खुशी हर छोटे–बड़े ने नई दुल्हन का स्वागत किया। आने वाली ने अपनी सास और ससुर को माँ–बाप की जगह समझा, पति को अपना सरदार माना।

दूसरी तरफ दूल्हा ने इस दुल्हन को पाकर अपना बक़िया आधा ईमान पूरा कर लिया। जीवन बन्धन से जुड़ा इस जीवन साथी का पति अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में लग गया। दुल्हन ने नन्द और देवर को अपनी बहन भाई माना। घर के काम काज को अपने सर लिया। अगर कम आमदनी वाला घराना है तो धोबी और दर्ज़ी के घर जाने वाली रक़म को रोक लिया। घरेलू खर्च में सुधार और किफ़ायत से बचत भी अच्छी खासी कर ली।

फिर एक मुस्लिम औरत अपने कर्त्तव्य निर्वाह में नमाज़ व तिलावत कुर्आन मजीद से खुदा की बरकत की प्राप्ति का कारण बनी। दुल्हन आते ही घर में बड़े सलीक़े (सुव्यवस्था) से रख रखाव होने लगा। पति जब घर आये मुस्करा कर उनका स्वागत किया, हर तरह का बनाव सिंगार केवल अपने पति के लिए हो ताकि शौहर को दुनिया में केवल अपनी दुल्हन ही सुन्दर और सुधर मालूम हो। बच्चों के पालन पोषण और शिक्षा–दीक्षा में वह सलीका कि मुहल्ले पड़ोस में घर के बच्चे मिसाली बच्चे कहे जाने लगे।

शौहर के घर आने पर कोई शिकायत (परिवाद) उसकी माँ बहन के बारे में नहीं। मुहल्ला पड़ोस में किसी से भी लड़ाई–झगड़ा नहीं किया। नये माँ बाप और नये भाई बहन इस दुल्हन पर ऐसे फ़िदा कि मैके चली जाये तो नया घर सूना और सुसराल आ जाये तो पुराने घर के लोग दीदार (दर्शन) को तरस जायें।

अच्छा घर वह है जहाँ हर समय कोई न कोई काम में व्यस्त हो या फिर कोई तिलावत कर रहा हो, कोई अच्छी किताबें पढ़े। यह सब काम पति–पत्नी और घर के सारे लोग एक दूसरे की मदद से जारी रखे हुए हों। नया घर बसा कर दूसरे रिश्तेदारों से निर्वाह और बनाव को बड़े पैमाने पर क़ायम कर दिया गया हो। ख़ैर ख़ैरात (दान पुण्य) अल्लाह की रज़ा और कर्म का फल आख़िरत में पाने की नीयत से जारी हों। गरीबों को खाने खिलाया जायें, चाहे ग़रीब घर हो, गरीबी हो तो दाल सालन में कुछ पानी जियादा डाल दें मगर खुदा की राह में कुछ न कुछ ग़रीब और बेसहारा लोगों को दिये जायें। तौबः इस्तिग़फ़ार (माफ़ी तलाफ़ी) अल्लाह से लगाव यह सब काम हों तो चुग़ली और ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) का मौक़ा ही न आये। घर को नुबूवत की ज्योति से ऐसा जगमगा दिया जाये कि अन्धियारियाँ लापता हों। यह तमाम बातें निकाह की कामयाबी का सबूत हैं।

एक अच्छे खानदान की बेहतरीन ख़ूबी यह है कि लोगों का आपस में मेल मिलाप हो, घर के लोगों के बीच प्रेम और चाहत हो, एक दूसरे के सुख–दुख को जाने कोई भी पत्थर दिल न बने, न कोई किसी पर जियादती करे।

इस्लाम अपने मानने वालों को सीसा पिलाई दीवार की तरह देखना चाहता है। इस मज़बूत दीवार की आधार शिला वह ख़ानदान है जो औरत मर्द मिलकर बनाते हैं। परिवार की ख्याति स्त्री पुरुष के संबंध खराब होने से बिखर जाती है। शैतान के लिए इससे बढ़कर कोई कामयाबी नहीं हो सकती कि मियाँ–बीवी में रंजिश पैदा कर दे, और बस बाक़ी तमाम काम की अरथी, मियाँ–बीवी खुद ही निकाल देते हैं, लेकिन कामयाब निकाह वाले घर के लोग शैतान को इस मोर्चे पर भी दफ़न कर के रहते हैं। ऐसी कामयाब घरेलू ज़िन्दगी का नुस्खा कुर्आन में यों बयान किया गया है :–

अनुवाद **"अल्लाह की नाफ़रमानी (अवज्ञा) से बचो, जिसके नाम पर सवाल करते हो, और नातेदारों के संबंधों को बिगाड़ने से बचते रहा करो।"**

नातेदारी में आदमी के लिए पूरा आदमी बन जाने के बाद उसकी बीवी बड़ा मक़ाम रखती है। आदमी को चाहिए कि हर प्रकार से अपनी पत्नी के लिए दीन और दुनिया की खुशियों का ख़्याल रखे। हदीस शरीफ़ में अच्छा आदमी उसी को कहा गया है जो अपने परिवार और बाल–बच्चों के लिए ख़ैर ही ख़ैर हो।

पति के लिए ज़रूरी है कि अपनी पत्नी के बनाव सिंगार का ज़ेवर खुद ही

बनकर दिखाये, उसकी दिलचस्पी में हाथ बटाये घरेलू काम में जितना हो सके सहयोग करे। बीवी को नौकर चाकर की तरह नहीं बल्कि घर की मालकिन और खुद अपना आधा ईमान माने।

घर में रहें तो खुद भी अपने आप को अच्छे कपड़ों में पत्नी का ध्यान आकृष्ट कर लें। जो लोग बाहर तो खूब बन संवर कर जाते हैं और घर में फटी लुंगियाँ और मैली बनियान पहन कर रहते हैं उन्हें कामयाब वैवाहिक जीवन के लिए अपने कपड़ों का ख़्याल ज़रूर रखना चाहिए। यह कोई अच्छी बात नहीं है कि बीवी जब बाहर जाये तो बेहतरीन लिबास में जाये और घर में सरझाड़, मुँह फाड़ बैठी हो। ऐसी दुल्हन कामयाब निकाह का आनन्द प्राप्त नहीं कर सकती। इसी प्रकार जो भाई अपनी मित्र मण्डली में खूब बन संवर कर जायें और घर में अपनी पत्नी के आकर्षण से लापरवाह हों वह भी इस खुशी से वंचित रहेंगे।

बाज़ार, सिनेमा और नाटक में दिखने वाली औरतें और मर्द अपने सिंगार में बाज़ारी हद तक संवरते हैं। घरेलू ज़िन्दगी वाले जब इन दायरों में अपने जोड़े की कल्पना करते हैं तो उन्हें बड़ी निराशा होती है। इसका इलाज यह है कि हम घरेलू माहौल को साफ सुथरा और पाकीज़ः रखें। फिर देखिये बाज़ार की ज़ीनत (सौन्दर्य) और घर की ज़ीनत का मुकाबला हो तो इन्शा अल्लाह हर मोमिन के घर में सुकून होगा। सच्चा खिंचाव और लगाव पवित्रता पाकीज़गी, सुथराई और सलीक़ामन्दी में पाया जाता है। मिल्लत के भाई बहन इधर ध्यान दें तो इंशा अल्लाह घर को जन्नत बनाते देर नहीं लगेगी।

अनुवादक – मो० हसन अंसारी

●●●

आसेब और झाड़ फूँक

अचानक लग जाने वाले रोगों में अन्धविश्वासी लोग जिन्न या भूत का प्रभाव समझ बैठते हैं और उसे आसेब का नाम देते हैं, लेकिन आम तौर से न वह आसेब होता है न जिन्न न भूत, वह तो कोई रोग ही होता है, ऐसी दशा में कुछ रोगी किसी आमिल, हाफ़िज़ या ओझा की झाड़ फूँक से ठीक हो जाते हैं तो लोग कहते हैं कि अगर रोग होता तो झाड़ फूँक से कैसे जाता ? वास्तव मं हल्के रोगों में जब ओझा से झाड़ फूक करवाई जाती है, तो मन पहले ही से तैयार हो जाता है कि अभी आसेब (जिन्न या भूत का प्रभाव) दूर हो जाएगा और अभी रोगी अच्छा हो जाएगा, इस प्रकार रोगी पर मनोविज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, और रोगी की प्रकृति रोग को भगा देती है तथा रोगी अच्छा हो जाता है, वह झाड़ फूँक की नहीं प्रकृति की भूमिका होती है, परंतु झाड़ फूँक के बिना ऐसे साधारण लोगों की प्रकृति काम नहीं कर सकती।

कभी वास्तविक आसेब होता है, जो जाइज़ झाड़ फूँक से ठीक हो जाता है, कभी झाड़ फूँक से अल्लाह तआला अपनी कृपा से रोग भी दूर कर देते हैं अतः जाइज़ झाड़ फूँक से लाभ उठाना चाहिये, इस की हैसियत दुआ जैसी होती है, और कभी झाड़ फूँक से शैतान भागने पर मजबूर हो जाता है जैसे आयतलकुर्सी वग़ैरह पढ़कर फूँक डालने पर जबकि पढ़ने और फूँक डालने वाला संयमी हो।

नाजाइज़ झाड़ फूँक से जो कभी लाभ नज़र आ जाता है, तो या तो वह साधारण रोग होता है जो रोगी की प्रकृति से दूर हो जाता है और कभी वास्तव में किसी पापी जिन्न या शैतान का प्रभाव होता है तो वह नाज़ाइज झाड़ फूँक से इसलिये हट जाता है ताकि नाजाइज़ झाड़ फूँक से इन्सान की श्रद्धा बाकी रहे और वह इस पाप से निकल न पाये। मैंने स्वयं झाड़ फूँक करने वाले से "दुहाई लोना चम्मारी की" कहते सुना है, इसी प्रकार और भी बहुत से शिर्क वाले कल्मे और मंत्र पढ़कर झाड़ते हैं जिनकी इस्लाम में गुँजाइश नहीं।

❑❑❑

बीते हुए 38 वर्षों से प्रकाशित होने वाला प्रिय उर्दू मासिक पत्र

नदवतुल उलमा का द्विभाषी,

अर्धमासिक "तामीरे हयात" लखनऊ।

वैज्ञानिक, साहित्यिक, धार्मिक लेख, वर्तमान स्थिति की समीक्षा तथा मार्गदर्शन।

वार्षिक अनुदान रु०. 150/- मात्र

मैनेजर दफ़्तर तामीरे हयात पो०बा० नं० 93

नदवतुल उलमा, लखनऊ

सूदख़ोरी

मु० अमरुल्लाह सलफ़ी

सूद एक बहुत ही बड़ी बला है। यह वह बुराई है जिस के अन्दर संसार की अधिकतर कौमें व्यस्त और समाज किसी न किसी प्रकार सम्मिलित है और नबी–ए–करीम मुहम्मद (सल्ल०) के इस कथन के अनुकूल है :–

(अनुवाद) "लोगों पर एक ऐसा युग आएगा कि सूद खाने लगेंगे। आप (सल्ल०) से पूछा गया क्या सब लोग खाने लगेंगे तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया इनमें से जो नहीं खाएगा तो कम से कम उस की धूल से अवश्य प्रभावित होगा"

(अबूदाऊद)

सूद वास्तव में उस पूंजीवाद की अर्थ व्यवस्था की पैदावार है जिसकी बुन्याद इस सिद्धांत पर निर्भर है कि हर व्यक्ति अपनी कमाई का स्वयं मालिक है, उसकी कमाई में दूसरे का कोई अधिकार नहीं है। अपने धन और पूंजी को बढ़ाने में हर व्यक्ति को यह अधिकार प्राप्त है कि समाज के लाभ की परवाह किये बिना जो भी उपाय उचित समझे उसे इख़्तियार करे। पूंजीवाद की यह व्यवस्था लोगों में रुपया जमा करने का लालच पैदा करती है क्योंकि इसके सभी विभिन्न आर्थिक उपायों में एक ही उद्देश्य काम करता है कि रुपये से और अधिक रुपया पैदा किया जाए चाहे वह व्यापारिक लेनदेन से या सूद के द्वारा। अभिप्राय यह है कि वह ऐसी ख़राब अर्थव्यवस्था है कि उसकी चिंगारी और बिगाड़ ने पूरे मनुष्य समाज को नैतिक, रूहानी, (आध्यात्मिक) सांस्कृतिक, और सामूहिक आर्थिक तबाही व बरबादी के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है जिससे छुटकारा पाने का कोई मार्ग दिखाई नहीं दे रहा है। इस घातक बीमारी से छुटकारा पाने का उपाय यदि किसी अर्थ व्यवस्था में है तो वह केवल इस्लामी अर्थ व्यवस्था है जिसे आज के तथाकथित उन्नति प्राप्त संसार ने बेकार समझ रखा है जबकि वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है।

सूद
लोगों के अन्दर
कंजूसी, स्वार्थ, निंदयता,
क्रूरता, धन से प्रेम करने का
दुर्गुण पैदा करता है। वह कौम के
सदस्यों के बीच सहानुभूति और
आपसी सहयोग के संबंध को
काटता है।

इस्लामी अर्थव्यवस्था में व्यक्ति को धन कमाने की अनुमति तो है परंतु इस प्रकार कि सामूहिक हित को किसी प्रकार की कोई हानि न हो। इस अर्थ व्यवस्था में वह सभी तरीक़े अनुचित हैं जिन में एक व्यक्ति का लाभ और दूसरे व्यक्ति को हानि हो। उचित ढंग से धन कमाया जाए। उसे अपने पास इकट्ठा करके न रखा जाए। बल्कि उसे अल्लाह की राह में ख़र्च किया जाए। मां–बाप, संबंधियों, यतीमों, अनाथों, निर्धनों, पड़ोसियों, मिलने–जुलने वाले मित्रों, यात्रियों और सेवक, सेविकाओं के साथ उपकार किया जाए।

इस्लामी अर्थ व्यवस्था में इस बात की तनिक भी छूट नहीं है कि पूंजी जमा करके उसको सूद पर उठाया जाए क्योंकि सूद से पूंजी घट जाती है, बरकत समाप्त हो जाती है। "पूंजी के अन्दर वृद्धि नेक कामों में ख़र्च करने से होती है"

(अलबकरः 38)

सूद लोगों के अन्दर कंजूसी, स्वार्थ, निंदयता, क्रूरता, धन से प्रेम करने का दुर्गुण पैदा करता है। वह क़ौम के सदस्यों के बीच सहानुभूति और आपसी सहयोग के संबंध को काटता है। वह लोगों में धन जोड़ने और उसे केवल अपने लाभ के लिए व्यय करने की इच्छा दिलों में पैदा करता है। वह समाज में पूंजी के स्वतंत्र चक्र को रोक कर उसकी दिशा निर्धनों से धनी लोगों की ओर फेर देता है। समाज में मुट्ठी भर लोग पूंजीपति और साहूकार हो जाते हैं और उसके बाक़ी लोग निर्धन, रोज़ी–रोटी के मुहताज हो जाते हैं। अन्ततः यह चीज़ पूरे समाज और अर्थव्यवस्था के लिए तबाही व बरबादी का कारण बन जाती है। यही कारण है कि कुर्आन करीम में कई स्थानों पर विभिन्न शैली और हावभाव में सूद के हराम होने संबंधी आयतें उतरी हैं और जितनी सख़्ती के साथ सूद के लेन–देन की मनाही की गई है और जितने कठोर शब्द इसके हराम होने पर प्रयोग किये गये हैं उतने कठोर शब्द किसी दूसरे गुनाह के बारे में नहीं आए हैं। अल्लाहतआला का कथन है :–

(अनुवाद) "मुसलमानो अल्लाह से डरते रहो और बकाया सूद को छोड़ दो, यदि तुम मोमिन हो, और यदि तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से जंग का एलान स्वीकार करो और यदि बाज़ आओं तो तुम्हारे असल

माल तुम को मिल जाएंगे। न अत्याचार करो और न तुम पर अत्याचार होगा।"

(अलबक़रः 279)

सूद खाने की निन्दा में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भी बहुत सी हदीसें हैं। हज़रत अबूहुरैरः (रजि०) फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्ल० ने सूद खाने को घातक वस्तुओं में गिना है और उम्मत (अनुयायियों) को इससे बचने के सख़्त ताकीद की है। आपने फ़रमाया है:–

(अनुवाद) "सात घातक चीज़ों से बचते रहो। आदरणीय सहाबा ने पूछा वह क्या हैं तो आपने फ़रमाया (1) अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) किसी को नाहक़ क़त्ल करना (4) सूद खाना (5) यतीम का माल खाना (6) जिहाद के मैदान से पीठ फेर कर भागना (7) भोली–भाली पवित्र मोमिन औरतों पर आरोप लगाना।"

इस्लामी शरीअ़त (नियम) की निगाह में केवल सूद खाने वाला ही अपराधी नहीं है बल्कि सूद खाने वाला, खिलाने वाला, उसको लिखने वाला और उसकी गवाही देने वाला सब ही अपराधी हैं और गुनाह में बराबर के शरीक हैं और इन सब पर अल्लाह के रसूल की ओर से लअ़नत (फ़िटकार) है, जैसा कि मुस्लिम की हदीस में आया है।

सूद की इन्हीं बुराइयों के कारण आपने इसको रोकने की अति अधिक चेष्टा की। आपने नजरान के ईसाईयों से जो संधि की उसमें साफ़ तौर से लिख दिया कि यदि तुम सूदी कारोबार करोगे तो तुमसे हमारी संधि समाप्त हो जाएगी और फिर तुम हम से युद्ध के लिए तैयार रहो।

बनूमुग़ीरा के सूद खाने वाले अरब में प्रसिद्ध थे। मक्का की विजय के बाद आप (सल्ल०) ने उनकी तमाम सूदी धनराशि निरस्त कर दी और अपने कर्मचारियों को ख़बर दी कि यदि बाज़ न आएं तो उनसे जंग करो। स्वयं हुजूर (सल्ल०) के चचा हज़रत अब्बास रज़ि० अरब के सबसे बड़े सूदख़ोर थे। आख़िरी हज के अवसर पर आप (सल्ल०) ने एलान फ़रमाया कि जाहिलियत के तमाम सूद निरस्त किये जाते हैं और सबसे पहले मैं अपने चचा अब्बास का सूद निरस्त करता हूँ।

सूद खाने और सूदी कारोबार के विरुद्ध इस्लाम का इतना कठोर क़दम इसलिए भी है कि अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) ने मुहताजों के साथ सहायता करने, दुखियों के साथ सहानुभूति और निर्धनों को बिना सूद ऋण देने का आदेश दिया है। सूद ख़ोरी ज़कात और ख़ैरात की रुह के विरुद्ध है क्यों कि सदक़ा व ख़ैरात इंसान के अन्दर क्षमा और हमदर्दी और एक दूसरे के साथ सहयोग करने का जज़्बा पैदा करता है जबकि सूद ख़ोरी से स्वार्थ की भावना, कंजूसी, लालच पैदा होती है। इंसानी शराफ़त और इस्लामी आचरण का विघटन होता है यही कारण है कि अल्लाह तआ़ला ने सभी धर्मों में सूद को हराम क़रार दिया:–

(अनुवाद) " और यहूदियों को सूद लेने के कारण, यद्यपि उनको इससे मना किया गया था, और लोगों का माल अनुचित ढंग से खाने के कारण से हमने उन पर बहुत सी पवित्र चीज़ें जो उनको पहले से हलाल थीं, हराम कर दीं।"

(अन्निसा)

अल्लामा सैयद कुतुबशहीद रह० ने अपनी तफ़्सीर " ज़िजालुल कुर्आन" के अन्दर "आयते रिबा" के अंतर्गत इसके नैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विश्लेषण पर बहस करते हुए लिखा है "सूदी कारोबार इंसानी समाज के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है और कठिन आज़माइश है। इसके हानिकारक प्रभाव ईमान, आचरण और जीवन पर ही नहीं पड़ते बल्कि यह नासूर उसकी पूरी ज़िन्दगी और सामाजिक, आर्थिक और अमली सरगर्मी में विनाशकारी मवाद पैदा करता है। सूद ख़ोरी सबसे बुरा तरीक़ा है जिससे आदमीयत, इंसानी शराफ़त और उसके आचरण सब नष्ट हो जाते हैं। सूदी लेन देन से व्यक्ति और समुदाय की आत्मा और उसकी चालढाल सब कुछ मुर्दा हो जाती है। चाल चलन अलग बिगड़ते हैं और समाज में भाई भाई से कट कर रह जाता है। उसके अन्दर आपसी सहयोग और मदद का जज़्बा ही नष्ट नहीं होता बल्कि समाज पर लालच और स्वार्थ की स्पिरिट हावी हो जाती है और समाज की दीवारें हिल जाती हैं।

इस्लामी शिक्षा से सूद को हराम होना और उसका घातक होना सिद्ध होता है और यह मालूम होता है कि इस्लाम सूदी व्यवस्था और इस प्रकार के कारोबार का कितनी कठोरता से विरोध करता है। आश्चर्य यह है कि आज संसार की बहुत सी क़ौमें सूदी कारोबार को अपनी आर्थिक उन्नति की सीढ़ी समझती हैं। हमारे मुस्लिम समाज का हाल भी दूसरों से कुछ भिन्न नहीं वह भी इस मैदान में एक दूसरे से बाज़ी ले जाने में रात दिन प्रयत्नशील हैं। हमारे समाज में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो नाम मात्र धार्मिक शिक्षा का ज्ञान रखते हैं, अपने को दीन का रखवाला और ठेकेदार समझते हैं, सूद के हराम होने और इससे संबंधित कुर्आन की पवित्र आयतों से भी परिचित हैं। परंतु अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जंग करने पर आमादा हैं। सूदी कारोबार खुल्लम खुल्ला करते हैं न उन्हें अल्लाह का भय है और न समाज के सामने लज्जित होने का डर है। अल्लाह तआ़ला पूरी इंसानियत और मुख्यतः मुस्लिम समाज को इस सबसे बुरी लअ़नत से बचाए। आमीन !

□□□

महब्बत का निराला अन्दाज़

मौलाना मु० ग़यासुल इस्लाम

बद्र का मैदान है सत्य और असत्य का सीधा टकराव है। एक तरफ़ कुफ़्फ़ार (इन्कारियों) का लश्कर सफ़आरा (पंक्तिबद्ध) है, और दूसरी ओर इस्लाम के मुजाहिदों की सफ़ें (पंक्तियाँ) ठीक की जा रही हैं। नबी सल्ल० ने अभी–अभी ख़ुदा से विजय की दुआ मांगी है और ख़ुद सफ़ों को दुरूस्त कर रहे हैं दस्ते मुबारक (मुबारक हाथ) में एक तीर है जिस से इशारा फ़रमाते जा रहे हैं। महान सेनापति (रसूलल्लाह सल्ल०) प्रेम भाव से सुवाद (रज़ि०) के पेट पर एक हल्की सी ठोकर

लगा कर कहते हैं ऐ सुवाद ज़रा पीछे हट जाओ।

महब्बत अवसर तलाश करती रहती है। बड़ा शुभ अवसर हाथ आया था। इस से भरपूर फ़ाइदा उठाते हुए सुवाद रज़ि० अर्ज़ करते हैं:–

या रसूलल्लाह सल्ल० आपने मुझे दुखी कर दिया हालांकि आपको अल्लाह ने सत्य और न्याय के साथ भेजा है। मेरा बदला दीजिये।

वक़्त की नज़ाकत देखिये। जंग का खूनी बादल बरस ने ही वाला है मगर महब्बत की ज़िद और इंसाफ़ का तक़ाज़ा सिर उठाए सामने खड़ा है। कोई और होता तो झुंझला उठता, डांट पिला दी होती कि यह भी कोई समय है। सामने दुश्मन तैयार खड़ा है और तुम्हें बदले की पड़ी है। परंतु कुर्बान जाइये न्याय प्रिय नबी सल्ल० पर कि न ख़फ़ा होते हैं और न बुरा मानते हैं।

शिकमे मुबारक (मुबारक पेट) से कपड़ा हटा कर फ़रमाते हैं "सुवाद (रज़ि०) अपना बदला ले लो"।

इधर भी बदले की इच्छा किस को थी। यह तो एक बहाना था। सुवाद (रज़ि०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की इंसाफ़ पसन्दी से परिचित थे जिस की उनको भरपूर आशा थी। वही बात हुई। महब्बत झूम उठती है। अनोखी इच्छा और लतीफ़ (मृदुल) अरमान जो उनके दिल में मचल रहा था, उनको पूरा करने का अवसर मिल जाता है। दौड़ कर शिकमे मुबारक से हज़रत सुवाद (रज़ि०) चिमट जाते है, और दीवाना वार चूमने लगते हैं, आँखें नम हैं और ज़बान पर यह शब्द हैं – ऐ रसूलुल्लाह शायद यह आख़िरी मुलाक़ात हो, ख़ुदा जाने फिर मुलाक़ात हो या न हो। मैंने अवसर पाकर यह बहाना बनाया था। क्षमा कीजिये।

हुज़ूर सल्ल० प्रसन्न हुए और उनको ढेर सी दुआएं दीं। क्या दुन्या इस इन्साफ़ पसन्दी की मिसाल पेश कर सकेगी ? और क्या आलम में महब्बत के इस निराले अन्दाज़ की नज़ीर मिल सकेगी ?

हुदैबिया का स्थान है जहां सुल्ह की शर्तें तय हो रही हैं। मुसलमान उमरा और काबः के तवाफ़ करने के लिए जाना चाहते थे परंतु काफ़िरों (इन्कारियों) ने ख़ुदा के नेक बन्दों को ख़ुदा के घर तक जाने न दिया। लड़ने मरने पर आमादा हो गये। आख़िर बात सुल्ह की शर्तों पर आ गई। मक्का वालों का दूत सुहैल है और वही सुल्ह की शर्तों को तय करा रहा है। हुजूर फ़रमाते जाते हैं और हज़रत अली रजि० लिखते जाते है। पहले सुहैल ने बिसमिल्लाह पर आपत्ति जताई। उसकी आपत्ति को हुजूर सल्ल० ने स्वीकार कर लिया था। फिर जब यह लिखा जाने लगा यह वह समझौता है जिसको "रसूलल्लाह (सल्ल०)" ने तय किया है सुहैल अड़ गया और कहने लगा यदि हम आपको "रसूलल्लाह (सल्ल०)" मान लेते तो फिर झगड़ा ही क्या था। आप रसूलल्लाह (सल्ल०) की जगह अपना नाम और अपने पिता का नाम लिखये अर्थात् "मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह" (सल्ल०) हुज़ूर ने फ़रमाया यह भी मान लिया। हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया "रसूलल्लाह" को मिटा कर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिख दो।

हज़रत अ़ली (रज़ि०) रुक जाते हैं वह कैसे गवारा कर सकते हैं कि "रसुलल्लाह" के शब्द को मिटा दें या काट दें। महब्बत और शेफ़्तगी (मुग्धता) उभर आती है, दिल बेक़रार हो जाता है। अर्ज़ करते हैं या रसूलल्लाह यह हमसे नहीं हो सकता है। हम इसको नहीं मिटा सकते हैं। यह काम मेरे लिए बर्दाश्त के क़ाबिल नहीं है। महब्बत का यही तक़ाज़ा है। हुजूर सल्ल० को भी महब्बत की कारीगरी का अन्दाज़ा था। कहा बताओ वह शब्द कहां है।

आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद ही 'रसूलुल्लाह'' शब्द को मिटा कर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिख दिया। यूं तो आप पढ़े लिखे न थे परन्तु सम्भव है कि देखते–देखते अपने नाम के अक्षरों से परिचित हो गये हों या फिर हज़रत अली रजि० ही से लिखवाया हो। हुक्म की वजह से लिखने की निस्बत आप की तरफ़ कर दी गई हो।

बाह्य रूप में ऐसा लगता है कि हज़रत अली रजि० ने हुज़ूर सल्ल० के हुक्म को नहीं माना मगर कोई इसको नाफ़रमानी (अवज्ञा) कह सकता है ? महब्बत के भी कितने और कैसे–कैसे अन्दाज़ होते हैं ?

समय वही हुदैबिया की सुल्ह का है। प्रत्यक्ष में हालात निराशा जनक हैं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) की जगह मुहम्मद (सल्ल०) बिन अब्दुल्लाह लिखाया जाता है। उमरा और तवाफ़ के लिए आए थे, वापस लौटाया जा रहा है, शर्तें ऐसी तय पाई हैं जिनसे हार और पस्पाई टपकी पड़ती है। सहाबा रज़ि० दुखी और बेचैन हैं। हज़रत उमर रज़ि० अपने रंज व ग़म और जोश व बेचैनी को दबा नहीं सके। बेक़ाबू हो उठते हैं और हुज़ूर सल्ल० की सेवा में उपस्थित होकर अर्ज़ करते हैं या रसूलल्लाह क्या आप अल्लाह के बरहक़ नबी नहीं हैं ? हुज़ूर सल्ल० ने जवाब दिया क्यों नहीं ?

हज़रत उमर रज़ि० फिर पूछते हैं क्या हम हक़ (सत्य) पर और वह बातिल (असत्य) पर नहीं है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया बेशक फिर सवाल होता है फिर हम अपमान क्यों गवारा करें ? हज़रत उमर रज़ि० की बेताबी बढ़ती जा रही है। हुज़ूर सल्ल० जवाब देते हैं। मैं ख़ुदा का सच्चा नबी हूँ। मैं ख़ुदा के आदेश की अवहेलना नहीं कर सकता हूँ। वही मेरा पालन हार है। हज़रत उमर रज़ि० फिर उसी ख़्वाबे नबवी (नबी के स्वप्न) की ओर ध्यान दिलाते हुए पूछते हैं जिस स्वप्न के बाद आपने फ़रमाया था हम लोग उमरा कर रहे हैं। हज़रत उमर रज़ि० पूछते हैं:–

क्या आप सल्ल० ने नहीं फ़रमाया था कि हम बैतुल्लाह का (अल्लाह के घर का) तवाफ़ (परिक्रमा) कर रहें हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया मैंने तो यह नहीं कहा था कि इसी साल तवाफ़ करेंगे। तवाफ़ होगा इस साल न सही अगले साल ही सही।

हज़रत उमर रज़ि० शोकग्रस्त वापस हो गये। हज़रत अबूबक्र रज़ि० से वैसे ही सवालात किये। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने जवाब दिया, हुज़ूर सल्ल० जो अब कर रहे हैं ख़ुदा के हुक्म से कर रहे हैं और हमें दिल व जान से स्वीकार कर लेना चाहिये।

हज़रत उमर रज़ि० की बेचैनी व परेशानी कोई सरकशी (विद्रोह) नहीं थी बल्कि अथाह प्रेम का नतीजा था। इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्मान का प्रर्दशन था फिर भी बाद में हज़रत उमर रज़ि० को बड़ा अफ़सोस हुआ कि मैंने ज़ज़्बात के जोश में नबी के सम्मान का ख़ियाल नहीं रखा। महब्बत लाख जोश मारे होश तो नहीं खोना चाहिये। चुनानचः बाद में हज़रत उमर रज़ि० अक्सर नमाज़, रोज़ा, ख़ैरात और गुलामों की आज़ादी के ज़रिये इसकी तलाफ़ी (क्षतिपूर्ति) की कोशिश करते रहे।

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूबक्र रजि० से पूछा अबूबक्र तुम्हारी नज़र में सबसे प्यारी क्या चीज़ है ? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने जो जवाब दिया वह हर उम्मती (अनुयायी) के लिए प्रेम और अभिलाषा का आदर्श है। वह अदब और महब्बत से परिपूर्ण होकर अर्ज़ करते हैं– या रसूलल्लाह सल्ल० मुझे तीन चीज़े प्यारी हैं:–

1. आप सल्ल० पर अपना माल ख़र्च करना।
2. आप सल्ल० के साथ–साथ रहना और
3. आप सल्ल० को देखते रहना।

यह जवाब उस आशिक़े रसूल का है जो वास्तव में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत करते थे और आज हम मुसलमानों की नज़र व निगाह किस चीज़ पर है उसका अन्दाज़ा हर आदमी कर सकता है–

क़दम सू–ए–मंज़िल, नज़र सू–ए–दुन्या।
कहां जा रहे हैं किधर देखते हैं।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

❑❑❑

झूठ पर जहन्नम का अ़ज़ाब

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा गया कि वह क्या कर्म (अ़मल) है जिससे आदमी जहन्नम में जाएगा? आपने अवगत कराया कि वह कर्म झूठ बोलना है (मुसनद अहमद)

मिअ़राज (मेराज) की रात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक शख़्स को देखा के उसकी दोनों बाहें चीर दी जाती हैं, वह फिर ठीक हो जाती हैं, फिर चीर दी जाती हैं, इसी प्रकार यह कार्य क़ियामत तक होता रहेगा। आपने जिब्रील अमीन से पूछा कि यह कौन है? तो उन्होंने बताया कि यह झूठ बोलने वाला है।

आपकी समस्याएँ और उनका हल

- मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्र० 1. आज कल मार्डन तरीके के पेशाब खाने बनाए जाते हैं जिनमें आदमी को खड़े होकर ही पेशाब करना पड़ता है। यही हाल बैतुल खला का है कि कुर्सी पर बैठने की तरह आदमी बैठे ! तो क्या ऐसा तरीक़ा बेहतर है।

उ० 1. रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने खड़े होकर पेशाब करने से मना फ़रमाया है (जिसका ज़िक्र तिर्मिज़ी शरीफ के **"बाबुन्नहि अनिल बौलि काइमन"** में किया गया है) इसलिए यह तरीक़ा सुन्नत के खिलाफ है हाँ किसी शरअी उज़्र की बिना पर खड़े होकर पेशाब करने की इजाज़त है।

प्र० 2. बुजुर्गों से सुना है कि सुअर की गाली देने से चालीस दिन का रिज़्क उड़ जाता है। इस्लाम में यह बात कहाँ तक सही है।

उ० 2. किसी को किसी तरह की गाली देना तो दुरुस्त नहीं बाक़ी रिज्क उड़ जाने की बात बेबुन्याद है।

प्र० 3. मशहूर है कि गाली देने से चालीस रोज़ तक ईमान से दूर हो जाता है और उस ज़माने में मर जाए तो बेईमान मरता है।

उ० 3. गाली देने का तो गुनाह होगा लेकिन चालीस दिन और बेईमान मरने की बात बे बुन्याद है।

प्र० 4. जिहालत की वजह से हमारे कुछ मुसलमान घरानों में लोग इन अक़ीदों पर यक़ीन रखते हैं जैसे– कहते है कि गाय अपनी सींग पर दुन्या को उठाए हुए है इसी तरह बच्चे की पैदाइश से पहले कोई कपड़ा उस बच्चे का नहीं सिला जाता इसी तरह बच्चे के कपड़े किसी को नहीं दिए जाते कि कहीं बाँझ औरत बच्चे को जादू करके नुकसान न पहुँचाए, बच्चे को बारह बजे के वक्त पालने या झूले में नहीं लिटाया जाता, और न बच्चे को ज़वाल के वक्त दूध पिलाया जाता है।

मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या इस्लाम में इन बातों का कोई वजूद है। शयद आपके जवाब से लाखों घरों की जिहालत दूर हो जाए और लोग अपना ईमान मज़बूत कर लें।

उ० 4. आपने जो बातें लिखी हैं वह हक़ीकत में वहम परस्ती की हैं जिनका इस्लाम से कोई संबंध नहीं।

प्र० 5. औलाद के लिए माँ के दूध बख्शने की जो रिवायत हम एक ज़माने से सुनते आए हैं, कुर्आन व हदीस की रौशनी में उस की क्या अहमियत है। हालांकि हकीक़त यह है कि आजकल मांए औलाद की परवरिश डिब्बों के दूध पर करती हैं वह किस तरह दूध बख्शेंगी ?

उ० 5. दूध बख्शने की रिवायत तो शरीअत में कहीं नहीं है। लेकिन इसका मतलब यह हो सकता है कि माँ का हक़ इतना बड़ा है कि आदमी उसको अदा नहीं कर सकता सिवाय यह कि माँ अपना हक़ माफ कर दे।

प्र० 6. हमारे गाँव में मशहूर है कि अगर किसी के घर में लड़ाई करवानी हो तो उस घर में साही (कन्फज़) का काँटा रख दो तो जब तक वह काँटा उस घर में रहेगा घर वाले लड़ते रहेंगे ?

उ० 6. यह वहम परस्ती है जिसका इस्लाम से कोई संबंध नहीं है और यह बिल्कुल बकवास है।

प्र० 7. हमारे यहाँ इसी तरह बिल्ली के रोने की आवाज़ सुन कर लोग कहते है भगाओ कहीं कोई मरेगा। तो क्या इसकी कोई हक़ीक़त है।

उ० 7. इसकी कोई हक़ीक़त नहीं बकवास और बेबुन्याद बात है जिसका दीने इस्लाम से कोई वास्ता नहीं।

प्र० 8. कुछ लोग हमारे यहाँ समझते है कि मर्द की बाई आँख और औरत की दाई आँख फड़कने से कोई मुसीबत या रंज होता है इसी तरह मर्द की दायी और औरत की बाई आँख फड़कने से कोई खुशी पेश आती है। क्या दीन में यह सब बातें सही है।

उ० 8. यह सब बातें गलत है जिन का दीन से कोई वास्ता नहीं।

प्र० 9. इसी तरह कुछ लोग सुबह के वक्त किसी जगह या जानवर जैसे साँप, सुअर, बन्दर आदि के नाम लेने को मन्हूस समझते हैं क्या हकीकत में नाम न लेना चाहिए।

उ० 9. किसी का किसी भी वक्त नाम लिया जा सकता है मन्हूस कुछ भी नहीं यह सब बाते बकवास है।

प्र०10. इसी तरह अकसर लोग कहते हैं कि हथेली में खारिश (खुजाने) से माल मिलता है और तलवे में खारिश (खुजाने) से माल मिलता है और तलवे में खारिश होने से

या जूते पर जूता चढ़ने से सफर पेश आता है यह सब क्या है।

उ०10. यह सब बाते वहम परस्ती की है जिन का दीन से कोई संबंध नहीं यह सब बाते बकवास हैं।

प्र०11. कुछ औरते हमारे यहाँ की मकान की मुंडेर पर कौआ के बोलने से किसी मेहमान के आने का शगून लेती है यह कैसा है।

उ०12. इस तरह की बाते गुनाह की है जिसकी दीन में कोई हक़ीक़त नहीं।

प्र०13. लोगों में यह बहुत मशहूर है कि अगर मुर्गी अज़ान दे तो उसे तुरन्त जब्ह कर लो क्योंकि उससे वबा फैलती है यह क्या है।

उ०13. यह भी गलत बात है जिसका शरीअत से कोई वास्ता नहीं।

प्र०14. कुछ लोग गुसल खाना (Bathroom, Toilet) और इस्तिंजा खाना में बात करने को ना जाइज़ समझते हैं क्या हक़ीकत में इस्तिंजा खाना में बात करना ना जाइज़ है।

उ०14. गुसलखाना या इस्तिंजा खाना में बात करना मकरूह है।

प्र०15. आम लोगों में मशहूर है कि अस्र और मग्रिब के दर्मियान खाना पीना बुरा है और उसकी वजह यह बताई जाती है कि मरते वक्त यही वक्त नज़र आता है इसलिए अगर खाने पीने की आदत न होगी तो इन्कार कर देगा क्या यह सही है।

उ०15. यह बिल्कुल ग़लत है इसकी शरीअत में कोई हक़ीकत नहीं।

प्र०16. लोगों में मशहूर है कि रात के वक्त पेड़ न हिलाए इसलिए कि वह सोता है और बेचैन हो जाता है।

उ०16. हर मशहूर बात सही नहीं होती इसी तरह यह भी बेबुन्याद बात है।

प्र०17. कुछ लोग कहते है कि झाडू जिसे लग जाए उसका जिस्म सूख जाता है इसकी कया हक़ीक़त है।

उ०17. इसकी कोई हक़ीकत नहीं।

प्र०18. अगर कोई व्यक्ति मकान खरीद कर किराए पर देता है। तो इस तरह से उस मकान का किराया सूद होगा या नहीं। जो सामान हम शादियों में किराए पर लेते या देते हैं जैसे– शामियाना कुर्सी का सामान क्या वह भी सूद है ?

उ०18. मकान और सामान किराए पर लेना–देना जाइज़ है सूद नहीं।

प्र०19. क्या वीडियों फिल्में किराए पर देने वालों का कारोबार जाइज़ हैं अगर नहीं तो इस कारोबार करने वाले की नमाज़ रोज़ा, ज़कात, हज और दूसरे नेक काम कुबूल होंगे ?

उ०19. नाजाइज़ फिल्मों का कारोबार नाजाइज़ है उसकी आमदनी हलाल नहीं। नमाज़, रोज़ा, हज़, ज़कात फर्ज़ है वह अदा करने चाहिए और वह अदा हो जाएंगे।

प्र०20. मकान मालिक का किराएदार से एडवान्स किराया लेना जाइज़ है या नही ?

उ०20. एडवान्स किराया लेना जाइज़ है।

प्र०21. क्या मकान मालिक अपनी मर्ज़ी से इस रक़म को इस्तेमाल कर सकता है ?

उ०21. यह रकम मालिके मकान की मिल्क है जहाँ चाहे ख़र्च कर सकता है।

प्र०22. मकान मालिक अगर इस रक़म को नाजाइज़ चीजों में इस्तेमाल कर ले तो क्या गुनाह किराएदार पर भी होगा।

उ०22. नहीं

प्र०23. मकान मालिक एकतरफ किराया में भारी रक़म लेता है फिर ऐडवान्स की रक़म के नाम से फाइदा उठाता है फिर साल दो साल में किराया बढ़ा देता है तो क्या यह जुल्म नहीं।

उ०23. अगर मुआहिदे के मुताबिक किराया बढ़ाता है और इस भारी रकम को किराये में काटता है तो इसमे कोई जुल्म नहीं है।

प्र०24. ज़मज़म के पानी पीने का अच्छा तरीक़ा क्या है ? और क्या वुज़ू का बचा पानी खड़े होकर पीना चाहिए?

उ०24. ज़मज़म का पानी पीकर दुआ करना चाहिये, ज़मज़म का पानी खड़े होकर पीना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है इसलिये उलमा ने इसे खड़े होकर पीना मुस्तहब बताया है, वुज़ू के बचे हुए पानी को खड़े होकर पीना भी मुस्तहब लिखा है दोनों पानी बैठकर भी पी सकते हैं, ज़मज़म और वुज़ू के बचे हुए के अलावा कोई और पानी उज़्र (कारण) के बिना खड़े होकर पीना मकरूह हैं।

प्र०25. कोई शख़्स ख़त लिखे और उसमें सलाम लिखे साथ ही किसी और को भी सलाम पहुंचाने को लिखे तो इन दोनों सलामों का क्या हुक्म है ?

उ०25. ख़त में लिखे गये सलाम का हुक्म सामने किये गये सलाम से मुख़्तलिफ़ है, सामने किये गए सलाम का जवाब वाजिब है, ख़त में लिखे गए सलाम का जवाब अगर ख़त का जवाब लिखें तो ज़रूरी है, ख़त का जवाब न लिखें तो सलाम का जवाब ज़रूरी नहीं, लेकिन अच्छा होगा कि जवाब में व अलैहिस्सलाम कह लें, ख़त में जो दूसरों को सलाम पहुँचाने को लिखा जाता है अगर मुमकिन हो तो सलाम पहुँचा दें सवाब मिलेगा, सलाम न पहुंचाए तो गुनहगार न होंगे। ☆☆☆

गल्प

बायाँ हाथ

— रहमान अब्बासी

अन्ततः वही हुआ जिसका मुझे भय था, एक दिन प्रातः काल जब मैं सो कर उठा तथा स्वभावतः कल्मा पढ़ने के लिये मुँह खोला तो मेरे मुख से कोई शब्द न निकल सका, मैं बस घिघिया के रह गया, मेरे मुँह में मेरी जीभ ही नहीं थी, मैं चकरा कर रह गया, फिर मुझे कुछ याद आया। अच्छा तो दुष्टों ने मेरी जीभ काट ही ली, मुझे बेज़बान कर ही दिया, मैं कपकपा कर रह गया।

वास्तव में हुआ यह था कि एक समय से मुझे चेतावनी भरे सन्देश मिल रहे थे कि मैं अपनी ज़बान पर नियंत्रण करूँ नहीं तो मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जायेगा कि नगर के लोग उससे शिक्षा प्राप्त करेंगे, और आने वाले वंशज स्मरण रखेंगे। मैं इन सन्देशों को बड़ बोल समझकर यूँही उपेक्षित करता रहा कि कहने और करने में बड़ा अन्तर होता है, मुझे अनुमान नहीं था इन दुष्टों के इन उच्च साहसों का।

शय्या पर पड़े–पड़े मैंने अपने से प्रश्न किया, अब क्या होगा ? परंतु मेरा प्रश्न बन नाद सिद्ध हुआ, फिर अनेक प्रश्न मस्तिष्क के पट पर झिलमिलाने लगे।

अब मैं किसी अत्याचार पर विरोध प्रदर्शन नहीं कर सकता। भ्रष्टाचार पर जबान नहीं खोल सकता। किसी सताए हुए उत्पीड़ित के पक्ष में गवाही नहीं दे सकता। सत्य नहीं कह सकता, और भी बहुत से वह कार्य नहीं कर सकता। जिन के करने में ज़बान के सहयोग की आवश्यकता होती है। सोचते–सोचते मेरा मस्तिष्क थक गया, हाय मेरे स्वामी ! अब मैं क्या करूँ। अपनी दुहाई लेकर किसके पास जाऊँ ? कौन समझेगा मेरी बेज़बानी के दुख को, कौन इस अत्याचार को समझेगा जो मेरे साथ हुआ है। मेरी ज़बान काट ली गई, मुझे बेज़बान कर दिया गया, बोलने का जन्मजात तथा वैधानिक अधिकार मुझ से छीन लिया गया, मेरी उस सम्पत्ति को मुझ से हड़प लिया गया जो ईश्वर (कुदरत) ने मुझे प्रदान की थी।

मैंने खटिया छोड़ दी, कमरे से बाहर आँगन में आ गया, सामने ही मेरा बेटा खड़ा दाँतों में बुरश कर रहा था, मुझे देखते ही उसने कुल्ली करके मुझे सलाम किया, मैंने सिर के हल्के संकेत से उत्तर दिया, उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखा "क्या बात है अब्बाजान! आपने उत्तर नहीं दिया ? उस का प्रश्न मेरे कानों से टकराया और मैं खिसया कर रह गया, अब मैं उसे कैसे बताता कि बेटा मेरी ज़बान ले ली गई है, मैं बे ज़बान हो गया हूँ। घर के दूसरे अन्य लोगों से भी मेरा यही व्यवहार रहा, वह सब चकित थे कि मुझे क्या हो गया है, मैं बोल क्यों नहीं रहा हूँ, बोलने को तो मेरा भी जी चाह रहा है, मगर बोलता कैसे ज़बान जो नहीं थी, आज मुझे ज़बान का महत्व और उस की उपयोगिता का अनुमान हुआ। फिर मैं एक मिनट भी वहाँ ठहर न सका। घर से बाहर जूँही सड़क पर आया कि पीछे से मेरे किसी परिचित की आवाज़ मेरे कानों से टकराई, "अरे भाई सवेरे–सवेरे कहाँ जा रहे हो ?" मुड़कर देखा तो मेरा जिगरी मित्र था, वह मेरे निकट आया और मेरे हाथ को अपने हाथ में लेकर बोला, "अरे तुम्हारा हाथ इतना ठन्डा क्यों है? यह उसका दूसरा प्रश्न था, मैं घिघया कर रह गया, उसने अर्थपूर्ण दृष्टि मुझ पर गाड़ दी, क्या घर में भाभी से झगड़ा कर के निकले हो ? उसके प्रश्न मेरे हृदय पर हथौड़े की चोट जैसे लग रहे थे, मैं चुप था वह थोड़ी देर तक मुझे घूरता रहा, फिर न जाने क्या सोचकर वह मेरे साथ चलने लगा, अब मैं उसे कैसे बताता कि मेरी ज़बान काट ली गई है, मैं अब बोल नहीं सकता हूँ, उसने एक आध बार अपना वही प्रश्न विभिन्न रूप में मेरे सामने रखा, तब मैंने संकेतों द्वारा अपनी दशा के संबंध में समझाया तो वह बड़बड़ाने लगा :–

"मुझे तो इसका भय था ही, अन्ततः वही हुआ ना, मैंने तुम को कितना समझाया था कि अपनी ज़बान पर नियंत्रण रखो परंतु तुमने मेरी एक ना सुनी, अब अपनी करनी का फल भुगतो, मुझे एक आवश्यक कार्य से जाना है मैं चला" यह कह कर वह सामने वाले मोड़ की ओर मुड़ गया। अब वह मेरे साथ चलने से घबराने लगा था। सम्भवतः वह अपने विषय में चिन्तित हो चला था।

नगर में इस बात की चरचा हर ओर थी कि मेरी ज़बान काट ली गई है। हर व्यक्ति अपने दृष्टिकोण से इस घटना पर टिप्पणी कर रहा था, यद्यपि आलोचकों के मत नाना प्रकार के थे और अधिकांश मेरे विरोध में थे फिर भी कुछ यथार्थवादी मेरे पक्ष में नम्र दृष्टिकोण अवश्य रखते थे, परंतु वह अल्प संख्यक थे अतः दबी ज़बान से खेद प्रकट कर रहे थे, "यह अच्छा नहीं हुआ" किसी ने कहा, "एक ही तो नगर में सत्यभाषी था" दूसरा बोला,

"बड़े दुख की बात है, एक बार फिर ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ा दिया गया," तीसरा बुद्धिमानी प्रकट करते हुए बोला, "यह केवल जीभ बधता ही नहीं वंश बधता भी है" चौथे की शैली विचारात्मक थी, "हर काल में सुक़रात के कर्म में विष कटोरा ही रहा है" पाँचवा क़लन्दराना बोला, एक सप्ताह इसी परिस्थिति में बीत गया।

एक प्रातः काल जब मैं सोकर उठा तो मुझे अपने शरीर में किसी भाग की कमी का आभास हुआ, मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा, मुझे चक्कर की अनुभूति हुई, मैं चारपाई से नीचे गिरने लगा। गिरने से बचने के लिये हाथ टेकने चाहे तो और हड़बड़ा गया, धम से नीचे गिर पड़ा, "यह क्या हुआ" मैं सोचने लगा, अब ध्यान दिया तो मेरा दायाँ हाथ न था।

"उफ़्फ़ोह ! दुष्टों ने जो कहा कर दिखाया"

हुआ यह था कि ज़बान कट जाने के पश्चात अत्याचारियों के विरुद्ध मैंने ज़बान के स्थान पर दाहने हाथ को प्रयोग कर के उनके विरुद्ध लिखना आरंभ कर दिया था, मेरे लेखों से रुष्ट होकर उन्हों ने चेतावनी के सन्देश भेज कर धमकी दी कि नहीं मानोगे तो हाथ भी गंवाओ गे, मेरे नकार देने पर उन्होंने मेरा हाथ काट दिया।

एक सप्ताह तक मेरी जो दशा रही उसे मैं ही जानता हूँ। ज़बान और हाथ काट लेने के पश्चात दुष्टों के साहस और ऊँचे हो गये थे, अब उन लोगों ने मुझे मृतक जान लिया था, ज़बान और हाथ कट जाने का शोक मुझे भीतर भीतर खाये जा रहा था मगर मैं विवश था, असमर्थ था, अपनी चिन्ता कम परन्तु दूसरों की चिन्ता से मैं अत्यंत दुखी था, अब मेरे अपने भी पराये हो गये थे, जिन लोगों ने मेरी ज़बान काटी थी उन को मैं जान चुका था, हाथ काटने वाले भी मेरे ज्ञान में आ चुके थे, मैंने न्यायालय का द्वार खटखटाया, उनके विरुद्ध मुकदमा चलाया, धूम धाम से पेशियां हुईं, खूब विवाद हुआ, जजमेन्ट का दिन आया, न्याय का भी खून हुआ, जजमेन्ट मेरे विरुद्ध हुआ, अत्याचारियों के साथ एक भीड़ थी ठट्ठे लगते न्यायालय से बाहर आई मैं चुप था, अचानक मेरे मस्तिष्क में एक बिजली कून्दी : दुष्टो ! तुमने मेरी ज़बान ली तो क्या हुआ ? दाहना हाथ काट लिया तो क्या हुआ ? मुझे न्याय नहीं मिला तो क्या हुआ ? दुष्टो ! तुम को पता नहीं, कुछ लोग बाएं हाथ से भी लिखते हैं और मेरा बायाँ हाथ अभी सुरक्षित है, युद्ध अभी समाप्त नहीं है, युद्ध अभी चालित है। ❒❒❒

मदरसे ! शान्ति का संदेश

मुहम्मद अली जौहर

हमारे देश भारतवर्ष में अनेक जातियों के लोग निवास करते है, हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई। मुस्लिम जाति अपनी पवित्र शिक्षा का प्रचार व प्रसार मदरसे (पाठशाला) द्वारा करते है यह मदरसे मनुष्यों को अशिक्षा व अज्ञान के अन्धकार से निकाल कर शिक्षा व ज्ञान के प्रकाश की तरफ लाते है लेकिन अत्यन्त दुख की बात यह है कि कुछ लोग इन मदरसों को बदनाम करने की भरपूर चेष्टाए कर रहे है और जिस प्रकार से वह मदरसों को बदनाम कर रहे हैं वह बहुत शर्मनाक भी है और सन्तोष जनक भी।

मदरसे पवित्र स्थान हैं जिन पर संदेह की दृष्टि ड़ालना भी पाप है इनकी व्यवस्था बहुत सादे तौर पर और शान्तिपूर्ण होती है यहाँ पर विद्यार्थियों को सद्भावना का पाठ पढ़ाया जाता है मदरसों का किसी राजनीति पार्टी या संगठन से कोई संबंध नहीं होता।

देश की स्वतंत्रा प्राप्त करने में इन मदरसे वालों का बड़ा हाथ रहा है। इतिहास साक्षी है कि 1864 ईसवी से लेकर 1857 ई० तक चौदह हज़ार मुस्लिम विद्वानों ने अपने वतन पर अपने प्राण निछावर कर दिये मदरसों के संचालकों व कार्यकर्ताओं ने भारतवर्ष की स्वतंत्रा के लिए अपने प्राणों को दांव पर लगा दिया, देश स्वतंत्र हुआ उसके पश्चात् भी अब्दुल हमीद की तरह बलिदान तो दिया है मगर सुखराम की तरह अंतरात्मा का सौदा नहीं किया। इतिहास मदरसों से पले बढ़ें इन वीर मुस्लिम विद्वानों के बलिदानों को कभी नहीं भूल पायेगा। स्वतंत्रा संग्राम के अतिरिक्त अनेक उदाहरण है जिन से मदरसों व मदरसों के संचालकों के देश प्रेम की भावना का पता चलता है।

वास्तव में जो लोग मदरसों पर अशान्ति व आतंकवाद का इल्ज़ाम लगाते है उनका भूत ऐसे अपराधों से भरा पड़ा है जिनको वह छुपाना चाहते है और मदरसों पर कीचड़ उछालते हैं मदरसे कभी भी अन्याय व अत्याचर का साथ नहीं देते।

मदरसे पवित्र स्थान हैं जहां पर अज्ञानी मनुष्य ज्ञान प्राप्त करते है और उस ज्ञान से वह समाज सेवा करते हैं मदरसों का अत्याचार जैसे घिनौने कार्य से कोई संबंध नहीं है मदरसे अमन व शान्ति का एक संदेश हैं।

❒❒❒

बच्चों का पृष्ठ

हज़रत नूह़ अ़लैहिस्सलाम

अरबी से अनुवाद

— सय्यद अहमद अ़ली नदवी

अल्लाह ने नूह़ अ़लैहिस्सलाम को उनकी क़ौम में रसूल बनाकर भेजा, उन की क़ौम में बहुत से मालदार और सरदार थे। लेकिन अल्लाह ने अपने काम के लिये नूह़ अ़लैहिस्सलाम को चुना, अल्लाह ने किसी अन्य का चयन नहीं किया क्योंकि वह जानता था कि उस का कार्य कौन ठीक ढंग से कर सकता है। नूह़ अ़लैहिस्सलाम बड़े भले और साधारण इन्सान थे, नूह़ अ़लैहिस्सलाम बड़े इज़्ज़तदार और बुद्धिमान थे। नूह़ अ़लैहिस्सलाम बड़े दयालु नसीहत करने वाले, सत्यवादी और अमानतदार, दूसरों को समझाने वाले थे, अल्लाह ने नूह़ अ़लैहिस्सलाम को चुना और उनको वह्य (इशवाणी) से अपने पास से विशेष प्रकार से संदेश भेजा कि तुम्हारी क़ौम पर अज़ाब आने से पूर्व आप उन को डराइये और बताइये। नूह़ अ़लैहिस्सलाम क़ौम के सामने खड़े हुए और अपनी क़ौम से कहा कि मैं तुम्हारे पास रसूल बनाकर भेजा गया हूँ मेरी बात मानो कामयाब होगे।

क़ौम ने क्या जवाब दिया

नूह़ ने जब बस्ती वालों से कहा कि मैं तुम में रसूल बनाकर भेजा गया हूँ तो बस्ती वालों में से कुछ खड़े हुए और बोले कि तुम नबी कब हो गये ? कल तक तो तुम हमारे साथ थे और आज रसूल होने का दावा कर रहे हो! नूह़ के कुछ मित्रों ने कहा कि यह तो हमारे साथ बचपन में खेलता था, हर दिन हम में बैठता–उठता था, इस को नुबूव्वत कब मिल गई दिन में या रात में ? पूंजीपतियों और धमंडियों ने कहा कि क्या अल्लाह को और कोई दूसरा नहीं मिला ? क्या सब लोग मर गये हैं क्या पूरी क़ौम में एक ग़रीब ही मिला इस कार्य के लिये है?

जाहिलों (मूर्खों) ने कहा कि यह तो तुम जैसा आदमी है यदि अल्लाह चाहता तो फ़िरिश्ता उतार सकता था। हमने तो अपने बाप–दादा से ऐसा कुछ नहीं सुना। कुछ लोग यह भी कहने लगे कि इज़्ज़त शोहरत और सरदारी हासिल करने के लिये नूह़ ने यह तरीक़ा अपनाया और यह 'नाटक' रचा है।

नूह़ और उनकी बस्ती वाले

नूह़ की क़ौम जानती थी कि बुतों की पूजा सही है और बुतो की पूजा करना समझदारी है उनकी राय थी कि जो बुतों की पूजा नहीं करते वह मूर्ख और गुमराह हैं। रास्ता भटके हुए हैं वह कहते थे कि जब हमारे बाप–दादा बुतों की पूजा करते थे तो हम क्यों न करें।

नूह़ अ़लैहिस्सलाम जानते थे कि बुतों की पूजा गुमराही और सरासर बेवकूफ़ी है। वह जानते थे कि पितामह हज़रत आदम बुतों की पूजा नहीं करते थे वह केवल एक अल्लाह की इबादत करते थे। यह क़ौम गुमराही और बेवकूफ़ी में पड़ी हुई है। यह पत्थर की पूजा करते हैं और उस अल्लाह की इबादत नहीं करते जिसने उन्हें पैदा किया है। "नूह़" अ़लैहिस्सलाम खड़े हुए और बुलंद आवाज़ में कहा कि 'ऐ लोगो! अल्लाह की इबादत करो। उसके अलावा कोई दूसरा रब नहीं है। यदि तुम अपनी हठधर्मी पर क़ायम रहे तो मुझे डर है कि कहीं अल्लाह की मुसीबतें तुम पर न आ जायें।'

बस्ती के सरदार कहते कि हम तुम्हें खुली गुमराही में देख रहे हैं और भटका हुआ देखते हैं। हज़रत 'नूह़' कहते हैं कि मैं गुमराह नहीं हूँ। मैं तो अल्लाह की तरफ़ से रसूल बनाकर भेजा गया हूँ मैं तुमको अपने रब का पैग़ाम पहुँचाने आया हूँ मैं तुम को नसीहत करता हूँ और मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते हो।

कमीनों (बुरे लोगों) की पैरवी

हज़रत नूह़ ने बड़ी कोशिश की कि उन की बस्ती वाले ईमान ले आयें, अल्लाह की इबादत करने लगें और बुतों की पूजा करना छोड़ दें, लेकिन थोड़े लोगों को छोड़कर कोई ईमान नहीं लाया। जो अपने हाथें से काम करते और जो ग़रीब थे हलाल की रोज़ी खाते थे। पूंजीपतियों ने अपने धन और घमण्ड के कारण नूह़ की बात मानने से इन्कार किया और ईमान नहीं लाये। अपने बच्चों और अपनी दौलत में ऐसे फँसे कि आख़िरत की सोच दिल से निकल गई और फिर यह कहने लगे कि हम शरीफ़ हैं और यह लोग कमीने हैं, ज़लील हैं। जब "नूह़" अ़लैहिस्सलाम दावत देते तो वह कहते कि क्या हम तुम पर ईमान लायें ? जब कि तुम्हारी पैरवी ग़रीब कर रहे हैं। तुम्हारे साथ ग़रीब हैं। और यह भी कहते कि इन ग़रीबों, मिसकीनों को निकाल दो। हज़रत नूह़ ने उनकी यह बात मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि इन मोमिनों को मैं निकालने वाला नहीं हूँ मेरा

दरवाज़ा कोई बादशाह का दरवाज़ा नहीं है। मैं तो तुमको होशियार करने आया हूँ।

नूह अलैहिस्सलाम जानते थे कि यह ग़रीब मिस्कीन सही तौर पर ईमान लाये हैं और यह इसमें मुख़लिस हैं। अल्लाह नाराज़ होगा यदि मैंने इनको निकाला तो फिर अल्लाह किसी की भी सहायता नहीं करेगा। यही बात हज़रत नूह ने क़ौम से कही कि "ऐ बस्ती वालो! यदि मैंने इनको निकाला तो फिर हमरी मदद कौन करेगा?

दौलत वालों की दलील "तर्क"

पूंजीपति कहते कि नूह जिस बात की दावत तुम हमें देते हो उसमें न तो कोई भलाई है और न वह सच है। इसलिये कि हमारा तजरिबा (अनुभव) कहता है कि हम में हर अच्छाई है। खाने की अच्छी क़िस्में हमारे लिये हैं। अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनना हमारे भाग्य में हैं हर चीज़ हमारी सेवा के लिये हैं हमारी राये में वज़्न है हम देखते हैं कि कोई भलाई हम तक पहुँचने में चूकती नहीं और नगर में हम को छोड़ कर आगे नहीं बढ़ जाती। यदि यह दीन–धर्म अच्छा होता तो मिसकीनों और ग़रीबों से पहले हमारे पास आ जाता।

नूह अलैहिस्सलाम की दावत

नूह अलैहिस्सलाम ने लोगों को समझाने की बड़ी कोशिश की और उनसे कहा कि लोगो ! मैं तुमको डराने आया हूँ अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और उसकी मानो अल्लाह तुम्हारे पापों को माफ़ कर देगा और एक समय तक तुमको ज़िन्दा रखेगा और जब समय आ जायेगा तो एक पल न पहले होगा और न बाद होगा यदि तुम इस सच्चाई को मान लो तो तुम सफल हो जाओगे। अल्लाह ने बारिश रोक दी उसकी नाराज़गी बढ़ गयी उसने इनकी खेती की पैदावार कम कर दी और उनकी सन्तानों में भी कमी कर दी। नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों से कहा कि लोगो ! यदि तुम अल्लाह पर ईमान ले आओं तो अल्लाह तुम से ख़ुश हो जायेगा और तुम्हारे यह सारे दुख–दर्द दूर कर देगा। अल्लाह वर्षा करेगा तुम्हारे रोज़गार और तुम्हारी सन्तान में बरकत देगा। नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और उनसे कहा कि क्या अल्लाह को नहीं पहचानते तुम्हारे चारो तरफ़ उसकी निशानियाँ ही तो हैं तुम इस पर विचार क्यों नहीं करते। कब तुम्हें समझ आयेगी। तुम्हीं बताओं आसमान किसने बनाया ? चाँद में रोशनी किसने पैदा की? और सूरज को रौशन किसने किया ? और ज़मीन को फ़र्श किसने बनाया ? सोचो ! और विचार करो। लेकिन वह लोग मूर्ख थे वह ईमान नहीं लाये उलटा उनपर यह असर हुआ कि जब नूह अलैहिस्सलाम अल्लाह की दावत देते वह अपने कानों में अंगूलियाँ डाल लेते। बताओ वह आदमी कैसे बात समझेगा जो सुनेगा नहीं और वह कैसे सुनेगा जो सुनना नहीं चाहे।

नूह अलैहिस्सलाम की दुआ

एक समय तक नूह अलैहिस्सलाम ने अपने लोगों को दावत दी और 950 वर्ष तक क़ौम को नसीहत करते रहे लेकिन नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ईमान नहीं लाई और मूर्ति पूजा नहीं छोड़ी। कब तक नूह अलैहिस्सलाम उनके ईमान लाने का इन्तिज़ार करते, कब तक ज़मीन पर हो रहे बिगाड़ को देखते और कब तक मूर्ति पूजा बरदाश्त करते। कब तक यह देखते रहते कि खायें तो अल्लाह का और पूजा दूसरों की करें। नूह को गुस्सा क्यों न आता इन बातों पर। जितना सब्र किया कोई कर नहीं सकता। 950 वर्ष उन्होंने सब कुछ सहन किया।

आख़िर अल्लाह की वही नूह अलैहिस्सलाम पर आई कि जिन को ईमान लाना था ला चुके अब यह लोग और इनमें से कोई ईमान नहीं, लायेगा। "वही" (ईशवाणी) के बाद हज़रत नूह ने एक बार फिर कोशिश की और उनको ईमान लाने को कहा उनकी क़ौम ने उनको जवाब दिया कि ऐ नूह तुम अब तक हम से लड़ते रहे और इस लड़ाई झगड़े में दिन प्रतिदिन बढ़ोत्री हो रही है। रोज़ की चिक–चिक से अच्छा है कि तुम वह ले आओ जिससे तुम हमकों डराया करते हो यदि तुम सच्चे हो।

नूह अलैहिस्सलाम उन लोगों से बिल्कुल नाउम्मीद हो गये और उनको अल्लाह के लिये गुस्सा आया और उन्होंने बद–दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस धरती पर काफ़िरों में से किसी को न छोड़ना और न बचाना।

सफ़ीना 'बड़ी कश्ती'

अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल की और उनकी क़ौम को डूबाने का फैसला किया लेकिन नूह अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम के मोमिनीन को बचाने का भी फैसला किया। नूह को अल्लाह ने एक बड़ी कश्ती बनाने का आदेश दिया। नूह अलैहिस्सलाम ने कश्ती बनाना आरम्भ किया। क़ौम ने उनको यह काम करते देखा तो उनको एक मशग़ला हाथ लग गया और उन का मज़ाक "खिल्ली" उड़ाने लगे और यह कहते "अरे यह क्या नूह? तुम कब से बढ़ई हो गये? तुमसे हम पहले ही कहा करते थे कि देखों इन नीचे लोगों में मत उठो–बैठो। लेकिन तुमने हमारी बात नहीं मानी। तुम बढ़ई और लोहारों में बैठने लगे बढ़ई हो गये यह जो कश्ती तुम बना रहे हो इस को कहाँ चलाओगे। ऐ नूह तुम्हारी बातें और तुम्हारा हुक्म सब अजीब से लगते हैं। अब बताओ यह

कश्ती रेत में चलेगी या पहाड़ पर चढ़ेगी।" नूह अ़लैहिस्सलाम यह सब बातें सुनते और सब्र करते रहे। इससे भी अधिक सख़्त बातें उन्होंने सुनीं और सब्र किया लेकिन नूह अ़लैहिस्सलाम उनको शर्मो–हया (लज्जा) दिलाते हुए यह कहते कि जैसे तुम आज हमारा मज़ाक उड़ा रहे हो ऐसे ही कल हम तुम्हारा मज़ाक उड़ायेंगे।

तूफ़ान

अल्लाह की पनाह–अल्लाह का वादा आ पहुँचा तूफ़ानी और मूसलाधार बारिश हुई। ऐसा लगता था कि जैसे आसमान में छेद हो गये और ज़मीन में खुश्क करने की ताक़त ख़त्म हो गयी है। हर तरफ़ पानी फूट रहा था और बह रहा था यहाँ तक कि पानी ने सब को हर तरफ़ से जकड़ लिया।

अल्लाह ने नूह अ़लैहिस्सलाम को वह्य की "हुक्म दिया" अपनी क़ौम तथा परिवार के उन आदमियों को साथ लो जो ईमान लाये हैं। अपने साथ चरिन्द और परिन्द का एक–एक जोड़ा (नर–मादा) साथ ले लें। इस लिये कि तूफ़ान ऐसा होगा जिससे इन्सान और हैवान का बचना मुमकिन नहीं होगा। नूह ने वही किया जिसका उन्हें हुक्म मिला था। उनकी कश्ती में वह लोग रहे जो उनकी क़ौम में ईमान लाये थे। उसके साथ चरिन्द व परिन्द का एक–एक जोड़ा था। पहाड़ों के बराबर मौजें मारती पानी की लहरों में कश्ती चलने लगीं। क़ौम अपने को बचाने के लिये ऊँची–ऊँची जगहों और टीलों पर चढ़ने लगी इस अज़ाब से बचने के लिये कहीं स्थान नहीं मिला। लेकिन आज कहीं पनाह नहीं सिवाय अल्लाह के।

नूह अ़लैहिस्सलाम का बेटा

नूह अ़लैहिस्सलाम का बेटा काफ़िरों के साथ था। जब नूह अ़लैहिस्सलाम ने उसकों तूफ़ान में घिरा पाया तो बेटे से कहने लगे आओ हमारे साथ कश्ती में सवार हो जाओ और काफ़िरों के साथ मत रहो। उसने जवाब दिया कि मैं तो पहाड़ पर चढ़ जाऊँआ वहाँ मुझे पानी से नजात मिल जायेगी। हज़रत नूह ने उससे कहा कि आज केवल वह बच सकता है जिसको अल्लाह बचाना चाहे। इन दोनों के बीच मौज आई और उनके बेटे को डुबो दिया।

हज़रत नूह को अपने बेटे के डूबने का बड़ा दुख था और क्यों न होता आख़िर उनका बेटा था। हज़रत नूह ने सोचा कि वह डूबने से तो न बच सका क़ियामत में वह जहन्नम की आग से तो बच जाये। वह जानते थे कि जहन्नम की आग पानी से कही अधिक सख़्त होगी और आख़िरत का अ़ज़ाब ज़ियादा तकलीफ़ देने वाला होगा।

अल्लाह ने वादा किया है उनके परिवार के बचाने का और अल्लाह का वादा सच्चा है। उन्होंने अपने बेटे के लिये अल्लाह से दुआ की।

वह तुम्हारे परिवार का नहीं था

नूह अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह को पुकारा और कहा कि ऐ अल्लाह मेरा बेटा मेरे परिवार में से है और तेरा वादा सच्चा है और आप बहुत अच्छे हाकिम हैं लेकिन अल्लाह इन्सान के ख़ान्दान को नहीं देखता वह तो कर्मों को देखता है। अल्लाह मुशरिक के हक़ में किसी की शफ़ाअत (शिफ़ारिश) स्वीकार नहीं करता चाहे वह नबी के परिवार का हो और चाहे वह नबी का बेटा ही क्यों न हो।

अल्लाह ने हज़रत नूह से कहा कि तुम्हारा बेटा तुम्हारे परिवार का नहीं था। उसके कर्म अच्छे नहीं थे। तुम ऐसी बातों के बारे में क्यों पूछते हो जिसकी तुम्हें जानकारी नहीं होती। ऐसी जाहिलाना बातों से बचो। नूह अ़लैहिस्सलाम को इसका एहसास हुआ और तौबा की और कहने लगे ऐ अल्लाह मैं तुझसे ऐसी बातों के पूछने पर पनाह मांगता हूँ। जिसकी मुझे जानकारी नहीं थी। यदि तूने मुझे क्षमा नहीं किया मुझ पर कृपा नहीं की तो मैं बड़े नुक़सान में रहूँगा।

तूफ़ान के बाद

अल्लाह ने मुशरिकीन को डुबाने को निश्चय किया था और यह कार्य पूरा हो गया। वर्षा रुक गयी पानी घट गया और कश्ती पहाड़ी पर सही सालिम आ लगी तो कहा गया अब उन ज़ालिमों से बहुत दूरी हो गयी। अब नूह तुम भी सलामती से उतरो और अपने साथियों को भी कश्ती से उतार लो। अब वह सलामती के साथ धरती पर चलें–फिरें।

नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम "काफ़िर" तबाह व बरबाद हो गई उनकी तबाही पर न तो आसमान रोया और न ज़मीन ने आँसू बहाया।

अल्लाह ने हज़रत नूह की औलाद को बड़ी बरकत दी और लाखों करोड़ों की संख्या में ज़मीन पर फैल गयी। उनमें बादशाह हुए, सम्राट हुए, ऋषीमुनी, नबी और पैग़म्बर हुए।

नूह अ़लैहिस्सलाम पर सलामती हो।
नूह अ़लैहिस्सलाम पर सलामती हो।

❑❑❑

एअ़लान

इस पत्रिका में जहाँ भी अल्लाह के रसूल के नाम के पश्चात (स०) या (सल्ल०) लिखा मिले, वहाँ सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अवश्य पढ़ें।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– मुईद अशरफ़ नदवी

- अमरीकी पार्लियामेंट के एक सक्रिय सदस्य श्री जान डंगील ने अमरीकी पार्लियामेंट को संबोंधित करते हुए कहा कि इस्लाम न केवल संसार के महान धर्मों में से एक है बल्कि यह अमरीका का भी एक महान धर्म है। उन्होंने कहा कि पूरे संसार में डेढ़ अरब मुसलमान हैं जिनमें सत्तर लाख अमरीका में आबाद हैं। हम इस्लामी बिरादरी और इस्लामी विश्वास के लिए सम्मान का प्रदर्शन करते हैं।
- 11 सितम्बर की घटना के बाद जहां संसार के मुसलमान मुख्यतः अमरीकी मुसलमानों के लिए परीक्षा की घड़ी पैदा हुई है, वहीं पश्चिमी संसार में खास कर अमरीका में इस्लाम और मुसलमानों को सही दृष्टिकोण से समझने का जज़्बा पैदा हुआ है और सरकारी स्तर पर इस्लाम और मुसलमानों को महत्व दिया जाने लगा है। ईदुलफ़ित्र के अवसर पर एक डाक टिकट भी जारी हुआ जो अमरीका में इस्लाम से संबंधित पहला डाक टिकट था। इन तमाम सरगर्मियों के बावजूद अमरीका के किसी वर्ग से विरोध की प्रतिक्रिया नहीं दिखाई दी। निःसंदेह प्रारम्भ में अप्रिय घटनाएं ज़रूर हुईं लेकिन अब अमरीकी मुसलमानों के लिए अपने कथन और कर्म से इस्लाम की सत्यता सिद्ध करने का एक बेहतरीन अवसर है।
- ब्रिटिश समाचार पत्र इकनामिस्ट के अनुसार अमरीका ने मध्य एशिया के प्राकृतिक साधनों से माला माल राज्य तुर्कमानिस्तान, क़ारिख़स्तान और उज़बिख़स्तान में अपने क़याम (संस्थापना) के लिए राजनीतिक दबाव बढ़ाना शुरू कर दिया है। हाल ही में रूसी राष्ट्रपति ने उपरोक्त राज्यों का दौरा करके इन देशों को सचेत कर दिया है कि अमरीका के स्थापना का उद्देश्य इन प्राकृतिक साधनों के भंडारों पर कब्ज़ा करना है। अब रूस के साथ इन देशों का संबंध सीधा हो गया है ताकि अमरीका के प्रभाव को समाप्त किया जाये। अब यह देश रूस के मार्ग से तेल और गैस यूरोप की मंडियों तक पहुंचाने में सहयोग करेंगे। मुख्य बात यह है कि तुर्कमानिस्तान मध्य एशिया का वह अकेला देश है जिसने अमरीका को अफ़गान युद्ध के लिए अपना हवाई अड्डा देने से इन्कार कर दिया था। रूस की तरह चीन भी उन देशों में अमरीका की स्थापना को शांति के लिए ख़तरा समझता है।
- जर्मनी की राजधानी बर्लिन की फेडॅरल कोर्ट ने अपने एक वर्तमान फ़ैसले में यह कहा है कि प्राईमरी स्कूलों में दीनी तर्बियत (प्रशिक्षण) की तालीम में कुर्आन मजीद की तालीम स्थानीय संविधान के विरुद्ध नहीं है। अब इस फ़ैसले के अन्तर्गत जर्मनी के प्राईमरी स्कूलों में जहां विद्यार्थियों की अधिक संख्या मुसलमान है कुर्आन मजीद की तालीम और तफ़सीर (शिक्षा और व्याख्या) के पढ़ाने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है जबकि इससे पहले जर्मनी के सांस्कृतिक मंत्री ने स्कूलों में कुर्आन की तालीम संविधान के विरुद्ध कह कर वर्जित क़रार दे दिया था। अब फ़ेडॅरल कोर्ट के फ़ैसले से मुसलमानों को काफ़ी राहत मिली है।
- मिश्र के अवकाफ़ मंत्री ने अपने एक बयान में इस बात का एलान किया है कि हुकूमत मिश्र के सहयोग से जल्द ही तुर्कमानिस्तान में एक इस्लामी यूनिवर्सिटी की स्थापना पर मिश्र की हुकूमत 20 मिलयन मिश्री पाउण्ड का ख़र्च बर्दाश्त करेगी। तुर्कमान की इस इस्लामी यूनिवर्सिटी में दो फ़ेकल्टी का प्रबन्ध किया जा रहा है। एक इस्लामिक स्टडीज़ और दूसरा अरबी भाषा की शिक्षा के लिए होगी। इस के अतिरिक्त इस यूनिवर्सिटी के अधीन विभिन्न इस्लामी विषयों पर रिसर्च करने के लिए विभिन्न फ़ेकल्टी और कालेजों की स्थापना भी की जायेगी यूनिवर्सिटी में शिक्षा देने के लिए शिक्षक और पुस्तकों और पाठ्यक्रम का भी प्रबन्ध किया जाएगा।

□□□

शुभ क्रान्ति

'कमर' रामनगरी

1

ारों ओर था घोर अंधियारा, बन्द थे ज्योति द्वार
त्याचारी करते फिरते थे निर्भय प्रहार
बेलक रही थी मानवता, घायल हो अंसुवन धार
रते थे पाषाण की पूजा, पथ भ्रष्ट नर नार
र–घर में था पाप को डेरा, पाप था सब पे सवार
तब आए नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार।

2

ुराचार से भरा हुआ था, सारा अरब समाज
कैसी नियम का नाम न था, बस जंगल का था राज
ने हुए थे शक्तिशाली हर निर्बल के महाराज
ठिन थी बचनी स्त्रियों की अबलाओं की लाज
ँच नीच का छुवाछूत का होता था व्यवहार
तब आए नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार।

3

त्ताधारी, धनी थे जो वह माना थे भगवान
ो निर्धन थे बिक जाते थे बकरी भेड़ समान
ानवता थी शक्तिहीन और दानवता बलवान
ूल चुकी थी सत्य न्याय को आदम की सन्तान
ूजीपतियों को कहते थे गणपति, पालनहार
तब आए नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उन का सृजनहार।

4

जीवित गाड़ दिया करते थे पुत्री को हत्यारे
मार दिए जाते थे बालक निर्धनता के मारे
बना लिए जाते थे दास, निर्धन गरीब बेचारे
भोग आनन्द के रसिया थे जो उनके थे पौबारे
उत्तर–दक्षिण, पूरब–पश्चिम फैला था व्यभिचार
तब आए नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उन का सृजनहार।

5

बस्ती बस्ती नगरी नगरी मची थी हाहाकार
जुल्म से थी बेचैन ये धरती, पीड़ित था संसार
द्वेष, कलह, अन्याय, लड़ाई, झगड़ा, अत्याचार
जुआ, सूद, मदिरा, कुकर्म का था व्यापक प्रसार
सच्चाई थी लुप्त जगत से, झूठ का था प्रचार
तब आए नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार,
प्रेषक उन का सृजनहार।

6

दशा देख संसार की यह ईश्वर को रहम जो आया
नई ज्योति से धरती और आकाश को फिर चमकाया
ईसा द्वारा अहमद नाम से था, जिसको दर्शाया
अपने अंतिम दूत 'मुहम्मद' को पैदा फ़रमाया
सर्व विश्व कल्याण हेतु वह आया बनकर प्यारा
वह हैं नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार,
प्रेषक उन का सृजनहार।

7

नवीं* रबीउल अव्वल को मक्का नगरी में पधारे
आमिना बी की आंख के तारे, अब्दुल्लाह के दुलारे
जैसा प्यारा नाम था उनका वैसे ही थे प्यारे
ज्योति से उन की मद्धिम पड़ गए नभ के चांद सितारे
प्रकट हुए जब प्यारे नबी तो जगत हुआ उद्धार
वह हैं नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार,
प्रेषक उन का सृजनहार।

ापकी जन्मतिथि नवीं रबीउल उव्वल भी लिखी है और बारहवीं भी।